CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६३५

लावनी संग्रह

16·3

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

) संस्थान

....

....

ा	लौटानेकी

२

१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०६५

लावनी	पृष्ठ
चेत अचेत समझ	५४
रिषभ जिन आवता	५४
तन नहीं छूता कोई	५५
करोरे मन सज्जन जन को	५६
तूतो करले श्री जी का	५६
हम देखे जगत के साधु	५८
जब अशुभ कर्म के	५९
बंधे हैं अपनी भूल से	६०
श्री आदिनाथ कर हैं सनाथ	६१
जैन कौम की	६३
मुश्किल है जैन फकीरी	६४
नहीं होवे राज तिलक	६४
जड़ता जिन राज	६५
ऐसे कर्म बडेरी बलवान	६६
जैन धर्म के टुकड़े	६६
समझ मन	६७
छाड़ मन तू मेरा मेरा	६८
सुख दुख दाता	६९
जल से गले रवि से जलता	७०
महानिंद पर्याय त्रिया की	७१
अब तुम सांचा ही	७३
सप्त व्यसनों की लावनी	७३
परनारी से दूर रहो।	७४
जगत स्वप्ने की माया	८२
कर्म महाबलवान	८३
बानर मत भूल	८७
माता सरस्व.	

नरिया. (का. हि. वि. वि.) वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लावनी	पृष्ठ
मानुष पर्याय गमाई	८८
देखो काल प्रभाव	९०
उत्तम नर जिनमत	९१
कर्म उदय अनिवार	९२
कर्मवशि चारों गति	९४
कोई नहीं शरण सहाय	९५
कर्म गति टारी नाहि टरे	९६
जब से जिन मत को तजा	९६
हुक्म हमको पिता जी	९७
रावण तू धमकी	९८
त्रिया जनम मत दियो	९९
सुनसप्त व्यसन का	९९
वादिन का कर सोच	१०२
अजहु न चेतो सुगर नर	१०२
सार वस्तु जिन धर्म	१०३
इतना तो करना स्वामी	१०४
योगी योग जुगत	१०५
धन्य दिवश धन घड़ी	१०५
शरण अपनी में रख लीजे	१०६
मौत अब सिर तेरे आ जायगी	१०६
परम निर्ग्रन्थ साधु	१०७
सारी दुनियाँ तो	१०८
क्या रामचन्द्र से	१०९
दोई बात हैं जग में साँची	१०९
ऐसा दिन कब पाऊं	११
गाफिल तू सोच जरा मन में	१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लावनी	पृष्ठ
शील विरत परभाव भविक जन	११२
भगवन मुझे शरण दो	११३
कुमति प्रीति के हम	११४
सब धरमन में सार	११५
तुम तारण तरण जिनेश	११७
कर पार नैया मेरी	११८
आशक हैं हम गुल के	११६
जाना है जानों के पास	१२०
हमें है जाना वहां तलक	१२१
कुमति चेतन का झगड़ा	१२२
णमोकार के पांचों पद	१२४
परम ब्रह्म स्वरूप	१२६
छयालिस गुणयुत	१२७
जगमणि नरभव	१२८
प्रभु गुणगान करो	१२६
सिद्धों की लावनी (अलख अगोचर)	१३०
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	१३१
पतिव्रता सती की लावनी (मन वच काय)	१३२
निज हित का नहिं	१३३
बूढ़े बूढ़े भव सागर में	१३७
अरे मूढ़ पुरुषारथ	१३८
सीता हरण की लावनी	१४०
राक्षस वंशीन की उत्पत्ति (अजितनाथ के)	१४३
बानर वंशीन की उत्पत्ति	१४६
माता सरस्वती दीजिये	१४६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री मरुदेवी के लाल	१५०
जिनमत पाय विपर्यय वर्ते	१५१
युगल कर जोड़े	१५५
कर प्रभू का भजन तू तोता	१५५
गणेश जी की लावनी (गणधर गणेश)	१५७
मन वचन काय नित	१५६
आदिनाथ के पंच कल्याणक	१६०
उतम कुल के पाय	१६२
मक्सी के पारसनाथ	१६४
श्री मक्सी पारसनाथ	१६४
सदाचार के सत्य के	१६६
नामी वीर कुंति सुत	१६८
केश धवल इक	१७०
अकलंक निकलंक की लावनी	१७१
कहां अकलंक और निकलंक	१७२
रावण को समझावे मंदोदरि	१७३
चरण कमल नव कहें मंदोदरि	१७४
चार जात के जैनी जग में	१७५
आतम कृष्ण सुमत राधा	१७६
नर होनहार होतव्य	१७७
स्वामी सुकौशल	१७८
प्रभु इक अर्जी	१८०
महावीर स्वामी की स्तुति	१८१
प्रथम नमूं	१८३
ज्ञान चक्षु अवलोक	१८४
कब मिलि हैं साधु	१८५
जंबू कुमार वैराग्य लावनी	१८६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❋ ॐ ❋

परमपूज्य प्रातः स्मरणीय निर्ग्रन्थ दि० जैनाचार्य पूज्यपाद १०८ श्री सूर्यसागरजी महाराज

चतुर्मास पहाड़ी धीरज देहली सं० २००८

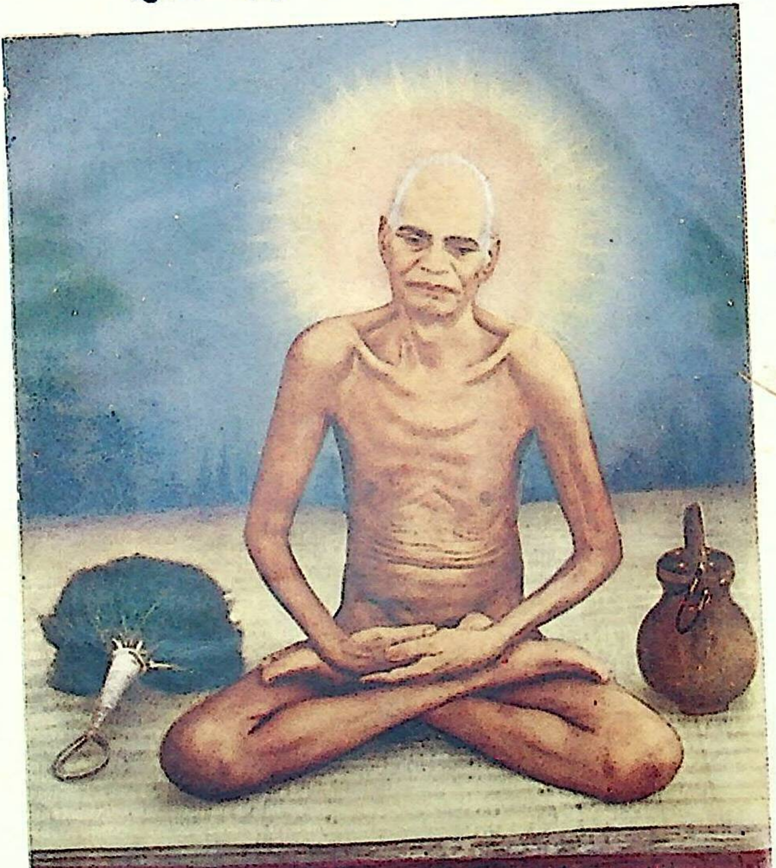

जन्मदिवस कार्तिक शुक्ला ९ सं० १९४० ग्राम प्रेमसर (गवालियर)
ऐलक दीक्षा आसोज सुदी ६ सं० १९८१ इन्दौर (मालवा)
मुनिदीक्षा मगसिर बदी ११ सं० १९८१ हाटपीपल्या (गवालियर)
आचार्यपद प्राप्ति कार्तिक शुक्ला ६ सं० १९८५ कोडरमा (बिहार)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—इन्द्र चले सुर साथ ले, करन जन्म कल्याण।
करत शब्द सुर गगन में, जय जय जय भगवान।
नाथ तुम शोभित कीनी धरण। आदि प्रभु प्रगटे ॥२॥
तीन प्रदच्छण दई नगर की इन्द्र सुरों के साथ,
फेर तहाँ गये जहाँ जिन नाथ जी।
इन्द्रानी हरि हुक्म लिआई, जिनवर को निज हाथ।
देख दर्शन नाया हरि माथ जी॥

दोहा—निरख रूप भगवान का, तृप्त हुआ नां इन्द्र।
नवन सहस्र योनि युत देखे आदि जिनेन्द्र॥
नमाया मस्तक प्रभु के चरण॥ आदि प्रभु प्रगटे० ॥३॥
प्रथम इन्द्र ने लिये नाथ तव, द्वितीय इन्द्र निशान।
छत्र सिर धरा प्रभु के आन जी॥
सनत्कुमार माहेन्द्र चमर दोऊ ढोरें इन्द्र सुजान।
शेष सुर करें जय जय भगवान जी॥

दोहा—नृत्य करे देवांगना, बाजे वहु विध तूर।
चले जायँ सुर गगण के बीच रहा शब्द पूर॥
जाहि सुर आनन्द याते करण॥ आदि प्रभु प्रगटे ॥४॥
गिरि सुमेर पर पांडुक वनमें पांडुक शिला पर जाय।
इन्द्र ने दिये नाथ पधराय जी॥
क्षीरोदधि से नीर हेम घट एक सहस्र बहु ल्याय।
इन्द्र ने नहलाये जिनरायजी॥

दोहा—एक चार वसु जानिये, योजन कलस प्रमाण।
सो ढारे जिन राज पर, हर्ष हृदय में ठान॥
नाथ को पहिनाये आभर्ण॥ आदि जिन० ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस विध कलशाभिशेक इन्द्र कर, अवधिपुरी में आय।
नाभि नृप को सोंपे जिनराय जी ॥
वृषभ नाथ कह नाम इन्द्र ने, स्तुति मुख से गाय।
शची युग भक्ति करी मन लाय जी ॥

दोहा—अमी अंगूठा मेलिके, इन्द्र नाय निज शीश।
दे अशीश निज गृह गये, जयवंतो हो ईश।
नाथ तुम शोभित कीनी धरण ॥ आदि जिन० ॥६॥

लाख तिरेसठ पूर्व राज कर, तब प्रभु भये उदास।
तुरत लौकांतिक सुर आये पास जी ॥
स्तुति कर गृह गये, फेर सुर इन्द्र प्रभु के दास।
रची शिविका प्रभु को सुख राशि जी ॥

दोहा—तामें प्रभु आरूढ़ हो, गये तपोवन नाथ।
वस्त्राभरण उतार के, लुंच केश निज हाथ ॥
तहाँ तप लागे दुर्द्धर करण ॥ आदि जिन ॥७॥

कर तप घोर जिनेश हने खल चार घातिया कर्म।
ज्ञान तब उपजाय पंचम पर्म जी ॥
समोशरण हरि रचा अकाशा तहाँ प्रभु जिन धर्म।
मिटाया भव जीवों का भर्म जी ॥

दोहा—देश सहस्र बत्तीस में, कीना नाथ बिहार।
अष्टापद से शिव लहे, हन अघातिया चार ॥
नाथूराम जहाँ न जन्म मरण ॥ आदि जिन० ॥८॥

॥ १२५ ॥ लावनी ॥

उत्तम कुल को पाय जे निज ने विवेक तो करना चहिये,
गजेन्द्र घर को छोड़ कर खर पर चढ़ना ना चहिये ॥टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अभक्ष भोजन कर कर भाई,अनंत काल तुम दुख पाये।
वोही अभक्षण नाम जो, जैन शास्त्र में वरणाये॥
ओला,घोर,विदुल,बहु बीजा रात्रि भुक्ति में चित लाये।
अचार वेगन खाय कर मन वच तन जुत हर्षाये॥
वड, पीपल, ऊमर, कठूमर पाकर फल, हंस हंस खाये।
अनजाने फल और भी कन्दमूल भखने धाये॥
माटी भख आमिष मद पी क्या नर्कों में पड़ना चहिये।
॥ गजेन्द्र घरको० ॥१॥

माखन मदिरा तुच्छ फल, और चलत रस है खोटा।
या सेवनते जगत में पाप नहीं दूजा मोटा॥
इनको सेवे मानुप तन धर, बने नर्क का घर कोठा।
रतन राशि को पाय कर कांच खंड उनने लूटा॥
धूम्र पान हुक्के को देखो सभी जगत का है झूठा।
हींग मांस में फर्क क्या फिर भी खाना नहिं छूटा॥
अस्पताल की औषध खाई फिरतो क्यों मरना चाहिये।
॥गजेन्द्र घरको० ॥२॥

कुप्पे का घृत तेल खात जो मांस दोप उसमें आया।
शूद्र क्रिया कर आखर वह नर,नर्क पशुगति अपनाया॥
दही दूध और पूरी कचौरी, बजार का जिसने खाया।
लुच कुच भाजी वसोड़ी दही बड़ी बासी गाया॥
इनका खाना करें मति भ्रष्ट पाप में परनाया।
छोड़ जहाज गिरे समुद्र में वह कैसे तिरना चहिये॥ गजेन्द्र०३॥

श्रावक कुल में जन्म लिया है, अष्ट मूल चित में धार।
अभक्ष त्यागो, अरु सातों व्यसनों का कर परिहार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अष्ट अङ्ग सम्यक्त धरो, पणवीस दोष दीजे टार।
छुल्लक, ऐलक मुनि व्रत धरकर कर्म रूप शत्रु विषमार॥
गुणस्थानक पंथ चलो सम्यक्त्व पालकी पर असवार।
घातिक त्रेष्ट नाश कर हो जाओ भव दधि ते पार॥
माथुरमल केवलज्ञानी हो मुक्ति वधू वरना चहिये॥गजेन्द्र०॥४॥

॥ १२६ ॥ लावनी ॥

मकसी के पारसनाथ की महिमा थारी।
दर्शन कर पातिक कटें धन्य बलहारी ॥ टेक ॥

इक शहर बनारस जन्मपुरी अति प्यारी।
नृप अश्वसेन वामा के घर अवतारी॥
जहां इन्द्र महोत्सव कियो कि जय जयकारी।
दर्शन कर पातिक कटें धन्य बलहारी ॥१॥

जहां नाग नागनी जरत अग्नि से उवारी।
धरणेन्द्र अरु पद्मावती भये सुखकारी।
इक समय बाद शाम कशी पहुँचो जाई।
मन्दिर की अविनय करी सजा भई भारी ॥२॥

तुम साँचे पारसनाथ क्षमा मो सारी।
जहाँ भव्य जीव मनमानो हर्ष विचारी॥
यह दास भुवानी हर्ष हर्ष गुण गाई।
दर्शन कर पातिक कटें धन्य बलहारी ॥३॥

॥ १२७ ॥ दूसरी लावनी ॥

श्रीमकसी पारसनाथ शरण मैं तेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी ॥ टेक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं भटक्यो चहुंगति माहि चक्कर वहु खाया,
जहां लख चौरासी जन्म न मरण कराया।
मोह वीतानन्ता काल करत ये फेरी,
श्री मकसी पारसनाथ शरण में तेरी ॥ १ ॥

यह मिथ्यावादी भाव महा अन्यायी,
जिन अष्ट कर्म से मुझे दिया बंधवाई।
कोई शरणागति नहिं मिला बहुत मैं हेरी,
मैं पड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥२॥

मुझे मिले बहुत से देव क्रोधि अरु मानी,
जो माया में लिपटाय लोभ बहु ठानी।
जिन धरदी सिर पर मेरे पाप की ढेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥३॥

इन पाखण्डी गुरुओं ने मुझे भरमाया,
जिस कारण मैंने जन्म मरण बहु पाया।
मैं कहूँ कहा लगे मुझे बहु देरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥४॥

कोई पूरव संचय पुन्य उदय मम आया,
तिस कारण मैंने श्रावक कुल को पाया।
मला वीतराग उपदेश कछु बुधि मम फेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥५

मैं विनऊं वारम्वार शरण में आया,
तुम विरद बड़ा बलवान जिनगम जाया।
ये मन में निश्चय धार शरण लहि तेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तुम वालकपन में नागिन नाग उवारे,
जिन सुना मन्त्र नवकार धरणीन्द्रपद धारे।
वो हुई पद्मावति नारि धरनी जाकेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥७॥

वो कमठ बड़ा नादान, क्रोध में आकर,
तुम से भव भव में वैर किया वो जाकर।
ऐसे दुष्टों पर क्षमा धारदं भेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥८॥

इस पंचम काल में तुमरे ही परतापा,
कई जीवों का दुःख दूर भया संतापा।
मैं कब लग वर्णन करूं शरण में तेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुनमेरी ॥६

इक दिल्लीपति वादशाह तो आया,
जिन हिंदु मन्दिर मूरति वहु टुड़वाया ।
तुमरे अतिशय ने किया पलंग पर टेरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी॥१०॥

जब तुमरे वल का पार न उसने पाया,
तब हाथ जोड़ चरणन में शीश नवाया।
ये पांच कांगुरे बना करी नहिं देरी,
मैं खड़ा चरण में आय अरज सुन मेरी ॥११॥

॥ १२८ ॥ महावीर स्वामी की स्तुति ॥

सदाचार के सत्य के सच्चे हामी,
वता मुक्ति का पथ हुए मोक्षगामी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अहिंसा के अवतार दुनियाँ में नामी
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ १ ॥

जमाना था सोता जगाया था किसने,
गिरे आत्मबल को बढाया था किसने।
अहिंसा का डंका बजाया था किसने,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ २ ॥
दया धर्म सबको सिखाया था किसने,
भटकतों को सुपथ बताया था किसने।
स्वर्ग भूमि भारत बनाया था किसने,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ३ ॥

अंधेरे में जब लोग भटके हुए थे,
फंसे मोह में लोभ लटके हुए थे।
किये दूर किसके वो खटके हुए थे,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ४ ॥
दिया ज्ञान जनता को अज्ञान रोका,
उमड़ता था हिंसा का तूफान रोका।
किया आत्म बलिदान बलिदान रोका,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ५ ॥

हुआ कौन अद्‌भुत महा आत्मज्ञानी,
तजा राज सुख और जप तप की ठानी।
नहीं त्याग तप में है जिनका सानी,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ६ ॥

उपस्थित रहे जिनकी सेवा में गणधर,
जो देते थे उपदेश सबको बराबर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वचन क्या थे सोने सुधा के सरासर,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ७ ॥

प्रकाश आपसे धर्म का जगमगाया,
दया धर्म का ऐसा झंडा उठाया।
नहीं झुक सका जो किसी का झुकाया,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ८ ॥

डटो धर्म पर वीर हिम्मत न हारो,
स्वयं अपने आपको भव से उबारो।
रहे ध्यान मन में हृदय से पुकारो,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥ ९ ॥

॥ १२९ ॥ पाँच पाण्डवों की लावनी ॥

नामी वीर कुन्ति सुत पाण्डव, परिग्रह त्याग गये वन में।
कायोत्सर्ग वर्ग को धरकर, कर्म काटते थे मन में ॥ टेक ॥

इतने में आ भानिज कौरव, ध्यानास्थित देखा इनको।
हुआ रोष मन में अति भारी,हाय हना इन कौरव को॥
आज यहाँ उत्तम अवसर है बदला लेने का इनसे ॥नामी वीर०१

दिल भरकर देवें दुःख इनको, होगा नहिं कुछ भी इनसे।
लोहमयी आभूषण गढ़के, खूब गर्म कीना उनको॥
अग्नि कैसा रंग हुआ, तब संसी से पकड़ा उनको।
कहते हैं लो कंठी पहनो, कहकर गले लगाते हैं ॥ नामी वीर०२॥

बाजू अरु भुजबंद कड़े पहनो, कह करके पहनाते हैं।
हिये हार अरु कमर कंडोरा, लंगर पांव चढ़ाते हैं॥
अड़ते ही सब जले चाम, पर पांडव ध्यान बढ़ाते हैं॥नामी वीर०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन में सोचे हैं पाण्डव सुत, धन्य हमें यह साज दिया।
हुए हमारे मुक्ति सहायक, कर्जा निज का अदा किया॥
हमें तो प्यारे किसी भवों में, कर्मन कर्ज चुकाना था।
भला हुआ जो आये अब तुम, यहयश तुमहि को आनाथा॥४॥

सोचो पाठक ये वही पांडव सुत, जिनने महाभारत जीता।
ये वही धनुर्धर वीर, श्री अर्जुन, जिनने सब रणको जीता।
ये भीम भयानक भी वे ही, जो गदा अजब सी चलाते थे।
ये गदा और गांडव वही, जिनसे प्रति हर भय खाते थे।
नामी वीर॥५॥

जो देखे बुरी निगाह से इनको, ये यमपुर पहुंचाते थे।
पर आज निहारो तो इनको, ये उत्तम क्षमा रचाते थे।
श्रेणी बढ़ी क्षपक की उज्वल, शुक्ल ध्यान के पाये पर।
कर्म घातिया टूट पड़े, इस उत्तम क्षमा के आने पर।
नामी वीर॥६॥

ज्ञायक हुए चराचर के, सब झलक गये भव जीवों के।
केवल कमलाकर अनुरंजित, कर्म कटे उन तीनों के।
हुए अन्तकृत् समय एक में, पंचम गति पर पहुंच गये।
सुख अनंत में मग्न हुए, इस भव समुद्र से पार हुये।
नामी वीर॥७॥

इन्द्रों ने आ किया कल्याणक, धन्य क्षमाधारी गाया।
बाकी दो पांडव अहिमिन्द्र, सर्वार्थसिद्धि पद उन पाया।
धन्य आज का दिवस भादवा, सुदी पंचमी का आया।
इस जेठमल्ल ने क्षमा महातम, मंदिर रच कर गाया।
नामी वीर॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १३० ॥ लावनी ॥

केश धवल इक लख दशरथ ने, जग निवास अस्थिर जाना।
बुला सचिव को लगे बुलाने, राज्य देन रघुवर ठाना ॥टेक

अहो सचिव अब आयु रही कम, काल दूत देखो आया।
मैं विषयों में रहा लुभाया, तत्त्व ज्ञान कुछ नहिं पाया।
इन्द्र नरेन्द्र धरनेन्द्र प्यारे, काल बली ने सब खाये।
तंत्र-मंत्र समरथ ना कोई, हाय मौत से बच पाये।
केश धवल ॥१॥

तन रूपी बन्दीखाना है, बनिता बेड़ी सम जानो।
हैं परिजन स्वारथ के सीरी, जिम तरुवर पर पत्ती मानो।
तनु भी महा अशुचि का घर है, नवों द्वार रहते झरते।
बुधिजन तो इससे तप करके, स्वर्ग मोक्ष साधन करते ॥२॥

जीव अकेला भ्रमे लोक में, काल अनादि से रुलता।
ऊंचा-नीचा इधर उधर, उस गेंद समा रहता झुलता।
मोह महामद में मुरझाया, भेद असल तो नहिं पाया।
उल्टा विषयों में रत होकर, परिग्रह में ही भरमाया ॥३॥

सिंधु गमाई लाल मिले जिमि, भव मानुष दुस्तर पाना।
इस सिवाय कोई योनी से, मिले नहिं मुक्ति ठाना।
इससे ही अब अहो मंत्रिवर, कब वो दशा हमारी हो।
कब ये भार परिग्रह उतरे, कब चरित्र तैयारी हो ॥४॥

नग्नरूप कब होय अहा हम, कब केशों का लोंच करें।
हा पीछी हाथ कमंडलु लेकर, कब भिक्षा प्रस्थान करें।
कब कर पात्र अहार होवे, जग बंधन से कब छूटें।
अपने आप आपे कब देखें, पराधीन पन कब छूटे ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कायोत्सर्ग करें गिरिपर कब, कब आतापन योग धरें।
कब सरिता के तीर रहें हम, कब तरुवर तल वास करें।
क्रोध मान माया लोभादिक, इनसे कब पीछा छूटे।
ईर्या पंथ गमन कब होवे, ऊंच-नीच संज्ञा छूटे ॥६॥

समता भाव धारना कब हो, कब मुनिराज नाम पावें।
जिनवर मग अनुगामी बनकर, केहरि हो कानन जावें।
कब तप तपें खूब मन लाकर, अष्ट कर्म का नाश करें।
जीवन मरण तिलांजलि देकर, हाय कबै सुख वास भरें ॥७॥

उठो सचिव अब देर करो मत, राम राज्य सिर भार धरो।
भव बंधन से मुझे छुड़ा कर, जेठमल्ल मुनिराज करो ॥८॥

॥ १३१ ॥ अकलंक निकलंक की लावनी ॥

जैन जाति के जीवन धन, अकलंक और निकलंक समान।
सानी नहीं आन दुनियां में, होगा अमर शहीद प्रमाण ॥टेक॥

दारुण दुरित दुःख दरशाता, अहो आज यह कारागार।
दीख रहे हैं सोच रहे-हैं, ये जुगल भ्रात समयोचित सार।
बोले बाँधव विधि विडंबना, नहीं समझ में आती है।
किन्तु निकलना शीघ्र संत्रणा, यही चित्त में भाती है ॥१॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः कहकर, किस तरह किया इनने प्रस्थान।
जिस तरह देह पर त्याग आतम हो, जाता है अन्यत्र पयान।
हुए पुरी बाहिर प्राची दिश, भो पीली पड़ने को थी।
भागे किन्तु लखा पीछे तो शत्रु सैन्य बढ़ने को थी ॥ २ ॥

बड़े भ्रात बोले छोटे से, मरना है जीवन परिणाम।
प्यारे पर कर सके नहीं कुछ, धर्म हेतु नामांकित काम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मरते हैं वे मौत किन्तु गर, बचे एक के भी जो प्राण।
तो शायद फिर भी कर देंगे, जैन धर्म का पुनरुत्थान ॥३॥

सुनकर बोले वीर शिरोमणि, श्री निकलंक देव पर धान।
मरने दो मुझको स्वामी, मैं हूं मतिमंद आप मतिवान।
गर रहे आप तो जिन मतका, झंडा जग में फहरायेगा।
परवाह नहीं निज प्राणों की, यह धर्म काम में आयेगा ॥४॥

धन्य धन्य आदर्श वीर न्योछावर जिन मत पर होना।
सिखलाया है दुनिया को बलिवेदी पर बलि हो जाना ॥
धर्म समर्पण आन किया अरु असि से शीश कटाया था।
आप मरे आगे हो बांधव श्री अकलंक बचाया था॥
हो जाओ ये वीर आज के, इसी तरह प्रण पर तैयार॥
तो हो जाय जरा जेठमल, जैन जाति की नैया पार॥ ६॥

॥ १३२ ॥ भजन ॥

कहाँ अकलंक और निकलंक, जमाया जैन धर्म आतंक।
उड़ाया बौद्ध धर्म का डंक, मिटाया मिथ्यामत पाखंड ॥ टेक ॥

हमारा क्या कर लेंगे रंक, रहें इस कारागृह निःशंक।
गया अस्ताचल माहि मयंक, कहां अकलङ्क और निकलङ्क ॥
उठे चल पड़े भ्रात वनखँड, लखा पीछे आते बलवंड।
नहीं अब अन्य उपाय अखंड, कहाँ अकलंक और निकलंक ॥१॥

करी तब अन्त भेंट भर अंक, हुए बलिदान आप निकलंक।
बताया अमर शहीद सुरंग, कहां अकलंक और निकलंक ॥
चले अब स्वामी श्री अकलंक, अनेकों बना दिये अकलंक।
जिनमत उत्थायक अकलंक, कहां अकलंक और निकलंक ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुए ज्यों स्वामी श्री अकलंक, जेठ मल्ल बने बन्धु अकलंक।
ये सब छिप जायेंगे रंक, कहाँ अकलंक और निकलंक ॥ ३ ॥

॥ १३३ रावण की लावनी ॥

रावण को समझावे मन्दोदरि, भरके नेत्र जल में दोनों।
पिया लेके जानकी, मिलो नाथ नहिं आवें वीर पलमें दोनों ॥टेक

मानो पिया दसकंद कहा मतिमंद भई, अबकी बारी।
राक्षस कुल के नाश करन को, कहा कुमति हिरदे धारी ॥
तीन खंड के धनी नाथ तुम हर लाये हो पर नारी।
कैसे छूटे लगा पिया यह कलंक कुल को अति भारी ॥
वे नारायण बलभद्र प्रगट भये कल में दोनों। पिया लेके० ॥ १॥

सुन वच रावण कहे नारि से, क्यों करती दिल में शंका।
बीच सिन्धु के पड़ी है, यह अगस्य मेरी लंका ॥
भूमि गोचरी रङ्क करें सब शंक सुनत मेरा डंका।
तीन खण्ड में युद्ध करन को, कौन मुझसे है बंका।
हम खगपति वे भूमि गोचरी, भ्रमें पृथ्वी तल में दोनों॥पिया०२

हाथ जोड़ फिर कहे मन्दोदरि, वचन हमारे मानो पिया।
वानर वंशी भूप सब मिले, उन्होंमें आन पिया ॥
अङ्गागद सुग्रीव नीलनल भामंड हनुमान पिया।
भूप विराधिन सैन्य ले आये बैठ विमान पिया ॥
धनुष बाण ले हाथ हरी हल गर्ज रहे वल में दोनों ॥ पिया०॥३

बार बार समझावे मन्दोदरि धरे शीश युग चरणन में।
एक न मानी लङ्कपती, कैसी कुमती बैठी मन में ॥
बहुत कर चुके युद्ध नाथ, अब धरो ध्यान जाके वन में।
पर नारी के काज क्यों देहु प्राण अपने रण में ॥
नाथूराम कहें तब पछते हो, जब लड़ हैं दोनोंदल में। पिया०॥४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १३४ ॥ लावनी ॥

चरण कमल नव कहें मन्दोदरि, यह विन्ती पिय भाम की है।
जनक सुता को पठावो अब कुशल इसी में धामकी है॥ टेक॥

हम अबला मति हीन दीन क्या समझावें ऐसा कीजे।
पंडित गण में मुकुट प्रिय, तुमको क्या शिक्षा दीजे॥
जो हितकारी होय करो, सो कहा मान इतना लीजे।
ऐसा कीजे नाथ जिसमें न कला कुल की छीजे॥
शैर—भानु सम तेजरु प्रकाशित वंश यह राक्षस पिया।
ताहि मत मैला करो अह जानके अपने पिया॥
परनारी रत जो नर भये, तिन वास दुर्गति में किया।
धन धाम प्राण गमाय अति, अघ भार शिर अपने लिया॥
यातें हठ मत करो पद्रू' पद, पर त्रिय जड़ बदनाम की है। जनक० १
दौड़—दश मुख कहे त्रिखंडपती मैं भूचर नभचर मेरे दास।
तीन खण्ड की वस्तुओं पर प्रभुताई है मेरी खास।
मुझे छोड़ यह सुन्दर सीता, और कौन गृह कर है वास।
मानसरोवर छोड़, करते न हंस लघु सर की आस॥
शैर—इन्द्र सरीखे योधा मैंने बांधे क्षणक में जायके।
सोम वरुण कुमेर यम वैश्रमण बांधे क्षणक में जायके॥
विश्व में जाहिर भयो कैलाश शैल उठायके।
कौनसा योधा रहा रण में लड़े जो आयके॥
तब मन्दोदरि कहे नाथ निज मुख न बड़ाई काम की है। जनक० २
दौड़—तुम सम को बलवान नाथ, पर यह कार्य जग में अति नीच।
तुमको शोभा न दे जो परत्रिय अङ्ग लगावो कीच।
नीतिवान पण्डित साधर्मी कहलाते नृप गण के बीच॥
अपकीर्ति से भली है सज्जन जन की जग में मीच।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शैर—है बड़ा आश्चर्य सुर तिय से अधिक मैं सुन्दरी।
ताम़ें अरुचि तुमको भई, हिरदे बशी भूचर नरी॥
कहो जैसा रूप विद्या वल करूँ याही चरी।
हठ त्यागिये परनारि का, विनती करे मन्दोदरी॥
सीता भी प्रिय वरे न तुमको, पतिव्रता त्रिय राम की है॥ जनक०३

दौड़—सुनत वचन लंकेश कहे, त्रिय तुम सम और नहीं नारी।
यह तो निश्चय मुझको है, पर कारण एक लगा भारी।
हम क्षत्री रणसूर हरीं सिय, यह जानत दुनियां सारी॥
जो सिय भेजो राम निकट, तो देहें सब नृपगण तारी।
शैर—जान हैं कायर मुझे नृपगण, सभी अभिमान से।
यासे लड़ना योग्य है, रघुवीर सङ्ग धनु वाण से।
जीतकर अरपो सिया, प्यारी जो उनको प्राण से॥
यश होय मेरा विश्व में, बेसक सिया के दान से।
नाथूराम जिनभक्त कहे, त्रिय शुभ न चाह संग्राम की है।
जनक सुता को० ॥ ४ ॥

॥ १३५ ॥ लावनी ॥

चार जात के जैनी जग में, जिनका हाल सुनो भाई।
कहूं हकीकत जुदी जुदी मैं देखो इनकी चतुराई॥ टेक॥

पहले जैनी ऐसे भाई दर्शन प्रभु के नित्य करें।
व्रत्य आखड़ी रखें ममत कर, जीव दया को हृदय धरें।
पूजन कर नित पढ़ें शास्त्र, अरु नरक दुःख से जो डरें॥
तीन काल सामायिक कर, सुन अपने चित्त की साख भरें।
यथाशक्ति जो देय दान, अरु धरें प्रेम दिल के माहीं।
कहूँ हकीकत० ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूजे जैनी ऐसे भाई, भादों में दर्शन करते।
कुल पद्धति की रीत जैनमत, मन्दिर में आते डरते॥
बारह मास वह नहीं आवते, नहीं धर्म हृदय धरते।
भादों में वे शर्म से आते, दश दिन मुश्किल से कटते॥
होय पर्यूषण पूर्ण फेर पाँव धरे मन्दिर नाहीं। कहूं हकीकत।२॥

तीजे जैनी की सुनो हकीकत, जिसका किस्सा है भारी।
ले पंचायत आवें मन्दिर, लड़ें भिड़ें काढ़ें गारी॥
और तरह नहिं आवें मन्दिर, सूरत जिनकी है न्यारी।
पंचायत को काम पड़े, जब पंचराज बनते भारी॥
पक्षपात से करें बखेड़ा, धर्म कर्म समझें नाहीं॥कहूं हकीकत।३॥

चौथे जैनी और विकट हैं, मन्दिर तिन ने नहिं जाना।
घर का कोई मर जाय पाँच पंचों को लेकर तब आना॥
और तरह नहिं आवें मन्दिर, होय गमी का जब थाना।
पशू समान वितावें जीवन, धर्म कर्म नहिं पहिचाना॥
खूबचंद चारों हैं उत्तम, तिनकी चाल चलो भाई।कहूं हकीकत।४॥

॥ १३६ ॥ लावनी ॥

आतम कृष्ण सुमत राधा, इस घट में गोपी ग्वाल सकल॥
सुनो कान दे बनाया इस घट में, हम रहस मंडल॥ टेक

सम्पूरण संयोग मिलाकर, तन मन्दिर तैयार किया।
द्वार झरोखे, पवन का सम्पूरण विस्तार किया॥
गोपी ग्वाल बाल जुर आये, देखा उज्ज्वल मेरा भवन। सुनो।१

ज्ञानदर्श का बना बगीचा, फूल रही सब फुलवारी।
दशलाक्षण घर, तहां नित रमत भ्रमत सखियाँ सारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन ऊधौ जी मित्र हमारे, सदा सेव आज्ञाकारी।
सुमति राधिका, सुमेरे प्राणन त है अति प्यारी ॥
बुद्धि विशाखा सखी लगन, ललिता देखी चंचला चपल ॥२॥

व्रज वनिता बारह भावन, त्रेपन त्रियां सब जुर आईं।
वे तो सब जाने कृष्ण को कृष्ण हमारे हैं सांई ॥
गह बईयां खेले व्रज में, फिर क्या क्या तान सुन्दर गाई।
बजाय वंशी, सो मैंने तब सबके मन को बिलमाई ॥
प्रेम मगन हुई व्रज बनिता को, मैंने किया बहुत से कल ॥ ३ ॥

पाँच सात सखियाँ जुड़ आईं, मोह सुना जब पास मेरे।
लगी कहन को, भये क्यों औगुण देख उदास मेरे ॥
मन चाहो मो संग रमन को, जब तो भय ते दास मेरे।
अब क्यों प्रीतम छोड़कर, सोतन के विश्वास परे ॥
मैंने कहा सुन कुब्जा मैं तो, रहस मंडल में हुआ अटल॥सुनो॥४॥

यही रहस को देख कर, मुनिजन वन में ध्यान धरे।
हो सम्यक दृष्टि, छोड़कर अप्पा पर पहिचान करे ॥
जो बुधिजन निश्चय कर जाचें, कर्म शत्रु बलवान हरे।
शिव रमणी को पायकर, अजर अमर शिवथान वरे ॥
कहें विहारीलाल इसी तन, मथुरा, बिन्द्रावन गोकल ॥सुनो॥५॥

॥ १३७ ॥ लावनी ॥

नर होनहार होतव्य न तिल भर टरती।
भई जरद कुंवर के हाथ मौत गिरधर की ॥ टेक ॥

श्री नेमिनाथ निज आगम यह उच्चारी।
भई बारह वर्ष विनाश द्वारिका सारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बचे फक्त श्री बलभद्र और गिरधारी।
गये निकल देश से कृष्ण तृषा अधिकारी॥
भये निद्रा वश वन बीच निवृत्ती हरि की ॥भई जरद॥१॥

गये नीर भरन बलभद्र न नियरे पाया।
धर भेष शिकारी जरद कुंवर वहां आया॥
लखि पीताम्वर रङ्ग पीत पद्म दर्शाया।
जब मृगा जान जद वंशन वान चलाया॥
लागत ही तीर उठ वीर पीर तरकस की॥ भई जरद० ॥२।

चित चक्रित होत चहुं ओर विचारे मन में।
किन मारा वैरी वाण आय इस वन में।
यह वचन सुनत जद कुंवर विलखते मन में।
श्री नेमिनाथ जिन वचन लखे दृग मन में॥
होनी से शक्त न होवे, गण मुनि नर की।भई जरद०॥३॥

ले आये नीर बलभद्र तीर नरपति के।
लखि हाल भये बेहाल देख भूपति के॥
षट् मास फिरे बलदेव मोहवश भ्रमते।
दिया तुंगी गिरिपर यह दाग बोध चित्तधरके॥
कहें हरिजन के सुत,वाणी यह जिनवर की॥भई जरद०॥४॥

॥ १३८ ॥ लावनी ॥

स्वामी सुकौशल कथा अनूपम, ग्रन्थों में वरनी सारी।
वरणन अब जिसका सुनलो, संक्षेप रूप सब नर नारी॥टेक॥

राय कीर्तिधर पिता सुकौशल, देख दृश्य नभ का इक दिन।
भोग भुजंग सम जान के, तजने को उमगा ततक्षण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब बोली रानी सहदेवी, सजल नैंन में ले तन मन।
क्यों कर मुझको तजो तुम, नाथ सदन सूने सुत बिन।
वचन वंद इक हुआ पुत्र होते ही होना अनगारी ॥१॥

थोड़े ही दिन में रानी ने, छाने छाने पुत्र जना।
किसी मनुष्य को न दिया, भेद सुकौशल पुत्र तना।
दैव योग पोतड़े धोवती, लखी धाय कोई बंधु जना।
दई वधाई राय को, सुनते ही खुश हुआ घना।
राज तिलक पुत्र को कीना, आप जाय दीक्षा धारी ॥वरनन॥२॥

रानी के दिल में राजा का हुआ, शोच तो बहु तेरा।
भूल गई सुत सुख अपने में दुख भर्ता केरा।
सहदेवी से कही किसी निमती ने, जो अङ्गद तेरा।
मुनि दर्शन से करेगा, राज छोड़ वन में डेरा।
हुक्म देदिया शहर विषें, कोई आन न पावे ब्रह्मचारी ॥वरनन॥३॥

होनहार इक दिन सुकीर्तिधर, भोजन को पुर में आये।
देख सुकौशल मात से, कही कौन ये ऋषी आये।
होगा कोई रंक वचन जब, रानी ने यह फरमाये।
रोवत धाय ने सभा यथारथ, भेद कुंवर को समझाये।
देख सुकौशल प्रीति जगतकी, तजी राज्य सपति सारी॥वरनन॥४॥

सुनते ही वैराग्य पुत्र का, सहदेवी मूर्छा खाई।
गिरी धरणी पर, रोवती सीधी ही वन को धाई।
हाय हाय वो करे, धीर नहिं धरे कहुँ दुख कहाँ ताई।
मरी विरह में, नाहरनी होय, भख्यो सुत अपना ही।
फिर धाई भरतार कीर्तिधर, मारणको अति दुखकारी ॥वरनन॥५॥

महा भयानक राहु काल लखि, ताको जब आतम ज्ञानी।
मधुर वचन से कही ये, पापन तें ये क्या ठानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जा सुत विरह हो मरी अभागिन, ताही देह तेने हानी।
सुनत वचन यों हुई, अति शान्ति चित्त समता आनी।
अंत स्वर्ग वोगई,गये रिषी दोउ कुंदन भवदधि तारी॥वरनन॥६॥

॥ १३६ ॥ स्तुति ॥

प्रभु इक अर्जी चित्त धरना,
भ्रमतन काल अनादि गमायो याते निरवरना।
करीं जब नरकों की खबरें,
छेदन भेदन ताडन तापन शूली धरना।
जिन्होंने यहाँ मद्य मांस खायो,
तामो शीशो ओंट ओंटकर भलि विधिसे प्यायो।
जिन्होंने यहाँ भोगी पर नारी,
लोह पूतली ताती कर कर अंगन से जारी॥१॥
जीव जिन मारे अधिकाई,
देहि तिन्हों की खंड-खंड कर वैतरनी डारी।
प्रभु जहाँ असुर कुमारा ज़ी,
पूरव वैर विचार भली विधि समझाये तिन जी।
दुःख वहु नर्क निगोदन के,
सहें जाय नहिं भांति भांति के कायर नाहिं भये।
निकस गति पशु पत्ती धारी
शीत उष्ण अरु भूख प्यास की वेदन अधिकाई॥प्रभु इक॥२
मनुष्य गति क्रम क्रम कर पाई,
जप तप दान पुन्य नहिं कीना विरथा ही जाई।
फेर कहूं सुर पदवी पाई,
भोगन से नहिं तृप्त भये जिन रंभा उर लाई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निकट जब अंत समय आयो,
किये विलाप तिन भांति भांति को देवन समझायो।
भ्रमण कर सुख दुख बहु भुगते,
कारण कछु मिलो नहीं जामें याते निरखरते ॥ प्रभु इक॥३
प्रभु मैं दीन भयो बिलख्यो,
तुम से त्रिभुवन नाथ आज तक नैनन नहिं निरखो।
तुम्हें जब श्रीपाल सुमरे,
कुष्ट व्याधि सब दूर भई जब सायर ते उबरे।
तुम्हीं ने दृढ़ व्रत प्रण राखो,
फण की फूलन माल भई जब जय जय मुख भाखो।
तुम्हें जब सीता ने सुमरे,
अग्निकुण्डसे नीर भयो जब देवन शब्द करे ॥प्रभु इक॥४
कि बेड़ी मान तुङ्ग मुनि की,
सुमरत छिन में टूट गई ये महिमा जिनवर की।
तुम्हीं ने अंजन से तारे,
नाम लेत मेढ़क अजया सुत देव रिद्धि धारे।
नन्द की अर्जी सुन लीजे,
जब तक जन्ममरण रह जगमें चरण शरण दीजे ॥प्रभु इक॥५

दोहा—करूं बीनती पांय गह सुनियो श्री जिनराय।
भवदधि फाँसी में फंसो पति राखो महाराज ॥

॥ १४० ॥ महावीर स्वामी की स्तुति ॥

सदाचार के सत्य के सच्चे हामी,
बता मुक्ति का पथ हुए मोक्षगामी।
अहिंसा के अवतार दुनियाँ में नामी,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जमाना था सोता जगाया था किसने,
गिरे आत्म बल को बढ़ाया था किसने।
अहिंसा का डङ्का बजाया था किसने,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥२॥

दया धर्म सबको सिखाया था किसने,
भटकतों को सुपथ बताया था किसने।
स्वर्ग भूमि भारत बनाया था किसने,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥३॥

अन्धेरे में जब लोग भटके हुए थे.
फंसे मोह में लोभ लटके हुए थे।
किये दूर किसने वो खटके हुए थे,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥४॥

दिया ज्ञान जनता को अज्ञान रोका,
उमड़ता था हिंसा का तूफान रोका।
किया आत्म बलिदान बलिदान रोका,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥५॥

हुआ कौन अद्भुत महा आत्म ज्ञानी,
तजा राजसुख और जप तप की ठानी।
नहीं त्याग तप में है जिनका कि सानी,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥६॥

उपस्थित रहे जिनकी सेवा में गणधर,
जो देते थे सबको उपदेश बराबर।
वचन क्या थे सोते सुधा के सरासर,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाश आपसे धर्म का जगमगाया,
दया धर्म का ऐसा झंडा उड़ाया।
नहीं झुक सका जो किसी का झुकाया,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥८॥
डटो धर्म पर वीर हिम्मत न हारो,
स्वयं आप अपने को भव से उभारो।
रहे ध्यान मन में हृदय से पुकारो,
महावीर स्वामी महावीर स्वामी ॥९॥

॥ १४१ ॥ लावनी ॥

प्रथम नमूं आदीश जिनेश्वर, वर्द्धमान पीछे नमता।
एक बार महावीर की जय बोलो सारी जनता ॥ टेक

हमको याद दिलाने को फिर आन वही दिन आया है।
वीर प्रभु ने जग में आकर सब पाखंड मिटाया है ॥ १ ॥
कोई धर्म दुहाई देकर, पशु बलि खूब रचाते थे।
दिन भर में लाखों पशुओं को बलिवेदी चढ़वाते थे ॥ २ ॥
दया धर्म का नाम नहीं था फैल रहा था अत्याचार।
घर घर हिंसा व्याप रही थी घर घर डायन जैसा आकार ॥ ३॥
जब भारत में पशु यज्ञों का व्याप रहा था हिंसाराज।
भारतमाता दुखी बहुत सी लुटने के कारण निज लाज ॥ ४ ॥
जब दुनियां में पाप आपकी पूरी हद तक पहुंच गया।
उसी समय भगवान वीर का भारत में आगमन हुआ ॥ ५ ॥
श्रावण वदि एकं को प्रभु की दिव्य ध्वनि जग में गूँजी।
दीन दुखी आरत प्राणी को प्राप्त हुई उत्तम पूँजी ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिव्य ध्वनि ने पूर्ण विश्व में शान्ति सुधारस फैलाया।
सच्चा धर्म स्वरूप वीर ने सब जीवों को सिखलाया ॥ ७॥

उठो उठो हे भारत वीरो दिवस जयन्ती आया है!
अखिल विश्व जागृत करने को शुभ सन्देश सुनाया हैं॥ ८॥

राग द्वेष का भाव हटाकर सबको धर्म सुनाया है।
वीर प्रभु की दिव्य वाणी ने पूरण विश्व गुंजाया है॥ ९॥

साम्यभाव रख प्राणिमात्र पर करो प्रेम नित निज सम जान।
सबसे बड़ा ध्येय यही हो, हो भारत भू का कल्याण॥ १०॥

बड़ा अहिंसा धर्म जगत में, सब धर्मों का सार यही।
इससे बढ़कर नहीं विश्व में धर्म बताया और कहीं॥ ११॥

खड्ग अहिंसा लेकर कर में, वीर सन्देश सुना देना।
पूर्णसक्ति से डट कर वीरो, जैन धर्म फैला देना॥ १२॥

वीर प्रभु के उपदेशों से, धर्म अहिंसा फैल गया।
हिंसा की भी हिंसा हो गई, पाप कर्म सब दल गया॥१३॥

पुण्य योग से अबकी बेला नर शरीर पद पाया है।
क्यों फंसते हो मोह जाल में, झूठी जग की माया है॥ १४॥

राग द्वेष मद मोह छोड़कर, सच्ची ज्योति जगा देना।
बिछुड़े हुओं को गले लगाकर, अनुपम प्रेम दिखा देना॥ १५॥

॥ लावनी ॥

ज्ञान चक्षु अवलोक अरेनर, मोह नींद क्यों सोता है।
करले करनी वृथा शुभ श्रावक कुल क्यों खोता है॥ टेक॥

यह तन रज की गड़ी, चर्म से मड़ी नशें जहाँ तहाँ फैली।
ताते सुन पुनि प्रगट दीखे, मल मूत्र रुधिर थैली॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इससे अधिक सनेह जोर, निज शक्ति तोड़ कर मत मैली।
मिले न यह सुन चमक चपला, बिछुरे संगति शैली॥
नर तन रत्न अमूल्य पाय, क्यों अंबुज बीच डुबोता है।
ज्ञान चक्षु॥ १॥
गृह जन सुजन सु पुरजन परिजन ममता वश कहता मेरे।
यह नहिं तेरे, अरे ये मरघट तक साथी हैं रे॥
पुण्य पाप के कारण प्यारे, सुख दुख सहज ही पावोरे।
यह न सहायक राग आश्रित, दुर्गति में ते जावोरे॥
मेल इन्हों का शशि रजनीवत, अंत सवेरा होता है।
ज्ञान चक्षु॥ २॥
यदि परमोत्कृष्ट सुख चाहो, तो सतगुरू वचन हृदय धारो।
त्याग मूढ़ता भक्ति युक्त, जिन गुण गान सदैव करो॥
दृढ़ श्रद्धान सु ध्यान योग के, आर्त रौद्र परिणाम हरो।
ज्ञान विरागी होय के विषय कषाय, सदा विसरो॥
जिन वच सुधा सिंधुमें मित्न, क्यों न लगावत गोता है।
ज्ञान चक्षु॥ ३॥

॥ रसिया ॥

कब मिल हैं साधु वनो वासी, कब मिल हैं॥ टेक॥
निर्विकार निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तोड़ दई ममता फाँसी।
कब मिल हैं॥ १॥
ये प्रभु सब जीवनके रक्षक, मिथ्यातम हर सुख रासी।
कब मिल हैं॥ २॥
राज बाज गज परिजन छोड़े, जिन छांड दई राजुल खासी।
कब मिल हैं॥ ३॥
मानक के उर बसो जगत गुरू, धन्य भाग जब मिल जासी।
कब मिल हैं॥ ४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जम्बू स्वामी की वैराग्य लावनी

पुत्र का वचन

जम्बू कयो मान लेरे जाया, मति लो निसंयम भार ।।टेक।।
राज गिरीनो वासीयो यो तो, जम्बू नाम कुमार ।
ऋषभदत्तनो दीकरो यो तो, बप्रामात उदार ।। जम्बू कयो० ।।१।।

सुधर्म स्वामी पधारिया ये तो, राजगिरी ने मांहि ।
कोणिकबंदनचालियो यो तो, जम्बू बंदन जाय ।।जम्बू कयो।।२।।

भगवत वाणी वेगरी ये तो, वर्षे अमृत धार ।
वाणी सुण वैरागियो याने, अथिर लख्यो संसार ।।जम्बू कयो।।३।।

घर आईने माता कने, जिये तो बन्दे बारम्बार ।
आज्ञा दे मोरी माता जी मैं तो लेस्युं, संजम भार ।
माता मोरी सांमरो ये जणणि,लेश्यांये संजमभार ।।जम्बू कयो।।४।।

माता का वचन पुत्र से

ज्यों अंधा ने लाकड़ी रे जम्बू, तू म्हारे प्राण अधार ।
तुझ बिना मारो कुल सूनोरे जाया,जरणीको राखा विचार।।जंबू।।५

रत्न जड़तरो पींजरो ये माता, सुबड़ो जाणे फंद ।
काम भोग संसार ना ये माता,ज्ञानी बताया झूंठा द्वंद ।।माता०।।६

ये चारों ही कामणीरे जाया, तुझ बिन बिलखी थाय ।
रमीयो उसियो तू नहींरे जम्बू,वदन रह्यो कुमलाय ।।जम्बू कयो।७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये चारों ही कामणीरे जाया, अपच्छ रहे उणयार।
परणीने केमपरि हरोरे जम्बू, किण विधि निसरे जमार॥जंबू०॥८

मतिहीणो कोई मानवी ये माता, मिथ्या मति भरिपूर।
रूपरमणी संगराचियो ये माता, पड़सी दुरगति भूर॥माता० ॥६

चंदा विनारे केसी चांदणीरे जम्बू,तारा बिना केसी रात।
कंथ बिना केसी कामणीरे जाया, झुरेगि वारतिवार ॥जम्बू०॥१०

दीप बिना मन्दिर सूनोरे जम्बू, पुत्र बिना परिवार।
वीण बिना केसी वेनड़ी जाया, ऐसी बारम्बार ॥जम्बू० ॥११
जग संसारी मैलो मिल्यो ये माता, मिलिया अनंतीवार।
तारण समर्थ कोई नहीं ये माता, पुत्र पिता परिवार ॥माता०॥१२

पाप पोषीने मोटा किधा ये जम्बू, इमकिम दो छिटकाय।
मात पिता ने मैला भूरतारे जाया, दया नहीं आवे लगार॥
जम्बूकयो ॥ १३ ॥

लख चौरासी जोनि में ये माता, जीव क्या छे अनेक।
सगलारी दया में तो पालस्यांये माता, अणचित माहिं विवेक॥
माता मोरी सामरे० ॥ १४

मोह मती करो मात जीये जरणी, मोह किये बंधे कर्म।
शोक संताप किण काम रोये माता, करो जिणजी से धर्म॥
माता मोरी सामरो ये० ॥ १५ ॥

ये चारों ही कामणी रे जाया, सुख विल से संसार।
जोबनवय पीछी पड़े रे जम्बू, पच्छे लीजो संजम भार॥
जम्बू कयो मान लेरे० ॥ १६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ये चारों ही कामणी रे जरणी, समझाऊं एक ही रात ।
जिणजीरो धर्म ने ओलखे माता, संयम ले मारी साथ ॥
माता मोरी सामरो ये ॥ १७ ॥

पंचम महाव्रत पालनो रे जाया, पाँचों ही मेरू समान ।
दोषच्छीयालीस टारनो रे जाया, लेणो शुद्ध आहार ॥
जम्बू कह्यो नहीं मानचो रे जाया, भले लीजो संयम भार ॥१८॥

पंच महाव्रत पालस्योंये माता, चलस्यों समिति अधार ।
दोषच्छीयालीस टारस्यूं ये माता, लेस्यूं शुद्ध अहार ॥
माता मोरी सामरो० ॥ १६

संजम मार्ग धणो होय लोरे जाया. करणो आत्म विहार ।
विन इच्छा से रेवणो रे जम्बू , तपनो उग्र विचार ॥
जम्बू कह्यो नहीं मानियो रे० ॥ २०

माता पिता ने तुम तारिया रे जम्बू ; तारीछे चारों ही नारि ।
सासु सुसर ने तारिया रे जाया, तारचाछे सब परिवार ॥
जम्बू कह्यो नहीं मानियो रे० ॥ २१ ॥

पांचसे ने सताइस जणारे जम्बू लीधोछे संजम भार ।
ग्यारे जीव मुक्त्यां ग्यारे स्वामि वर्त्याछे जय जय कार ॥
अम्बू आतम जाणियो रे भगवन्त,भला लीनो संजम भार ॥२२॥

उत्तम संयम मार्गछेरे जीया! जो पाले सो पार ।
राग द्वेष तज मोक्ष में वे तो त्रिल से सुख अपार ॥
जम्बू आत्म साधियो रे स्वामी, भलो लीधो संजम भार ॥२३॥

अनादि से संयम पालिया रे जिया हो गये भवदधि पार ।
पार्श्वदास विनती करे ये प्रभू मोहि उतारो पार ॥
जम्बू आत्मा स्थिर कियारे भगवन, भलो लीधो संयम भार ॥२४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* नमः सिद्धेभ्यः *

निर्ग्रन्थ दि० जैनाचार्य १०८ श्री सूर्यसागराय नमः

लावनी संग्रह

मंगलाचरण

सुध्यान में लवलीन हो जब घातिया चारों हने।
सर्वज्ञ बोध विरागता को पालिया तब आपने॥
उपदेश दे निज हित अनेकों भव्य निज सम कर लिये।
रवि ज्ञान किरण प्रकाश डालो वीर मेरे भी हिये॥

इष्ट प्रार्थना

भावना दिन रात मेरी, सब सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर घर-बार हो। टेक

धर्म का परचार हो अरु देश का उद्धार हो।
और ये बिगड़ा हुआ, भारत चमन गुलजार हो॥ १॥

ज्ञान के अभ्यास से जीवों का पूर्ण विकाश हो।
धर्म के परचार से, हिंसा का जग से ह्रास हो॥ २॥

शान्ति अरु आनन्द का, हर एक घरमें वास हो।
वीरवाणी पर सभी, संसार का विश्वास हो॥ ३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रोग अरु भय शोक होवें, दूर सब परमात्मा।
कर सकें कल्याण ज्योति, सब जगतकी आत्मा ॥ ४ ॥

आत्म व्यवस्था

मैं चेतन चिद्रूप अनूप,
दर्शक दृश्य चिदानन्दरूप ॥ टेक ॥

नित्यनिगोद माहिंते आय, स्थावर-देह धरी पर्याय।
निकसि भयो त्रस को अवतार, दो-ते-चतु-पंचेन्द्रियसार ॥
सैनी हो पंचेन्द्रिय थान, गुरू उपदेश सुन्यो निज कान।
आत्म सुदृष्टि पड़ी सुखरूप, समकितरूप लख्योनिजरूप ॥१॥
ग्यारह प्रकृतिका किया विनाश, देशव्रतमें किया निवास।
सयम घाती क्रिया विलीन, सप्तमगुण थानक में लीन ॥
षष्ठम में उतरे तव आय, पन्द्रह विधि परमाद लहाय।
पहुंचूं सप्तम अतिशय रूप, श्रेणी चढ़ ह्वै ध्यान स्वरूप ॥२
सात तीन छत्तीस खिपाय, क्षपक श्रेणीतें लोभ विलाय।
वारम में पहुंचूं निजरांम, भिन्न मुहूर्त करूं विश्राम ॥
फिर सोलह का करूं विनाश, तेरम में कैवल्य प्रकाश।
होऊं सहज निरवधि गुणभूप, दर्शन ज्ञान शक्ति सुखरूप ॥३
सर्वयोग का करूं प्रकाश, विनयोगी का ध्यान प्रकाश।
देउं बहत्तर प्रकृति खिपाहि, चवराशी लख गुण प्रगटाहि॥
तेजसकारमाण छिपतेहि, अठदश सहस शील लख लेहि।
सत्‌चिद आनन्द सौख्यस्वरूप, सदारहूं निजशुद्ध अनूप ॥४॥
क्षायिक-चारित्र नाम लहाय, धर्मध्य-सह गती कराय।
मैं सिद्धालय पहुंचा जाय, अष्टनाश अष्ट सत प्रगटाय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनन्तकाल तक थिरता लहूं, उत्पाद व्यय द्रव्यमय रहूँ।
ये ही है निज आत्मस्वरूप, जिन साधा सो भये चिद्रूप ॥५॥

आत्म कीर्तन

हूँ स्वतन्त्र निश्चल निष्काम।
ज्ञाता दृष्टा आतम राम ॥ टेक ॥

मैं वह हूँ जो हैं भगवान, जो मैं हूं वह हैं भगवान।
अन्तर यही ऊपरी जान, वे विराग यहँ राग वितान ॥१॥
मम स्वरूप है सिद्ध समान, अमित शक्ति सुखज्ञान निधान।
किन्तु आशा-वश खोया ज्ञान, बना भिखारी निपट अजान ॥२॥
सुखदुख दाता कोई न आन, मोह राग ही दुख की खान।
निजको निज परको पर जान, फिर दुखका नहिं लेश निदान ॥३॥
जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम, विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम।
राग त्याग पहुँचू निज धाम, आकुलताका फिर क्या काम ॥४॥
होता स्वयं जगत परिणाम, मैं जग का करता क्या काम।
दूर हटी पर कृत परिणाम, ज्ञायक भाव लखूं अभिराम ॥५॥

वीर प्रभु की प्रार्थना

ऐसा होवे ज्ञान, वीरजिन ऐसा होवे ज्ञान।

हृदय शुद्ध हो बुद्धि विमल हो, निर्मल होवे ज्ञान।
द्वेष क्लेश भय लोभ क्षोभ नशि, जाय कपट अभिमान। वीर०
रंक राव बलहीन बली अरि, मित्र निधन धनवान।
भेदभाव टुक रहे न समझूं, सब को एक समान ॥ वीर०
रोगी शोकी दुखित भुकित को, देख न उपजे ग्लान।
करूं दूर दुख मै उन सबका, हर्ष हृदय में ठान ॥ वीर०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सेवाधर्म होय व्रत मेरा, ठान प्रेम रस दान।
करूं विश्व भर की मैं सेवा, कर न्योछावर प्राण ॥ वीर०

दूर होय अज्ञान अन्धेरा, उदय देख चितभान।
ज्योति प्रेम जग चहुं दिश फैले, धरें आप का ध्यान ॥ वीर।४॥

सम्बोधन

सदा संतोष कर प्राणी, अगर सुख से रहा चाहे।
घटा दे मन की तृष्णा को, अगर अपना भला चाहे।
आग में जिस कदर ईन्धन, पड़ेगा ज्योति ऊंची हो।
वढ़ा मत लोभ की तृष्णा, अगर दुख से बचा चाहे ॥१॥
वही धनवान है जग में, लोभ जिसके नहीं मन में।
वह निर्धन रंक होता है, जो परधन को हरा चाहे ॥२॥
दुखी रहते हैं वह निशदिन, जो आरत ध्यान करते हैं।
न कर लालच अगर आजाद, रहने का मजा चाहे ॥३॥
विना माँगे मिले मोती, 'न्यायमत' देख दुनियां में।
भीख माँगे नहीं मिलती, अगर कोई गहा चाहे ॥४॥

भजन

जिन्हों के दर्श करने को, भव्य प्राणी तरसते थे।
हरषते नाम सुन सुनकर यही वे सूर्यसागर हैं ॥ टेक ॥

जगाया जैन जाती को, बताया सत्य शिव मारग।
मिटाई फूट आपस की, यही वे सूर्यसागर हैं ॥ १ ॥

नहीं है प्रेम भक्तों से, नहीं है द्वेष द्रोही से।
नजर है एकसी सब पै यही वे सूर्यसागर हैं ॥ २ ॥

सौम्य मुस्कान सूरत है, सरल मृदु बैन वोले हैं।
कपट अभिमान नहिं जिनके, यही वे सूर्यसागर हैं ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूर्य की ज्योति के आगे, छिपाते दीप को अपने।
दबी है चन्द्र की आभा, यही वे सूर्यसागर हैं ॥ ४ ॥

नहीं अटवी भयानक है, नहीं मरघट डरावन है।
नहीं अहि व्याघ्र की शंका, यही वे सूर्यसागर हैं ॥५॥

अनेकों ही अजैनों को, लगाया जैन मारग में।
दिपाई जैन मुनि मुद्रा, यही वे सूर्यसागर हैं ॥ ६ ॥

सहे हिम धूप की वाधा, न डर तूफान वर्षा का।
अकंपन आत्मा जिनकी, यही वे सूर्यसागर हैं ॥ ७ ॥

श्रेष्ठ आदर्श साधू है, अचल चारित्र है जिनका।
आर्ष मार्गानुगामी हैं, यही वे सूर्यसागर हैं ॥ ८ ॥

परीक्षा की कसौटी पर, मुनीपन को परख करके।
भौम ने सिर नमाया है, यही वे सूर्यसागर हैं ॥ ९ ॥

भजन

श्री सूर्य सिन्ध्वाचार्य की सब मिलकर जय जय बोलो।
सब मिलकर जय जय बोलो, महिमा गाकर अघ धोलो ॥टेक॥

वे पंच महाव्रत पाले, वे पांचों समिति सम्हाले।
वे राग द्वेष को टाले, सब मिलकर० ॥ १ ॥

वे तीन रतन के धारी. दृग ज्ञान चरण अधिकारी।
वे शान्ति मूर्ति अधिकारी, सब मिलकर० ॥ २ ॥

पंचेंद्रिय मन वश कीने, वे समता रस में भीने।
जप तप संयम चित दीने, सब मिलकर० ॥ ३ ॥

मद क्रोध लोभ छल त्यागे, दस लक्षण में अनुरागे।
वे सदा आत्म रस पागे, सब मिलकर० ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाईस परीषह सहते, द्वादश तप में नित बहते ।
निज निजानन्द मग्न रहते, सब मिलकर० ॥ ५ ॥

पन पाप विषय दुखकारी । त्यागो कषाय नर नारी ।
यह शिक्षा देते भारी ॥ सब मिलकर ॥ ६ ॥

सब जीवन निज सम जाने, सुख दुख एक से माने ।
आतम अनुभव पहिचाने, सबमिलकर० ॥ ७ ॥

नानू अब शरणे आया, इन कर्मन खूब सताया ।
तुम चरण कमल सिर नाया, सबमिलकर० ॥ ८ ॥

भजन

जय जय जय त्राता जैन सन्त । धारक सद्गुण अविचल अनन्त ॥

सब मानवता के गुण महान, तुमरे रग रग में विद्यमान ।
नहिं राग द्वेष परिग्रिह निशान सम्यक दृग ज्ञान चरित्रवन्त ॥२॥

तुम जन्म जात शिशु के समान, नहि रंच मात्र परिग्रह निदान ।
नहिं काम क्रोध छल लोभ मान, निन्दक पूजक समता धरंत ॥३॥

बालकवत निर्भय निर्विकार, होके निशंक करते बिहार ।
सहते सब परिषह के प्रहार, दुष्कर्मों से करते भिडन्त ॥४॥

अज्ञान तिमिर का कर विनाश, करदेत परम पथ का प्रकाश ।
अध्यात्मवाद का कर विकाश, दिनकर ज्यों दुनियां में दिपंत ॥५॥

हित मित प्रिय वैन सुधासमान, सुन हित अनहित को होत ज्ञान ।
जन बैर विरोध मिटे महान, जग से हिंसा का होत अन्त ॥६॥

जग दुख मेटन तत्पर नितान्त, तुमरे सन्मुखनहीं जात पान्त ।
संतप्त हृदय को करत शान्त, ज्यों मरुधर में वर्षा बसन्त ॥७॥

अब भौमराज तुम पद प्रसाद, समझा है सच्चा साम्यवाद ।
जे है गुरु लघु पन का नहिं विचार, तुम पामर को करते महन्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चतुर्गति के दुखों की लावनी

पंच परम गुरु परम इष्ट जग, नमस्कार कर बारम्बार।
दुख संक्षेप कहूं चहुँगति के, कहत कभी नहिं पावै पार ॥टेक॥

लिखूं वेदना प्रथम नरक की, गया नर्क दुख सहे अनंत।
स्पर्श भूमि जहाँ की दुख हो, बिच्छू सहस डसें विषवंत॥

असुर डरावने रूप भयानक, लाल आंख कर लम्बे दन्त।
चीरैं फाड़ै उदर विदारे, काट शीश दे दुःख अत्यन्त॥

शैर

रक्त की नदियाँ बहैं अरु मांस की जहां कीच है,
है महाँ दुर्गंध मय हर वस्तु अपावन नीच है।
हैं असि वन वृक्ष सेमल आदि जिनके पत्र फल।
चीर कर तन खण्ड करले एक पल के बीच में॥

चाल दौड़

कभी पकड़ असुर ने दिया वृक्ष पर लटका।
कभी दिया नदी में डाल शिखर से पटका॥

कभी सिंह व्याघ्र वन शीश तोड़ दिया झटका।
कभी शूली ऊपर चढ़ा खेल किया नटका॥

जिस नर ने भोगा यहाँ पराई वाला,
कर लाल खम्भ गल लगा दिया बेहाला॥
जिस नर ने मधु मदिरा का पिया है प्याला,
तांबे को गाल मुख फाड़ बाँस से डाला॥

दोहा—चैन नहीं पल एक जहाँ शब्द मार ही मार।
लड़ैं परस्पर नारकी हों खुश असुरकुमार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौ०—खण्ड खण्ड तन के कर डाले, डाल कढाई में तन गाले।
तन परमाणु हो सब न्यारा, फिर मिल जाय मिलै ज्यों पारा॥

दोहा—शीत उष्ण बाधा अती, तन पर सही न जाय।
भूख प्यास तिहुँ लोक की, अन्नरुजल को खाय॥

मिले न जल की बूंद एक कण अन्न की तब हो दुःख अपार।
दुख संक्षेप कहूं चहुं गति के, कहत कभी नहिं पावै पार॥१॥

सवैया—पराधीन पर्याय पशू की याही कारण सहे महा।
क्षुधा तृषा से दुखी रोग तन शरदी गर्मी त्रास लहा॥
बांध मार अरु छेदन भेदन, महा कष्ट दिन रात सहा।
विषय भोग की चाह दाह में जलता पापी सदा रहा॥

शैर—पीठ गल मस्तक गला, गल गल रहा सारा बदन।
है दुखी चलने से फिर भी कष्ट देते दुष्ट जन॥
भार लादे पीठ पर डंडों की मारे मार को।
काटते सब तन को दुष्टी, चोबते हैं आर को॥

चाल दौड़-कभी सिंह व्याघ्र बलवान निबल को खावै।
किसी समय आप दुष्टों से मारा जावै॥
तोता अरु मैना पिंजरे में दुख पावै।
बंदर के गल में डोरा डाल नचावै॥

दोहा—अलि अँकुज पर प्राण दे दीपक जले पतंग।
चकवा चकवी दुख सहैं प्रीतम बिछुड़त संग॥

चौ०—मीन जाल फँस कर दुख पावै,रसना के वस प्राण गमावै।
जन्म मरण भोगे दुख भारी, वर्णन कथा होत नहिं सारी॥

दोहा—पशु गति के दुख हैं अती, कहत न आवे अन्त।
जो भुगते जाने सही, या जाने भगवन्त॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहे महां दुख पशु गति माहिं तन लट कीट पीपल्याधारो ॥
दुख संक्षेप कहूं चहु गति के, कहत कभी नहिं पावे पार।
देवगति के अब दुख वरणूं, सुनो भविक जन मन में धार
ऊँच नीच जहाँ पदवी पाई, निज निज कर्मन के अनुसार॥
पर संपति को देख निरन्तर, सहे त्रास कर रुदन अपार।
देख देख सुख भोग पराये, करता मन में सोच विचार॥

शैर–त्रास सहता है अती औरों के लख सामान को।
जैसे निर्धन अब दुखी हो देख कर धनवान को॥
ऐसे सुन्दर भोग की वस्तु नहीं मुझको मिली।
अज्ञानी को पुण्य पाप का भेद कछु सूझे नहीं॥

दौड़–मैं हाय रूप की खानि त्रिया नहिं पाई।
सुख भोग वस्तु नहिं मिली, मुझे मन चाही॥
हा हा यह करे आनन्द देव सुखदाई।
जल थल में करते केल सदा हरषाई॥

दोहा–रहे काल के मास छह, तब सूखी गल माल।
यह कारण लख देव तन, रुदन करे वेहाल॥

चौ०–हाय गया यह काल हमारा, छूटै यह सुख संपत सारा।
रूप वंत रम्भादिक नारी, हाय हाय छूटैगी सारी॥

दोहा–ज्ञान वान सुर यह कहै, रुदन करो गत मीत।
जो जन्मे निश्चय मरे, यही सबन की रीत॥

एक न समझी बात ज्ञान की रुदन किया किलकारी मार।
दुःख संक्षेप कहूं चहु गति के कहत कभी नहिं पावे पार॥३॥
पुण्य उदय मानुष गति पाई रहा मास नव गर्भ मंझार।
जन्मत पाई तीव्र वेदना रुदन किया किलकारी मार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहा बाल पन ज्ञान न जाना, हिंसा करी हर्ष चित धार।
तरुणाई में भोग सुहाये, मनको भाई चंचल नार॥

शैर–वृद्धापन का कोई दुखिया कोई रोगी गात का।
पुत्र बिना कोई दुखी दुखिया है कोई भ्रात का॥
मर गई संतान या परवार का कोई मनुष्य।
है दुखी नारी का कोई मात का अरु तात का॥

चाल दौड़–कोई बिना भोग रहा तरस पुरुष अज्ञाना।
कोई प्रेम प्यार में फँस कर हुआ दीवाना॥
कोई विप्र वैश्य कोई क्षत्री शुद्र निमाना।
बल हीन कोई बलवान अन्ध कोई काना॥
कोई लंगड़ा लूला कुष्ट गलित तन पाया।
कोई अंग हीन गुण हीन न घर में माया॥

दोहा–एक चले चढ़ पालकी, एक उठावन हार।
नर गति में सुख दुख भरे, निज करमन अनुसार॥

चौ०–कोई विलखे इष्ट वियोगी, कोई रोवे अशुभ संयोगी।
कोई रोवे बिछुड़त मिता, लगा किसो को मृत्यु की चिंता॥

दो०–मानुष गति के त्रास का हो नहिं सकै बयान।
सत गुरु जिन आगम कहा, सो देखो बुधिवान॥

ज्योतिस्वरूप रूप लख अपनाकर मानुष गति को अत्र सार।
दुख संक्षेप कहूँ चहुं गति के, कहत कभी नहिं पावे पार॥४॥

(२) प्रबल उदयागत की लावनी॥

जब कर्म महाबलवान उदय आगत है।
ताके मेटन को ना किसी की ताकत है॥ टेक॥
जब तीव्र उदय रस आकर विधि देता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब एक न चले उपाय करे जेता है ॥
जब तीव्र पवन में लहर उदधि लेता है ।
तब कौन कुशल हो जहाज को खोता है ॥
मुंह जोरी करना इस जगह हिमाकत है ॥ ताकेमेटन ॥ १ ॥

हरिराम कर्म वश फिरे रंक वन वन में ।
हिम धूप पवन को सहते बाधा तन में ।
पर गृह करते अहार सलज्जित मन में ।
अथवा वन फल करते आहार विपन में ।
ये बड़ों बड़ों के सतावती आफत है ॥ ताकेमेटन ॥ २ ॥

रावण सा धर्मी विधिवश सीता हरली ।
धन प्राण गमाये जग बदनामी करली ।
सीता भी कर्म वश विपता पूरी भरली ।
पति से छूटी दो बार विरह हो जरली ।
विधि उदयका धक्का बड़ों को भी लागत है ॥ ताके ॥ ३ ॥

बाईस वर्ष अंजना तजी भरतारे ।
फिर गर्भवती सासु ने निकाली क्या रे ।
मात पिता भी नहि दीनो आवन द्वारे ।
वन वन भटकी तन जाया पुत्र गुफारे ।
को रोक सके जो कर्मों की सरारत है ॥ ताके ॥ ४ ॥

द्रोपदी सती कहलाई पंच भरतारी ।
दुःशासन ने गहि चोटी ताहि निकारी ।
विधि योग पाँडव हारे पृथ्वी सारी ।
फल कंद खात वन भये वक्कलाधारी ।
राजों को यह कर्म भिक्षा मंगवावत है ॥ ताके० ॥५॥

कृष्ण के जन्म में काहु न मंगल गाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर पले नीच गृह वस गोपाल कहाये।
विधि योग द्वारका जरी विपन को धाये।
भील के वेष भ्राता कर प्रान गमाये।
कहिं जाउ पिछाडी कर्म का दल जावत है।। ताके० ।।६।।

श्रीपाल मदनतन कुष्टि व्याधि तिन भोगी।
कर्मोदय से भये कामदेव से रोगी।
कुम्हाराधा व्याहि माघनन्द से योगी।
जो सदा रहे तप संयम में उद्योगी।
कर्मोदय आगे सब की बुधि भागत है।। ताके मेटन।। ७।।

जो सुधी कर्म के उदय से बचना चाहो।
तो श्रवण धारि गुरु शिक्षा ताहि निवाहो।
सम्यक रत्नत्रय धर्म पंथ अवगाहो।
शुचि ध्यान धनंजयसे विधि तरुको दाहो।
कहे नाथूराम जीयो शिव सुख पावत है।
ताके मेटन को किसी की ना ताकत है।। ८।।

३ लावनी

जो जग में जन्मा उसको मरना होगा।
वश काल वली के अवश्य परना होगा।। टेक।।
जो सत्गुरु सीख पर ध्यान नहिं लावेगा।
तो नर भव रत्न समान वृथा जावेगा।
जो सुकृत कर अरु अघ से पछतावेगा।
तो वेशक शक्र समान विभव पावेगा।
विनधर्म भवोदधि कभी न तिरना होगा।। वशकाल।।१।।

जो विषय भोग में तू मन ललचावेगा।
तो भव समुद्र में पड़ गोते खावेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थावर तन लह जड़वत हो जावेगा।
यह ज्ञान गिरह का सो भी खो जावेगा।
को दुख निगोद के कहे जो भरना होगा ॥ वशकाल ॥ २ ॥
जब दल कृतान्त का तुझको आ दावेगा।
तब कौन सहायक जाके तट धावेगा।
तब व्याकुल हो शिर धुन धुन पछतावेगा।
जो करे पाप सो तब रो रो गावेगा।
धन कुटुम्ब छोड़ पावक में जरना होगा ॥ वश ॥ ३ ॥
तू करते में पाप अभी विहसावेगा।
फल भोगत में हा हा कर मुंहबावेगा।
फिर जने जने के पद पद सिर नावेगा।
पापोदयसे नहीं किसी के मन भावेगा।
कहें नाथूराम तब विचार करना होगा ॥ वशकाल ॥ ४ ॥

४ गुरु की लावनी

कर्म रेख पर मेख मारकर हाथ लिये तदबीर फिरे।
पर स्वारथ के काज श्री मुनिराज बने बनवीर फिरे ॥टेक॥
अन्तर बाहर त्याग परिग्रह निर्मद नग्न शरीर फिरे।
काम शत्रु को जीत बालवत निर्विकार निर्चीर फिरे।
तीन काल दुद्धर तप तपते एकाकी तज भीर फिरे।
निरालम्ब निरभय केहरि सम निवसत गिरवन धीर फिरे
तारण तरण हरण अघजन के श्री गुरु गुण गम्भीर फिरे।
परस्वारथ के काज श्री मुनिराज बने बनवीर फिरे ॥ १ ॥
ग्रीषम मेरु शिखर तप तपते प्यास सहित बिन नीर फिरे।
वर्षा तरु तल रहत सहित डंसादिक की तन पीर सहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शीतकाल में निवसत सर सरिता सागर के वो तीर फिरे ॥
द्वाविंशतिनित सहत परीषह स्वप्ने ना दिलगीर करे ॥ परस्वा०॥२।

कर्म महारिपु जियके जग में तिन वश जीव अधीर फिरे।
अट्ठाईश मूल गुण पालत दोष रहित सुख सीर फिरे ॥
तड़ फड़ाय पर छूटत नाहीं बंधे मोह जंजीर फिरे।
ऐसे अरिके नाशन को गुरु लिये ज्ञान धनु तीर फिरे ॥
ध्यान खड्ग से नाशत अरि को राग रहित वे पीर फिरे।
जाति जीव निज सेन के रक्षक करुणा सिंधु गहीर फिरे ॥ पर॥३।

संसारी जीव राग द्वेष वश मुख्य गिनत तगदीर फिरे।
पर गुरु कर्म करत क्षय क्षण क्षण ज्यों घन हनत समीर फिरे।
विषय भोग की तजी वासना बने जगत के पीर फिरे।
नाथूराम जिन भक्त करत गुरु भव सागर के तीर फिरे। पर ४॥

॥ ५ कृष्ण जी की लावनी ॥

देखो दुष्टता दुष्टों की अपराध बड़ों के सिर धरते।
काम क्रोध मद मोह लोभ वश आय निंद्य कार्य करते ॥ टेक ॥

अतिकामी अरु साधु कहावें कुशील सेवन नित्य करें।
हिंसा चोरी झूठ बोलना आदि पाप से नाहिं डरें।
अपने दोष छिपाने को मिथ्या उपाय रच ग्रन्थ भरे।
वेद शास्त्र के शब्दारथ के बदलन में कुटिलाई धरे।
तिनका वर्णन सुनो कान दे जैसी शाखि वे ठग करते। काम ॥१

अति उत्तम यदुवंश तहाँ श्री कृष्ण हुये हरिपद धारी।
नीतिवान विद्वान तिन्हें कहते पर तियरत व्यभिचारी।
कहें गोपिका रमी कृष्ण ने जो था ग्वालों की नारी।
राधा कुब्जा आदि शतक सोलह यह पाप घटे भारी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसी तो निन्दा करते अरु भारी भक्त बने फिरते।
काम क्रोध मद मोह लोभ वश आय निद्य कार्य करते ॥ २ ॥

एक समय कहे नग्न गोपिका करती थी जल में स्नान।
तट पर चीर धरे सब के सो लेके कदम पर चढ़ गया कान।
तब गोपी लज्जित होके कर जोड़ चीर मांगे पहिचान।
पर हरि ने ना दिये कहा तन नग्न दिखाओ सन्मुख आन।
जब देखी सब नग्न कहे तब डाले चीर हरि तरु परते।
काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निद्य करते ॥ ३ ॥

कहें कृष्ण मनिहार नार बन व्रज बनितों से कीना छल।
लूट चोर माखन दधि खा हस कर तिनके कुच देते मल।
इत्यादिक अति दुराचार कुक्रिया कृष्ण की बताते खल।
जो जग में अत्यन्त निद्यं सो कहें करी हरि माया बल।
भक्त बने अरु निन्दा करते महा पाप से नहिं डरते ॥ काम ॥४॥

मेरे कहे को झूठा जानो तो देखो भागवत में पढ़कर।
पढ़े न हो तो सुनों और से देख लिखा इससे बढ़कर।
झूठा पक्ष गहो मत हठ से मूढ़ विलाप करे लड़कर।
देखो को निन्दा करता सो हृदय विचार करो दृढ़ कर।
नाक काट पोंछे दुशाल से वही मसल शठ आचरते। काम ॥५॥

बाल पने में कृष्ण विपत्ति वश रहे नन्द वसुधा के धाम।
तहां अवश तन धेनु चराई अन्य बुरा नहिं कीना काम।
युद्ध किया बलभद्र सिखाई छिपर के जा गोकुल ग्राम।
कंस मार जा वसे द्वारका यदुवंशी ले संग तमाम।
नीति राज्य किया श्रीकृष्ण ने झूठे दोष धरे खतरे। काम० ॥६ ॥

पूज्य पुरुष पाँडव तिनकी उत्पत्ति कहें औरों मे खल।
कहें पंच भर्तारी द्रोपदी द्रुपद सुता जो सती विमल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हनूमान को बंदर कहते जो विद्याधर नृप अति बल।
यहाँ पुरुष के पूंछ लगाते और भक्त बनते निश्चल।
इससे निन्दा अधिक और क्या पशु बनाय दिये नरते। काम७॥
कर्ण को कर्णज कहें कुशकी उत्पत्ति कहें कुश दूबाकर।
मच्छ गंधि का मच्छी से गांगेव गंगाजल से हुए नर।
निर्वक झूठी युक्ति मिलावे जैसे नाम सुनते अक्सर।
तैसे ही उत्पत्ति तिन्हों की कहें पेड राये विन जर।
जिन वच सूर्य समान सुनेगा भर्म तिमिर को जो हरते।
काम क्रोध मद मोह लोभ ॥ ८ ॥

लीला नाम खेल का है सो खेल करें अज्ञानी नर।
पूज्य पुरुष ये खेल न करते नर्क वास तिनके लक्षण।
अपने ढोंग पुजाने को यह उन दुष्टों ने किया जतन।
भक्त बने अरु कुकरम करते सदा पाप में रहे मगन।
झूठे ग्रन्थ कुटिलता से रच निज स्वारथ को आदरते। काम ६।
कृष्णादिक सत्पुरुषों का उत्तम कुल जिन मत में गाया।
धर्म नीति युत राज्य किया तिन नहीं की किंचित माया।
अपने ढोंग पुजाने को यह फंद खलों ने बनाया।
जिन ग्रह में मत जाओ कभी भोरे जीवों को बहकाया।
नाथूराम जिन भक्त वहाँ दुष्टों के फंद सब लख परते।
काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ १०॥

॥ ६ भगवान से प्रार्थना ॥

हे प्रभु करुणा सिन्धु हमारी दूर करो भव पीर सनम।
आशक की आशा पूरो सब माफ करो तकसीर सनम। टेक॥
यह संसार अपार नीर निधि अति दारुण गम्भीर सनम।
गोता खात अनादि काल से मिला न अबतक तीर सनम।
सुना नाम शुभ जान तुम्हारा तारण भवो दधि तीर सनम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आशावान भया तव तव से कुछ आया मनको धीर सनम।
तुमसा तारक पाय मिटी अब निश्चय कर भव भीर सनम।
आशक की आशा पूरो ॥ १ ॥

नित्य निगोद बसा अनादि तहां थावर पाय शरीर सनम।
मरा श्वास में बार अठारा बंधा कम जंजीर सनम।
थावर भू जल तेज बनस्पति भाषी और समीर सनम।
ऐसे भ्रमत लई त्रस काया कंचन यथा फकीर सनम।
मिला न तो भी पार भवोदधि ऐसाअतट गहीर सनम। आशक२

फिर विकलत्रय अरु पंचेन्द्री मन विन रहा अधीर सनम।
फिर तिरयंच पंचेन्द्री सेनी भयो विवश तकसीर सनम।
वध बंधन दुख सहा कहा वहु भार रहा दिलगीर सनम।
पुनि दुर्गति दुख सहा पंच विधि जहां न कोई सीर सनम।
ताडन मारन आदि जहां न वचने की तदबीर सनम॥ आशक ३॥

नर तन पाय सुकृत कुछ कर सुर भयो अमर वलवीर सनम।
फिर सम्यक्त विना भटको न भवोदधि लयो अखीर सनम।
अब शुभ योग मिला उत्तम कुल अरु तुम त्रिभुवन पीर सनम।
शिक्षा सावन से कीजै शुचि अनतस आतम चीर सनम।
नाथूराम जिन भक्त भये अब निजधन पाय अमीर सनम।
आशक की आशा पूरो ॥ ४ ॥

॥ ७ लावनी ॥

सूम लक्ष्मी दोनों का झगड़ा सुनियो पंचो चित्त लगाय।
कहती लक्ष्मी सूमसे ना खाई ना खर्ची जाय।
कहता सूमतू सुनिये लक्ष्मी तुझे कभी नहिं जाने दूं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खाड़ा खोदकर रक्खूं तुझ को नहिं खरचूं नहिं खाने दूं।
जोगी जंगम आवे माँगते नहिं मुट्ठी भर दाने दूं।
ऐसी जुगत सों रक्खूं तुझ को तू भी जाने रखी छिपाय।
सुनो सामले सूम से ना खाई न खरची जाय॥ ११॥

कहती लक्ष्मी सुनो सूम जी तुम पापी मूरख नादान।
नागिन बनके जाय गिरूं अरु नाले नाले तिन के मान।
जो कोइ प्रभु की भक्ती करे अरु साधुजन को देवे दान।
वहां जाऊंगी नित्य जहाँ पर बचते हैंगे शास्त्र पुराण।
तू पापी चंडाल तेरे से कछु नहिं धर्म दिवाय। सुनो २॥

कहता सूम तू सुनले लक्ष्मी तूं पापिन है हत्यारी।
दौलत खातिर बहिंन ने मारी भाई को तब करियारी।
भाई भाई में शीश कटावे बेटा बाप से लड़ता री॥
तेरे वास्ते करत विचारे केई करे चर वादारी।
किसे हंसावे किसे रुलावे किसी के शीश दिये कटवाय। सुनो०॥३

कहती लक्ष्मी सुनो सूम जी तुमको औंधे लटकावे।
बन आवे तो करो पुण्य फिर क्यों नाहक गोता खावे।
कोडा खेंच कर जम फटकारे वहां जो तुमको ले जावे।
भाई बन्धु अरु कुटुम कबोला कोई नहीं आडा आवै।
धर्म मोक्ष का पंथ धर्म से तिर गये साधु अरु मुनिराय॥सुनो०॥४

॥ ८ लावनी ॥

तू जिन मारग की बात हिया बिच धर रे।
मत कर झूठा पाखण्ड पाप से डर रे॥टेक॥
तू योनि चौरासि माहिं भटक नर भव पायो।
कोई पुण्य योग ते उत्तम कुल में आयो॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तू करे अलीनी लीन कुमति में छायो ।
नहिं चले धर्म की राह करे मन चायो ॥
तू धन यौवन में अंध हुआ मत फिररे ।
तू जिन मारग की बात हिया विच धर रे ॥ १ ॥
तू करे अकेलो पाप खाय सब सारा ।
मत जाने सगाती साथ कोई नहिं थारा ॥
तू अपने सिर पर बांध पाप का भारा ।
ये स्वारथ के सब लोग रहेगा न्यारा ॥
तू इनके मारग लाग नरक मत पररे ।
तू जिन मारग की बात हिया विच धररे ॥२॥
तू बालपनो हंस खोयो ख्याल के माहीं ।
तेरी भई जवानी मगर पचीसी भाई ।
जब लई जरा फिर घेर सुफेदी आई ।
तेरी पांचों इन्द्री थकी हुई दुखदाई ।
तू समझे नाहिं भाई अज्ञानी नर रे ।
तू जिन मारग की बात हिया विच धररे ॥३॥
तू श्री जिनेन्द्र का नाम पलक नहिं लीना ।
फिर शिव मारग की राह छोड़ ते दीना ।
तू कुगुरु कुदेव की सेव करी बहु हीना ।
तेरो धर्म तना को काम और ठग लीना ।
तू भव सागर में डूब मती अब धर रे ।
तू जिन मारग की बात हिया विच धाररे ॥४॥
सब कहें खुशालीचन्द अध्यातम गाई ।
यो श्री जिनेश को नाम सदा सुखदाई ।
यो कर्म काट ले जाय मुक्ति के माहीं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरो जनम मरण मिट जाय समझ मन भाई।
इन मुक्ति समान और नहीं थिररे।
तू जिन मारग की बात हिया विच धररे ॥५॥

॥ ६ लावनी जिनेश्वरदास ॥

तुम तजो विषय सुख आस समझ कर भाई।
अब कर जिनवर की भक्ति मनुष्य गति पाई। टेक॥
चहुँ गति में मानुष जन्म महा मणि जानो।
सो बहु विधि दुख को मूल हेतु पहिचानो।
जननी उर कीनों वास त्रास अधिकानो।
बालक पन रोग संयोग देह दुख दानों।
अति पुण्य उदय भर पूर भई तरुनाई।
अब कर जिनवर की भक्ति मनुष्य गति पाई ॥१॥

किनहू के कामिन नाहिं लहे दुख भारी।
कोई सतसंगति विन दुखी महा अविचारी।
सुत आदिक इष्ट वियोग भयो अनिवारी।
जग में विन सम्पति विकल सदा नर नारी।
विधि उदय मिले सब जोग तदपि थिर नाहीं।
अब कर जिनवर की भक्ति मनुष्य गति पाई ॥२॥

गज सपरस गिरगर्त माहिं दुख पावे।
रसना बस मीन सुदीन विपति मग धावे।
अलि पंकज गंध पतँग दीप लखि आवे।
मृग सुनत शिकारी राग मरण दुख पावे।
इस इन्द्रिय जनित निकार भाव दुख दाई।
अब कर जिनवर की भक्ति मनुष्य गति पाई ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो भववन में सुख होय सुनो बुधि धारी।
तो तीर्थंकर क्यों तजे चक्र बलधारी।
इम सब सँसार असार जान हितकारी।
नित धरो जिनेश्वर धर्म सुरुचि करतारी।
विषसम विषयन की चाह नर्क दुखदाई।
अब कर जिनवर की भक्ति मनुष्य गति पाई ॥४॥

॥ १० लावनी ॥

यह संसार असार सर्वथा क्या इस में ललचाया है।
निज हित करले चतुर चिंता मणि नर भव पाया है ॥टेक॥
काल अनन्त निगोद रह्यो दुख सह्यो रह्योनहिं जाई है।
एक स्वास में अठदश कीने जन्म मरण दुखदाई है।
भूजल पवन तेज तर थावर विकलत्रय गति पाई है।
सँज्ञी और असंज्ञी पशु गति पँचेन्द्री अधिकाई है।

॥ रेखता ॥

जे जीव जाति विरोध धारे मरे मारे धाय के।
बलवन्त निर्मल जीव को भक्षण करे उमगाय के।
मृग मीन कीर कपोत को नित रहे अरि की त्रास है।
जहां मात भक्षण करे सुत को, और की क्या बात है।
भूख प्यास की त्रास विषे अति भार सहित मगधाया है।
निज हित० ॥१॥

सिंह सूर पशु क्रूर कर्म कर नर्क माहिं फिर परते हैं।
छेदन भेदन बहुत विधिन से दुख दावानल जरते हैं।
तहां से निकस नीच निर्धन कुल माहिं जन्म बहु धरते हैं।
असन बसन के लाभ बिना अरु बहुत भांति दुख भरते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ रेखता ॥

कुछ मँद रूप कषाय उर हिंसादि पाप निवारके।
सुरवाण व्यंतर ज्योतिषि दिवि लोक में तिथि धार के।
विषयाभिलाषी राग रंजित रमे रमणीगन विषे।
तिथि अवधि चिन्ह निहार के अति दुखित होते मन विषै।
विषय चाह की दाह दहो सुरगति में भी न अघाया है।
निज हित करले चतुर चिंता मणि नर भव पाया है। ॥२॥

दुश्मन मित्र मित्र दुश्मन धनवान दरिद्री रंक फिरे।
रंक दरिद्री नृपति हो गज आरूढ़ निशंक फिरे।
पुत्र मित्र परिवार नारि निज स्वारथ कारण संग करे।
सुख में साथी दुख में पति पत्नी नहिं साथ करे।

॥ रेखता ॥

परिवार पथिक मिलाप सम तन धन अथिर गुरु भाष है।
चार दिन की चांदनी आखिर अन्धेरा पाख है।
धर ध्यान श्री अरहंत का सुख की यदि अभिलाष है।
निश्चय मिले सुख श्रेय जगमें निज वचन का साख है।
मत भूले कामिन काया सब असार जग की माया है। निज० ॥३॥

विष सम विषय नारि नागिन सम, धन को धूलि समान गिने।
देह गेह को बन्दी ग्रह बंधन सम पहिचान गिने।
या संसार महावन में गाफिल रहतो दुख दान गिने।
धन है जिनको जिनेश्वर शासन अमृत पान गिने। ॥

पूजो सदा अरहंत को श्री सिद्ध का सुमरण करो।
सेवोसुगुरु निर्गन्थ पद नवकार मुख से उच्चरो।
उरध्याय आतम रूप को सब राग परिणति परिहरे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तज संग रंग अनंग को अति शीघ्र ही भवदधि तिरे ॥
सुरनर खग पति आस तजौ जिन भजौ सुगुरु इम गाया है।
निज हित करले चतुर चिंतामणि नर भव पाया है ॥४॥

॥ ११ ॥ लावनी विष्णुकुमार जी की ॥

विष्णुकुमार चरित्र अनूपम जिन बलि का अभिमान हरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥टेक॥
मालवदेश-उज्जैनी नगरी श्री ब्रह्मा तहाँ का भूपाल।
जिसके मत्री चार द्विज महा अहंकारी मनु व्याल ॥
पहला बलि, पुन नमुचि, बृहस्पति, अरु प्रहलाद, महा उदयाल।
विहार करते तहाँ मुनि सात शतक आये गुणमाल ॥
महा मुनीश अकंपन तिन में आचार्य श्री सुज्ञान खरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥१॥

अवधि ज्ञान विचार अकंपन शिष्यों को आदेश दिया।
पुरवासिन से न कीज्यो वाद सभी सुन यह मौन लिया ॥
पर श्रुतसागर गुरु आज्ञा के प्रथमहिं नग्र प्रवेश किया।
भोजन कारण मुनि गया नग्रा में आहारन की त्रिरिया ॥
इधर नग्र जन सुन मुनि आगम पूजन का उत्साह करा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥२॥

उत्सव सहित नग्र जन जाते देख नृपति पूंछी हंस कर ॥
कहिये मन्त्री कहं ये जाते बड़े महोत्सव से सजकर।
बोला बलि वन बीच दिगम्बर मुनि पूजन जाते चलकर ॥
तब नृप मन्त्री साथ वहाँ ले पूजन धाया आनद कर।
द्रव्य भाव युत पूजे मुनिवर बहुत सुयश मुख से उचरा ॥
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बार बार नृप कहे धन्य मुनि ध्यानारूढ़ दिगम्बर ये।
निज देही में सदा निस्पृही करें महा तप दुद्धरये॥
तृण कंचन रिपु मित्र गिने सम सहे परीषह तप करये।
राग द्वेष अरु मोह महा तज वीतराग तिष्टे वर ये॥
करें चिंतवन शुद्धातम का मेटन जन मन मरण जरा॥
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा॥४॥

मौन धरे बैठे सब मुनिवर काहू न नृप को दई अशीस।
तब हंस मन्त्री कह्यो यहाँ से गढ़ को चलिये हे अवनीस॥
ये शठ धारे ढोंग बृथा सहते हैं क्लेश तन बने मुनीश।
भेद ना जाने कहा तप होय सत्य जानो धरनीश॥
करत भये निन्दा सब मुनिकी मन्त्री द्वेष धरे गमरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा॥५॥

बहुविधि स्तुति कर नृप लौटा मारग में मुनि श्रुतसागर।
आवत छेड़ा नग्न से बाद किया मन्त्रिन मद धर॥
हार गये चारों द्विज मुनि से मान गलित हो आये घर।
श्रुतसागर भी आचार्य निकट के पहुंचा द्रुतगति जाकर॥
नमस्कार कर भेद सुनाया मारग का गुरु का सबरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा॥६॥

सुनत वचन गुरु कही उपद्रव का कारण तुम ने कीना।
इससे अब तुम बाद थान पर धरो तपस्या तो जीना॥
तब श्रुतसागर गुरु आज्ञा ले निशि में ध्यान तहाँ दीना।
चारों मन्त्री धार दुष्टता रात चले असिले हीना॥
श्रुतसागर को देखत बोले यही शत्रु मुनि है हमरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा॥७॥

बोला बलि चारों मिल एकहि बार हनो याके तलवार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाँट बरोबर लगे हत्या ऐसा खल किया विचार ॥
खड्ग उभावत कीले नग्र रक्षक सुर ने चारों अघकार।
प्रभात पुरजन देख खल मन्त्रिन को भाषी धिक्कार ॥
तब नृप ने काला कराय मुख खर चढ़ाय दीने निकरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥८॥

थान भ्रष्ट हो चारों भ्रमते हस्थनागपुर पहुंचे चल
तहाँ का राजा मेघरथ दो सुत युत राजे अतिबल ।
छोटा विष्णुकुमार पद्मरथ अग्रज दोनों महा विमल ॥
नृप तप धारा विश्नु सुत सहित लई दिक्षा निरमल ।
करे पद्मरथ राज तहाँ चारों मन्त्री पद जाय वरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥९॥

दुर्बल देख पद्मरथ को बलि बोला तुम्हें कहा खटका।
कैसे दुर्बल भये महाराज कहो कारण है घटका ॥
हमसे मन्त्री पाय जगत में कौन कार्य ऐसा अटका ।
भेद बताओ नाथ जी क्यों खाया ऐसा झटका ॥
कहो भूप हरिबल नृप आज्ञा भँग करे सेवक मगरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धिसे तब वामन रूप धरा ॥१०॥

नृप आज्ञा बलि पाय सेन लाया बाँध कर हर बल को।
देख पद्म रथ कही होकर प्रसन्न मांगो बलि को ॥
जो चाहे सो लेहु अभी तुम ल्याये पकड़ वैरा खल को।
तब बलि बोला वचन भंडार रहे अटके पल को ॥
समय पाय प्रभु याचना कर हे जब जानो कार्य अखरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥११॥

स्वीकार बच कर नृप बोला बहुत भली लीजो तबही।
तहाँ कुछ दिन में अकंपन सहित रिषि आये सबही ॥

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चारों द्विज अति बैर चितारा मुनि आये जाने जबही।
तब बलि बोला सात दिना को राज नृपति दीजे अबही ॥
हमें काम अब आवश्यक अति सात दिवस को आय परा।
ऋषि रक्षा को वि क्रया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥१२॥

करके संकल्प राज दिया नृप आप रहा जाके रनवास।
तब नृप बलि ने रचो नरमेद यज्ञ करने को मुनि नाश ॥
हाड माँस मल रोमादिक, अपवित्र पदार्थ महा कुवास।
चारों ओर जलाये मुनि के धुआँ रहो छायो आकाश ॥
देन लगा नाना दुख मुनि को द्वेष सहित अति क्रोध भरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥१३॥

मिथलापुरि के वन में मुनिवर सागरचन्द्र धरें थे ध्यान।
श्रवण नक्षत्र देखकर काँपित मुनि अवधि विचारा ज्ञान ॥
हा हा मुनिगण कष्ट सहै अति यों गुरु वचन कहे दुख जान।
कुछ अन्तर से सुने तहाँ तब पुष्पदंत क्षुल्लक निज कान ॥
पूंछा गुरु से कहा किसको उपसर्ग होय किन दुष्ट करा
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥१४॥

बोले गुरु आचार्य अकम्पन तिनके सात शतक मुनिवर संघ।
सहे परीषह हस्तनागपुर वन में बलि कृत निज अंग ॥
पुष्पदन्त तब कहो शीघ्र कुछ हो उपाय कहिये निर्भंग।
तब गुरु बोले तुम हो अम्बर गामी खगपति वरढंग ॥
विष्णुकुमार सुभूषण गिरि पर उपजी विक्रिया रिद्धिवरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥१५॥

वे समरथ उपसर्ग निवारण पुष्पदंत सुन गया तुरन्त।
नमस्कार कर सुनाये तब समाचार विधि से गुणवन्त ॥
परखन को मुनि वांह पसारी गिरा समुद्र में जाका अंत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब मुनि पहुंचे हस्तनागपुर में पद्मरथ के तट संत ।
कहा कुपुत्र मेघरथ के तू कुल कलंक उपजाय धरे ।।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ।।१६।।

हाथ जोड़ नमि कही पदमरथ कार्य नहीं मैं कीना ।
वचन हार के सात दिवस को राज दुष्ट बलि को दीना ।।
ता खल ने नर मेध रचो यह हम निवास निज ग्रह लीना ।
तब मुनिवर ने धरा बावन स्वरूप द्विज अति हीना ।।
पढ़त वेद ध्वनि पहुंचे वलि तट माँगी मुनि डग तीन धरा
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ।।१७।।

बोला बलि मांगो मन वांछित तुच्छ याचना क्या करते ।
द्विज संतोषी कही तबै इच्छा न अधिक मेरे वर्ते ।।
तब बलि जल ले किया संकल्प मुनि कर पर अपने करले ।
त्रय डग पृथ्वी दई संतुष्ट कहा मुख द्विज वर्ते ।।
तब मुनि दीर्घ शरीर वढ़ाया देख बलि मन मूढ डरा ।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ।।१८।।

श्रावण सुद पूनों नक्षत्र शुभ श्रवण मान बलि का मारा ।
पहिला पद ले मेरु से मानुष्योत्तर पर धारा ।।
दूजे में आकाश नाप तीजे को वचन बलि पर डारा ।
अब नृप दीजे और पृथ्वी जो वचन मुख से हारा ।।
बोला वलि मो सीस धरो पद सब खल का अभिमान मरा
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ।।१९।।

धरा पांव वलि के सिर जब मुनि तब विप्रन अति खाई भय ।
हाथ जोड़ बहु करी वीनती मुख से भाषी जय जय जय ।।
नारद और सुरासुर विनती करन लगे आके अतिशय ।
हे करुणा निधि अब कहो रक्षा दीजे प्रभु दान अभय ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब मुनि पाँव उठाय लिया पद नमत भये द्विज सुरासुरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥२०॥

यज्ञ नाशि मुनि सर्व बचाये रक्षा कीनी विष्णुकुमार।
तबसे प्रचलित भई रक्षा बंधन पूनो का दिन सार ॥
फटे मुनियों के कण्ठ धुवां से ललित रंच न बने खकार।
तब पुरवासिन बना सिमैयन के दीने नर्म आहार ॥
तव से यह पावन दिन माना रक्षा बंधन सर्व नरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥२१॥

चारों द्विज श्रावक व्रत लीने विष्णुकुमार गये गुरु पर।
फिर कर दीक्षा लई छेदोपस्थान की विधि कर ॥
विक्रिया रिद्धि से बिश्नु कुमार ने रूप धरा था अति लघुतर।
तिस को बहु जन कहें बावन अवतार लिया ईश्वर ॥
नाथूराम जिन भक्त सत्य यों और भाँति कहने लवरा।
ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से तब वामन रूप धरा ॥२२॥

॥१२ बिहरमान बीस तीर्थकरों की लावनी ॥

विहरमान जिन ढाई द्वीप में वीस सदा ही राजत हैं।
तिनका दर्शन और स्मरण करने अघ भाजत हैं ॥टेक॥

जम्बू द्वीप में विदेह वत्तिस आठ आठ में एक जिनेश।
सदा विराज रहे भवि जीवों को देते हैं उपदेश ॥
सीमन्दिर युगमंदिर स्वामी बाहु सुबाहु श्री परमेश।
चार जिनेश्वर कहे तिनके अरु पद वंदन करूं हमेश ॥
वर्ते चौथा काल जहां नित देव दुंदुभि बाजत हैं ॥तिनका० ॥१॥

धातु की खंड दीप में विदेह हैं चौसठ बसु जिन राज।
आठ आठ में एक तीर्थकर तिन में रहे विराज ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशाल सूरी प्रभु वज्रधर चन्द्रानन राखो लाज ॥
छय्यालीसगुण व्यवहार और निश्चय अनन्त गुण छाजत हैं।
नित कर० ॥२॥

आधे पुष्कर द्वीप में चौसठ हैं विदेह अरु वसु जिन नाथ।
जिनको सुर वहाँ पूजें हम भी यहां नावें माथ ॥
चन्द्रबाहु श्री भुजङ्ग ईश्वर नेमि प्रभु वीरसेन जी नाथ।
महाभद्र अरु देव यश अजित वीर्य पद जोड़ूं हाथ ॥
जिन प्रभा देख रवि शशि तारा नक्षत्र ग्रह लाजत हैं ॥तिन०॥३॥

ढाई द्वीप में एक सौ साठ विदेह जिनमें तीर्थंकर वीस।
आठ आठ में एक जिनेश्वर राजे त्रिभुवन के ईश ॥
कोडि पूर्व सव आयु धनुष पांचसौ काय त्रय छत्तर शीश।
दोनों ओर चमर हैं ढोरत चंवर वत्तीस वत्तीस ॥
नाथूराम जिन भक्त जहाँ जिन वचन मेघ सम गाजत हैं ॥तिन०॥४

॥ १३ सिद्धों के स्वरूप की लावनी ॥

मेरा तो महवूव वही जो कहलावे त्रैलोकपती।
जिसके नाम का ध्यान धरते हैं हमेशा योगी यती ॥ टेक ॥

वर्ण गन्ध रस फरस शब्द तन छाया रहित अचल आसन।
अस्थि चर्म मल रहित नहीं पाइये जिसके इन्द्रिय मन ॥
जन मन मरण जरागदवर्जित वाधा रहित न जिसके तन।
अनंत दर्शन ज्ञान दृग वीर्य चतुष्टय जिसके धन ॥
निर्विकार आकार पुरुष को चिन्ह मूर्ति नहीं खेद रती ॥ जिसके०

त्रिजगत के चर अचर पदार्थ जिसके ज्ञान में झलक रहे।
ज्यों दर्पण में पड़ें प्रतिविम्ब त्यों हैं तिनके ज्ञान कहें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाति अपेक्षा ब्रह्म नाम एक व्यक्ति अपेक्षा अनन्त लहै।
उसी उसी रूप पर मैं हूं आशक्त मेरा महबूब वहै॥
भव सागर के पार विराजत मैं खोजत हों वही गती ॥जिसके०॥२

वसु गुण पूर्ण वसु विधि चूर्ण करके आसन लिया अटल।
तीनों लोकों के शीशों पर राजत है प्यारा निश्चल॥
क्षुधा तृषा भय चिन्ता अरति आदि सब डाले दल।
तीन लोक में नहीं बरावर जिसके शानी का अति बल।
काम क्रोध मोहादि खेलों का, जोर ना जिस पर चले रती॥ जिस०

चिदानन्द चिद्रूपराम परमात्म आदि अनन्ते नाम।
जिनवर जिसके कहे मम हृदय वही राजत है राम॥
जैसा रूप शिव थल में वही मम घर में वास करत वसुयाम॥
निशिदिन उसके ध्यान में लुब्ध रखें मन नाथूराम।
जे ऐसा मिहबूब से विरक्त भयी तिन्हों की बुद्धि हती॥ जिस०

॥ १४ कुमति की लावनी ॥

कुमति कुनार कहै चेतन से क्यों डारत तुम पिचकारी।
मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियां सारी ॥टेक॥

मोह राज हैं पिता हमारे जिन निज वश कीना संसार।
लख चौरासी योनि में नाच नचावत बारंबार॥
भव समुद्र वहु भांति रंग का तीन लोक में है विस्तार।
हरिहर जग जीव रहे बहु डूब कठिन है पाना पार
धर्म कल्प तरु कटवा मैंने बहु अघ होरी विस्तारी॥ मैं०

क्रोध मान छल लोभ बड़े भ्राता मेरे अति बल ये चार।
मित्र जिन्हों का मदन योधा रति का पति है कामकुमार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचेन्द्री तिसकी दासी मम सखी मेरे रहती नित लार।
नाना विधि के करती कौतुक मेरे संघ में व्यभिचार॥
इच्छा दुख की मूल नायका सो हमारी महतारी॥ मैं०

मैं कुटला जग में प्रसिद्ध पर अशुभ भाव मेरे भरतार।
मिथ्यादर्शन और कषायें सर्व हैं तिनका परिवार॥
आर्त रौद्र सम जेठरुदेवर अशुभ लेश्या तिन की नार।
योगरु अव्रत तथा मिथ्यात्व वंश यति का है यह सार।
ज्ञान दर्शनावरणी मदिरा छाय रही दृग में भारी॥मैं०

नाम कर्म बहु भाँति चितेरा काया कौतुक गृह कीना।
आयु गोत्र ने शुभा शुभ स्थिति का तहाँ आसन दीना॥
नाना विधि भोगादि वस्तु का अन्तराय ठेका लीना।
तिस मित्र वेदना देने को नाना विधि कारज चीन्हा॥
यह सब लखो विभूति हमारी मो सम कौन कहो नारी॥मैं०

परिग्रह पान फूल अतरादिक नाना विधि अपभोग खरे।
अदया अवीर से कालिख के कुम कुम हैं बहु भाँति भरे॥
कुयश कुशील कुसूमादिक के कुवचन नाना रंग भरे।
पिचकारी पाप से जगत के जीव हुरिहा सर्वोर करे।
काया कीच विषे जग प्राणी लिप्त किये मैं अधिकारी॥ मैं आप०

मन मृदंग तमूरा तन के मधुर शब्द मिलकर बाजें।
कर ताल कुटिलता धरें संग में अपगुण घुघुरू गाजें॥
सप्त व्यसन सारंगी के स्वर सर्व राग ऊपर राजें।
संकेत मंजीरा युगल दृग की गति देख सभी लाजें।
आशा तृष्णा नित्य करे मेरी प्रेरी गीता गारी॥ मैं०

रुदन राग नाना विधि के जहाँ होय निरन्तर अधिकाई।
ममता मेवा से भरे घट पूर लहर दश दिशि छाई॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ताड़न मारन आदि मिठाई भोगत दिन प्रति सरसाई ॥
भव भ्रमण घरों घर करत मह जूम मूड़ता उर छाई ।
फजीहत फाग मची घर घर प्रति मो आज्ञा सब शिरधारी ॥ मैं०

ऐसी फाग अनादि काल से मैं स्वयमेव खिलाय रही ।
जो उदास यासे भये तिनही शिवपुर की राह लई ॥
नाथूराम कहें वे पुरुषोतम जे शिव पुर की वशे मही ।
निंदित संसारी को सब ही जो शिवधारें कुमति कही ॥
कुमतिं वो है मेरी विचित्र गति यह जीवों को प्यारी ।
मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियाँ सारी ॥ ८ ॥

॥ १५ सुमति की लावनी ॥

सुमति सुनारि कहै चेतन से छोड़ कुमति कुलिटा नारी ।
मेरे रंग राचो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी ॥ टेक ॥
ज्ञान भानु हैं पिता हमारे जो घट घट में करें प्रकाश ।
उदय जिन्हों का होते ही मोह तिमिर रिपु होता नाश ॥
स्वपर विवेक मित्र है जिनका जग जीवां को सुख की राश ।
विषय विरोध दास है संवर जिनके नित रहता पास ॥
जीव दया धर्म की मूल वर सो है हमरी महतारी ।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी ॥ १ ॥

मार्दव आर्जव सत्य और संतोष चार मेरे भाई ।
शुभ तीनों लेश्या बहिन जग के जीवों को सुखदाई ॥
जप तप संयम ब्रह्मचर्य इत्यादि कुटुम्बी अधिकाई ।
मम सखी है दिक्षा जिसे गहि भविजन शिव सुन्दरि पाई ॥
तुम चेतन भर्तार कुमति उर धारि बने हो व्यभिचारी ।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शुद्ध भाव वैराग्य पिता थारा प्रसिद्ध जग के अन्दर।
तिस को तुम सेवो नाथ पैहो निश्चय तुम शिव मन्दिर॥
पंच परम गुरू भ्रात तुम्हारे महा शूर गुण समन्दर।
तिन को तज स्वामी कुमति उर धार बने भिक्षुक दर दर॥
धर्म शुक्ल मित्रों को चीन्हों जो अनन्त बल के धारी।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी॥ ३॥

सिद्ध शिला माता को नम कर उस की गोद विराजो तुम।
दुर्मति दुखदायन नायका उसका साथ तज भाज़ो तुम॥
नाना विधि के यत्न बताऊँ जो मेरे संग राज़ो तुम।
तो निज कुटुम्ब में बैठ बराबर कभी ना लाजो तुम॥
ऐसे शुद्ध कुल छोड़ कुमति उर धरी बड़ा अचरज भारी।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी॥ ४॥

अष्ट कर्म तरु काट कटीले मूल सहित सूखे आले।
तिन की अब रच होलि जलाओ ध्यान अग्नि से तत्काले।
पाप पँक जो भई इकट्ठी उसे फेंक दो निकाले॥
अधरम की अरु धूल उठाकर स्वच्छ करो घर गृह हाले।
क्षमा रंग छिड़को दोनों कर पकड़ प्रेम की पिचकारी॥
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी॥ ५॥

लोभ लाख के कुयश कुमकुमें अघ अबीर भर कर मारो।
मिथ्यात्व पंचों के वदन पर फोड छार छार कर डारो॥
हत्यारे हुरि होंका लखो काजल कलक से मुँह कारो।
गोवर गुमान के भरने प्रत्यक्ष नारकी पद धारो॥
चिन्तामय चिल्लाय घरों घर फजीहत फाग मची भारी।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी॥ ६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हिंसा होली तज ऐसी निज गुण गुलाल का रंग करो।
आचरण अतर शुभ लगा सुगंधित शुद्धातम अंग करो॥
मन मृदंग तबूरा तन की डुलन डोर कस तंग करो।
सुरति की सारंगो मजीरा मधुर वचन के सँग करो॥
राग रास देखो गर बैठे नाचत फिर फिर संसारी।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी॥ ७॥

अब मूल गुण मेवा से गर पूर सुगन्धित थारा जी।
प्रत्यक्ष न दीखे तुम्हें यह कुमति कुटिल भ्रम डारा जी॥
अब भी कुमति कुटिल कुलटा से कीजे नाथ किनारा जी।
मुझ से हित कीजे मिलाऊं शिव सुन्दरि का द्वारा जी॥
नाथूराम जिन भक्त सुमति कहै मो सम अरु को हितकारी।
मेरे रंग राच्यो हर्षधर भोगो शिव सुन्दर प्यारी॥ ८॥

॥ १६ श्यामकल्याणी ॥

यामा मलवारी निज ज्ञान भुलावेरी,
ज्ञान भुलावेरी कुमति दरसावेरी॥ माया० ॥१॥

इसके नशे में जगत के प्राणी, अन्धाधुन्ध हो जावे री ॥माया०२
मान महागिर ऊपर चढ़ कर, जगत को तुच्छ वतावेरी ॥माया०३
भागचंद जिनमान नहिं कीना सो नर धन्य कहावेरी ॥माया०४

॥ १७ श्याम कल्याणी ॥

नगन दिगम्बर मुनि हितकारी लो।
मुनि हितकारी जिया उपकारी लो॥ टेक॥

दशोंदिग वस्त्र धारी, काया की कीनी कुठारी।
पंच महाव्रत धारी, ऐसे जाति जैन लो॥ नगन० ॥ १॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पांचों सुमति को साधे, तीन गुप्ति आराधे।
उदंड आहार लेत, क्रिया रिद्धि धारी लो ॥ नगन० ॥ २ ॥

बाईस परीषह सहे, अष्ट कर्मों को दहे।
अट्ठाईस मूल गुणधारी, जति जैन लो ॥ नगन० ॥ ३ ॥

शत्रु मित्र सम जाने, नहीं राग द्वेष माने।
प्यारचंद ऐसे मुनि, वरें शिव नारी लो ॥ नगन० ॥ ४ ॥

॥ १८ लावनी ॥

दान शील तप भाव भावना, इन चारों से प्रीति करो।
जो चाहो तिरना क्रोध मान, माया अरु लोभ हरो ॥टेक॥

दान दियो जिन सफल कियो जिनका सारा सुनलो विस्तार।
हृदय धारलो जिन्हों से उतर जाओगे खेवा पार।
मास उपवास के आय पारने आये मुनि लेने आहार॥
दान दियो थो इक ग्वाला ने,धरयो चित्त में हर्ष अपार।
वहाँ से चय कर जब ग्वाला ने सेठ सुदर्शन लियो अवतार॥
बढ़ो पुन्याई जिन्होंके घर लक्ष्मी का है नहिं पार।

॥ चाल फिरी ॥

दान का फल ऐसा लिया श्री साल भद्रकुमार जी।
वहाँ से चयकर जा लिया, स्वर्गों के बिच अवतार जी॥
स्वर्गां के सुख भोगकर, फिर मनुष भव में आय जी।
करके तपस्या शिव जायंगे निर्वाण पद को पाय जी॥
ऐसे दान को जो नर पाले भव सागर क्यों न तिरे।
जो चाहो तिरना क्रोधमान ॥ १ ॥

शील कथा की सुनो हकीकत सेठ सुदर्शन व्रत धारी।
कामदेवता जिन्हों की महिमा है जग में अति भारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा की वो रानी जब हुई काम से लाचारी।
कह दासी ते सेठ को लाओ आज अपनी प्यारी ॥
चौदश के दिन मशान अन्दर जाय सेठने ध्यान धरा।
कह दासी को सेठ को किया महल अन्दर अपना ॥
रानी कहती सुनो सेठ जी तुम हम सेती प्यार करो।
बचोगे नाही जरा सा दिल अपने में ख्याल करो ॥
सेठ कहता सुनिये रानी भोग करन का जोग नहीं।
तप करने को बन में मैं निश्चय कर तो चलूं सही ॥
॥ चाल फिरी ॥
रानी कपट ऐसा कियो हाथों से अंग विदार जी।
बाहर निकल हेला दिया इज्जत लीनो आय जी ॥
राजा रानी की बात सुनकर सेठ सूली थाय जी।
शील के परभाव से सूली सिंहासन पाय जी ॥
ऐसे शील को जो नर पाले सो भवसागर क्यों न तिरे।
जो चाहो तिरना गर क्रोध मान माया अरु लोभ हरो ॥ २॥

ऋषभदेव के पुत्र भये हैं बाहुवलि बड़े तपधारी।
करी तपस्या जिन्हों की महिमा है जग में अति भारी ॥
भरत चक्र यह खंड जिन्होंने बाहुवलि पर वीचारी।
आन नहिं मानी जुद्ध लड़ने की भरतरू कीनी त्यारी ॥
दोनों भाई ने मजलस ठाना युद्ध किया बड़े दुखकारी
मल्ल युद्ध जल युद्ध तीसरा नजर युद्ध अति भयकारी
तीनों युद्ध में भरत हार गये दिल में बड़ी चिन्ता जो करी।
वाहूवलि ने तपस्या करने की दिल माहिं धारी ॥
॥ चाल फिरी ॥
वाहूवलि की तप की महिमा भई है जग माहिं जी ।
वन में जाय प्रभु कायुस धरे प्रभु एक मन चितलाय जी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाहूबलि के चो तरफ वेलरी गई छाय जी।
बन के पखेरु आय के घोषडा किया अधिकाय जी॥
अष्ट कर्म का नाश जो करके वाहूवलि शिवनार वरो।
जो चाहो तिरना गर क्रोध मान माया अरु लोभ हरो॥३॥
चौवीसों जिनराज जिन्होंने पूर्व जन्म पुन्याई।
करी सोलह भावना भायकर तीथकर पदवी पाई॥
जन्म हुआ जब तीनों लोक में जय जयकार का शब्द हुआ।
इन्द्र आयकर प्रभु का जन्म कल्याणक उत्सव किया॥
वनमें जयकर दिक्षा लीनी चार घातिया चूर किया।
अथिर जान के प्रभु का समोशरण रचा दिया॥

॥ चाल फिरी ॥

समोशरण जिन का रचा जोजन अति विस्तार जी।
द्वादश सभा अद्भुत वनी प्राणी हैं चार प्रकार जी॥
दिव्य ध्वनि जिनकी खिरी कई जीव हुये सुखकार जी।
इस विधि जो श्रद्धा को करे सो जीव हों भवपार जी॥
चौबीसों जिनराज की यही लावनी गाय जी।
प्यारेलाल जी यों कहे भव भव होहु सहाय जी॥

॥ १६ लावनी ॥

यद्पि भानु पूरव से पश्चिम, उदय होय तो हो जावे।
परन्तु जो कुछ लिखा भाल में, कहु वो क्यों टलने पावे॥टेक॥
नारायण श्री कृष्ण वलिष्ठी तीन खँड जिनके कर में।
जरासिंधु से योधा मारे कँश पछारे पल भर में॥
धातु खँड से ल्याय द्रोपदी निज भुजकर तिर जलधर में।
कहाँ गया वह प्रवल भाग जब लगी आग द्वारापुरि में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है विस्मय क्यों जरद कुँवर का बान प्राण हरि विनसावे।
परन्तु जो कुछ लिखा भाग्य में कहु वो क्यों टलने पावे ॥ १ ॥
रामचन्द्र भूपाल प्रतापी कर्म जोग वन वन विचरे।
सीता सती वियोग शोक कर विपन बीच चिरकाल फिरे॥
शुभ कर्मन का हुआ जोर, जब पवन पुत्र सुग्रीव जुरे।
हो निशंक जब चढे लंक रण भूमि भयंकर शब्द करे॥
विधि विचित्र गति देख दशानन, हरि कर मर श्रुत बतलावे।
परन्तु जो कुछ लिखा भाग्य में कहु वह क्यों टलने पावे ॥२॥
सती अँजना गर्भवती को, दोष लगा सासू कुमती।
दे निकाश बनवास भास सह, हनूमान भारत युवती॥
श्रीपाल कोटी भट राजा, तिन्हें कुष्ट व्याधी वरती।
भई देह कँचन समान पुनि, गिरे उदधि में अवनपती॥
पंचम गति विलोक इन्हें यह, जिन आगम में दरसावे।
परन्तु जो कुछ लिखा भाग्य में कहु वो क्यों टलने पावे ॥ ३ ॥
पंच पाण्डवा प्रगट बली तिन दुर्योधन से भट मारे।
तुण्डी देवी अति प्रचण्ड तिन खंड सिंधु तिर गये पारे॥
ते भी निज गृह दहत बचे पुनि विपन विपति वश दुख टारे।
भये तृषातुर पी मदिरा उपसर्ग किये मुनि पर न्यारे॥
नवल नन्द उपदेश एक बिन ज्ञान चतुर्गती भटकावे।
परन्तु जो कुछ लिखा भाग्य में कहु वो क्यों टलने पावे ॥४॥

॥ २० लावनी ॥

खबर नहीं या जग में पल की.
सुकृत करना होय सो करले को जाने कल की ॥टेक॥
झूठी माया झूठी काया झूठी राजन की।
झूठी अजहु समझले भाई, यही रीति जग की ॥१।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तारा मण्डल रवी चन्द्रमा सबहिं चला चल की।
दिना चार के चमत्कार में, बिजली सी चमकी ॥२॥

यह धन है स्वप्ने की माया, ओस बूँद जल की।
बिनश जाय छिन वार न लागे, छाया मंडप की ॥३॥

झूठ कपट कर माया जोड़ी, कर बातें छलकी।
पाप गांठ सिर ऊपर धरके, मिट्टी जंगल की ॥४॥

मात पिता सुत बाँधव तिरिया, अपने स्वारथ की।
कोट कंगूरा महिल झरोखा, ये तेरे कब्र की ॥५॥

तन राजा मन चंचल हस्ती, मस्ती यौवन की।
सतगुरु अंकुर आन दिया है, कर बातें सतकी ॥६॥

॥ २१ भजन ॥

समझ समझ नादान किया क्या ते नर भव पाके ॥ टेक ॥

महा असुच मल मूत्र लपेटा रहा गर्भ माँके।
बीत गये नव मास पड़ा, तब धरणी पर आके। समझ।१।

बालापन लड़कन में खोया, हित चित हिंसाके॥
रत्न अमोलक खोय दिया ते धोके में आके। समझ।२।

तरुण रहा उन्मत्त नशे में काया माया के॥
वृद्ध समय गुण ज्ञान हरा, तृष्णा ने भरमाके। समझ।३।

तीनों पन तें खोय दिये, विषयों में चित लाके।
नफा हुआ नहीं रंच, गाँठ से चला दाम खाके। समझ।४।

अब चेते क्या होत, काल तेरे आया मुँह वाके।
नंदलाल यों कहे सबों से, आया समझाके। समझ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ २२ लावनी ॥

विकट चाल विकराल काल की, व्याल वाल सम दुखदाई।
सावधान हो वीर, सदा यह वीर जिनेश्वर फरमाई ॥ टेक ॥

वीर वचन सुत ज्ञान चन्द्रमा, भद्रबाहु स्वामी महाराज।
इस भारत में आय बिराजे, दिव्य मूर्ति मुनिगण सिर लाज ॥
जिनकी प्रभा प्रभा कर जननी बचन सुधाकर भव्य समाज।
सुखमय कीने जिन्हों की कीर्ति प्रगट भई है सब जग आज ॥
उन्हीं सुगुरू के समय हाय कलि काल कला निज परशायी।
सावधान हो वीर सदा, यह वीर जिनेश्वर फरमाई ॥ १ ॥

पुण्य हीन नर भये सहज अरु, काल दबाव किया जब जोर।
पाप उदय से भयो दुर्भिक्ष वरष बारह में अति घोर ॥
बारह सहस मुनीश्वर गुरु के संघ सिधारे दक्षिण ओर।
श्रावक जन के कहने पर कुछ मुनि रहे इसी थल जोर ॥
स्थूलभद्र आचारज जी ने संघाधिप पदवी पाई।
सावधान हो वीर सदा, यह वीर जिनेश्वर फरमाई ॥ २ ॥

इस दुर्भिक्ष समय मुनिगण को रंक लोग अति दुख देवे।
क्षुधित दरिद्री मुनिजनों को उदर भेद भोजन लेवे ॥
अति विपरीत निरख मुनिगण तब बन तज नगरी में सेवे।
जैनधर्म को भेष तजा, तब मन मानी विधि सुख वेवे ॥
समय पाय दुर्भिक्ष गयो तब सुख साता जग में छाई।
सावधान हो वीर सदा, यह वीर जिनेश्वर फरमाई ॥ ३ ॥

स्थूलभद्र आचारज जी ने निज शिष्यन को समझाया।
भेष सुधारो यह अपने वच शिष्यन के मन नहिं भाया ॥
जब दबाय कर कही सुगुरु ने उसका फल तब यह पाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भ्रष्ट मुनिन ने सुगुरु को सुर्ग लोक को पधराया ॥
धिक् २ दुष्ट कृतघ्नी जनको धिक् खोटी कृति दुखदाई ।
सावधान हो वीर सदा, यह वीर जिनेश्वर फरमाई ॥४॥

॥ २३ भजन ॥

पद–मैं दर्श बिना रहा तरस, तेरी महिमा नहिं जानी जी ॥टेक॥
मैं पूजे रागी देव, गुरू सेये अभिमानी जी ।
हिंसा में माना धर्म, सुनी मिथ्यामत बानी जी ॥१॥

मैं फिरा पूजता भूत ऊत अरु सेढ मशानी जी ।
मैं जंत्र मंत्र बहु करे मनाये नाग भवानी जी ॥ मैं दर्श ॥२॥
मैं भैंस बकरे भेड़ हते बहुतेरे प्राणी जी ।
नहिं हुआ मनोरथ सिद्ध भये दुर्गति के गामी जी ॥३॥
मैं पढ़ लिये वेद पुराण जोग अरु भोग कहानी जी ।
नहिं आशा तृष्णा मरी सुगुरु की सीख न मानी जी ॥४॥
मैं फिरा रसायन हेतु मिली नहिं कौंडी कांनी जी ।
नहिं छूटा जन्म अरु मरण खाक बहुतेरी छानी जी ॥५॥

लहि भुगत चौरासी लाख सुनी नहिं तेरी वानी जी ।
हुआ जन्म मरण ख्वार धर्मसार नहिं जानी जी ॥६॥

तेरी वीतराग छवि देख मेरे घट माहिं समानी जी ।
हो तुमहीं तारण तरण तुम्हीं हो मुक्ति निशानी जी । मैं दर्श ॥७॥

है दयामयी उपदेश तेरा तुम हो गुरू ज्ञानी जी ।
हो षट् मत में परधान नैन सुखदास वखानी जी ॥
मैं दर्श बिना रहा तरस, तेरी महिमा नहिं जानी जी ॥८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ २४ कव्वाली ॥

यही कर्मों की गति न्यारी किसी से ना टरे टारी।
करो तुम नाश कर्मों का यही दुखहारि सुखकारी ॥टेक॥
हरि जो नोंमें नारायण हुए त्रिखंड के राजा,
मरा पर न कोई रोया ना उत्पत मंगलाचारी। यही कर्मों की।१।
रामचन्द्र थे वलभद्र अयोध्या राजमन भाया।
कर्म अन्तर हड़ा आके सहे वनवन में दुख भारी।
यही कर्मों की गति न्यारी किसी से ना टरे टारी ॥२॥
सती सीता हरी रावण हुई निन्दा सकल जग में।
रही अंजना वरष बाईस पवन के वियोग में न्यारी। यही ॥३॥
पाँच पाँडव महा योधा को भी कर्मोंने आ घेरा॥
द्यूतके संग करने से निजी सब संपदा हारी। यही कर्मों ।४।
कर्म से वश चले किसका समझलो न्यायमत इतना।
छुड़ावो कर्म के बंधन जो होवे मोक्ष अधिकारी। यही कर्मों ।५।

॥ २५ भजन ॥

कब निर्ग्रन्थ स्वरूप धरूँगा। तप करके मुक्ति वरूँगा ॥टेक॥
कब ग्रहवास आस सब तजके, कब बन में विचरूँगा।
वाह्याभ्यंतर त्याग परिग्रह, उभय लिंग सो धरूँगा। कबनिर्ग्रंथ।१
होय एकाकी परम उदासी, पंचाचार चरूँगा।
कब थिर योग कर पद्मासन इन्द्रिय दमन करूँगा। कबनिर्ग्रंथ।२
आतम ध्यान सज दल अपनो, कर्म अरी से लडूंगा।
त्याग उपाधि समाधि लगाके, परिषह सहन करूँगा। कब नि०।३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कब गुणस्थान श्रेणी पर चढ़कर, मोह अरी को हनूंगा।
आनिंद कंद चिदानंद साहिब, विन सुमरूँ सुमरूँगा। कब।४।
ऐसी लब्धि जब मैं पाऊँ, आपहि आप तिरूँगा।
गोकुल सुत हीराचंद कहत है, जग में न भ्रमूँगा। कब नि० ।५।

॥ २६ पद ॥

माने प्यारो लागे ये मां मुनिवर बेष ॥टेक॥
नगन रूप दोई हाथ लुभाये करत धरम उपदेश। माने ॥१॥
छहो काय जीवनकी रक्षा, करते हैं वो हमेश। माने ॥२॥
ऐसे गुरु को मन विच ध्याऊँ, कटते कर्म कलेश। माने ॥३॥
वाइस परिषह सहने निशिदिन, तनसों ममता न लेश। माने ॥४॥
जिनकी सेवा सुरनर करते, रागद्वेष नहिं लेश। माने० ॥५॥

॥ २७ कालंगड़ा ॥

विषयां सुख माहीं, भूल्यो रे विषयां सुख माहीं।
तोहे आतम की सुध नाहीं भूल्यो रे ॥ टेक ॥
कूकर मुख देख्यो दर्पण में अपनो बिंब निहारो।
यों न नहिं जानत यो तन मेरो, भौंखतर हारयो। विषयां ॥१॥
तन धन यौवन ओस बूँद ज्यों अगियावत चमके,
आयु काय का नाहिं भरोसा, ज्यों दामिन दमके। विषयां ॥२॥
छल बल ते परधन पर त्रिय हर, डोलत फूल्यो फूल्यो।
पर भव का दुख नाहिं संभालो, भ्रमर हिंडोले भूलो। विषयां ॥३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चेतन भयो अचेत मोहमें, आयो नाहिं संभालो।
जान बूझ कर नंद जीव को शठ नरकनमें डारयो। विषयां ॥४॥

॥ २८ भजन ॥

डेरा देय रह्यो जिया तन में, ऐसे घोर भयानक वनमें ॥ टेक ॥

भ्रमतिमर झाड़ी छाय रही है, विषय रूपी पहारन में।
चहुंगति गुफा जहाँ है भयंकर, कुगुरादि नाहर ग्रसन में। डेरा ।१।

कुटुम्ब मच्छर तुझे चोंट रहे हैं, राच रयो ऐसे घिन में।
वसु मद पी निज भूल रयो हैं, जल रयो चाह अगिनमें। डेरा। २

पर द्रव्यन की चाह दाह है, दीन भयो निफसन में।
नलनी के सुवटा ज्यों भूल्यो, न भगति दई विसरनमें। डेरा ।३।

तृष्णा नदी अथाह चली हैं, मोह भंवर परयो तिनमें।
रागादिक मगरोंने पकरयो, सुख मानत शठ इनमें। डेरा ।४॥

पंचेन्द्रिय चोर लार लगे तुझे, डालत आशा पा सन में।
कुमति योगन गर्ज रही है, क्या वहरो भयो है सुननमें। डेरा ।५।

सतगुरू पहारू पुकार दयाकर, कह रहै ऐसे दुखन में।
मिथ्या पर्वत छेद चलो निज समकित शुद्ध पथनमें। डेरा ॥६॥

रत्नत्रय निधि फैल रही सो, भेली करो निज मनमें।
वेणा जो ज्ञान तुरंग चढ़ निकसे, ले पहुंचे स्वर्ग भवनमें। डेरा ।७।

॥ २९ गजल ॥

चमका है आज मेरा, सौभाग्य का सितारा।
दिल में मेरी वही है आनंद की ये धारा ॥ टेक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं जिनको ढूंढता था, वस्ती व अरु वन में।
वे ही जगत के स्वामी, आये हैं इस नगर में॥
चमका है आज मेरा, सौभाग्य का सितारा॥ १॥

कैसी है शान्ति मुद्रा, नजरों में आज छाई।
दिल देख इस छवी को, नहिं चाहती जुदाई॥
चमका है आज मेरा, सौभाग्य का सितारा॥ २॥

है धन्य इन गुरू को, जो शीत उष्ण सहते।
नहिं राग द्वेष करते, करूणा जो मन में धरते॥
चमका है आज मेरा, सौभाग्य का सितारा॥ ३॥

हे सूर्य सिन्धु स्वामी, इक अर्जी मेरी सुनना।
सेवक हूं चरण का, भव सिन्धु पार करना॥
चमका है आज मेरा, सौभाग्य का सितारा॥ ४॥

॥ ३० पद ॥

भइया क्यों डूबो मझधार, क्षमा है तेरे तिरने को॥ टेक॥
पांचों चोर बसे तेरे तन में, लूटेंगे तुझको भव वन में।
क्षमा खड्ग ले हाथ तू, इनसे लड़ने को॥
भइया क्यों डूबो मझधार, क्षमा है तेरे तिरने को॥ १॥

जो तू कह यह धन है मेरा, झूंठा प्रेम बन्धा है तेरा।
उमर बीत गई योंही लगी न देरी मरने को॥
भइया क्यों डूबो मझधार, क्षमा है तेरे तिरने को॥ २॥

जो तू कह यह पुत्र हमारा, हमें अधिक प्राणों से प्यारा।
फिर वोही ले चले तुझे अग्नी में धरने को॥
भइया क्यों डूबो मझधार क्षमा है तेरे तिरने को॥ ३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रावण से उठ चले पलक में तेरी क्या नादान खलक में।
दास जसोंदी कहें प्रभु भज भव के तिरने को ॥
भइया क्यों डूबो मझधार समा है तेरे तिरने को ॥ ४ ॥

॥ ३१ लावनी ॥

श्रावक का कुल पाया, तो कुछ करनी भी करना चहिये।
जैन धर्म का मर्म पहिचान, भरम सब हरना चहिये ॥टेक॥

प्रात काल तिन दर्शन को, तज सकल काम मन्दिर आना।
साधर्मिन की सु संगति, शास्त्र श्रवण कर घर जाना ॥
तजो मांस मधु मदिरा तीनों, पंचोदम्बर नहिं खाना।
अष्ट मूल गुण धार, यही है श्रावक कुल का बाना ॥
निश भोजन आदिक अभक्ष, भक्षण अधर्म डरना चहिये।
जैन धर्म का मर्म पहिचान भरम सब हरना चहिये ॥ १ ॥

कुगुरू कुदेव कुधर्म सेव मिथ्यात्व तजो दुख दातारी।
या सम जग में और नहिं पाप भव भ्रमण जीवको करतारी ॥
सप्त व्यसन अघ खान, आपदा जान, सुजस धन हरतारी।
भूल न सेवो नर्क से डरो डरूं नृप भय भारी।
तत्वारथ सरधान ज्ञान आचर्ण, परम धरना चहिये।
जैन धर्म का मर्म पहिचान भरम सब हरना चहिये ॥ २ ॥

जिन पूजन गुरु वंदन संयम, शास्त्र पठन तप दान करो।
षट आवश्यक क्रियाओं से, पाप सर्व षट कर्म हरो ॥
सतरा नेम चितार अणुव्रत, गुणव्रत शिक्षा व्रत धरो।
विना प्रयोजन लगे नहिं पाप, ना अनरथ ये दंड भरो ॥
न्याय भोग हैं योग सदा, अन्याय कर्म टरना चहिये।
जैन धर्म का मर्म पहिचान भरम सब हरना चहिये ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुगम धर्म श्रावक कारु जिसको, भोले प्राणी कठिन कहैं।
इस डर से नहिं आवें मन्दिर अरु जड़ता ये बुद्धि गहैं॥
अधम देव को सेय धाम धन, काम बाम पुत्रादि चहैं।
आशा वश हो सेय मिथ्यात्व, नर्क निगोद के दुःख लहे।
कुन्दन ऐसी कुमति छांड भवदधि असर्न तिरना चहिये।
जैनधर्म का मर्म पहिचान भरम सब हरना चहिये॥४॥

॥ ३२ पद ॥

आकुलता दुखदाई जगत में आकुलता दुखदाई॥ टेक॥
अनरथ मूल पाप की जननी मोह राय की जाई।
आकुलता कर रावण प्रतिहर, पाये नर्क अघाई॥
आकुलता दुखदाई जगत में आकुलता दुखदाई॥ १॥
श्रेणक भूप धरी आकुलता, मान भंग करवाई।
आकुलता कर क्रोड़ी ध्वज बहु, दुखी होय बिलखाई॥
आकुलता दुखदाई जगत में आकुलता दुखदाई॥ २॥
आकुलता विन पुरुष निरधनियां सुखिया प्रगट लखाई।
आकुलता कर पांडव नृपति, देश देश भटकाई॥
आकुलता दुखदाई जगत में आकुलता दुखदाई॥ ३॥
चक्रवती भी धर आकुलता मान भंग दुखदाई।
पूजा आदी धर्म कार्य में विघन करण दुखदाई॥
माणक आकुलता विन मुनिवर निराकुल पद को पाई।
आकुलता दुखदाई जगत में आकुलता दुखदाई॥ ४॥

॥ ३३ पद ॥

कर्म विचित्र निरन्तर जग में, नाना नाच नचाते हैं॥ टेक
नर से नारक नारक से पशु पशु से सुर उपजाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रवल मिथ्यात्व उदय से तहां गिर वास निगोद बसाते हैं ॥
कर्म विचित्र निरन्तर जग में नाना नाच नचाते हैं ॥ १ ॥

निर्वल को बलवन्त करे जसवन्त कलंक लगाते हैं ।
पुत्र कलित्र मित्र सम्पति निधि सुख में दुख दिखलाते हैं ॥
कर्म विचित्र निरन्तर जग में नाना नाच नचाते हैं ॥ २ ॥

छिन में राव रंक अरु छिन में चातुर को मूर्ख बनाते हैं ।
सुकृत विनाशे दुकृत प्रकाशे, विविध उपाधि बढ़ाते हैं ॥
कर्म विचित्र निरन्तर जग में नाना नाच नचाते हैं ॥ ३ ॥

जा मुख सम्पति विपति हेतु निज धन प्राण गमाते हैं ।
हर्ष विषाद छाँड़ विधि गति में जो निर्द्वन्द रहाते हैं ॥
कर्म विचित्र निरन्तर जग में नाना नाच नचाते हैं ॥ ४ ॥

कुन्दन सो नर साम्य सुध पी अजर अमर पद पाते हैं ।
कर्म विचित्र निरन्तर जग में नाना नाच नचाते हैं ॥ ५ ॥

॥ ३४ परमेश्वर की लावनी ॥

हे करुणा सागर त्रिजगत के हितकारी ।
लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी ॥ टेक ॥

जो इक ग्राम पती जन की विपदा टारे ।
मन वांछित जन के काज छिणक में सारे ।
तो तुम त्रिभुवन के ईश्वर विश्व पुकारे,
विश्वास भक्त ताही उर में धारे ॥
फिर भूल गये क्यों ईश हमारी वारी ।
लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मैं निज दुख वर्णन करूं कहां तक स्वामी,
तुम तो सब जानत घट घट अन्तरयामी।
तुम समदर्शी सर्वज्ञ यशस्वी नामी,
मम हरो अविद्या प्रगटे सुख आगामी॥
बर भक्ति तुम्हारी लगे हृदय में प्यारी।
लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी॥ २

तुम अधमोद्धारक विरद जगत में छाया,
मैं सुना संत शारद गणेश जो गाया।
याते आश्रय तक शरण तुम्हारे आया,
सब हरो हमारा संकट करके छाया॥
तुमको कुछ नहीं असक्य विपुल बलधारी।
लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी॥ ३

ज्यों मात पिता नहिं शिशु के दोष निहारे,
पाले सप्रेम अरु सर्व आपदा टारे।
तुम विश्व पिता त्यों ही हम निश्चय धारे,
याते शरणागत होके विनय उचारे॥
जन नाथूराम यह जाचत बारम्बारी।
लखि निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी॥ ४

॥ ३५ भजन ॥

कर्मन की गति देखो अपारा, ज्ञानी राग द्वेष निरवारा॥टेक॥

अंजन से कुबुद्धि नर कहाँ तक, ते तज स्वर्ग मुक्ति पद धारा।
दीपायन मुनि बहु तप कीना, क्रोध उपाय अधोगति धारा।
कर्मन की गति देखो अपारा॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिखण्डी नव में नारायण, कोटि शिला के उठावन हारा।
जन्म समय नहिं मंगल गाये, मरण समय नहिं रोवन हारा।
कर्मन की० ॥२॥

क्षायिक सम्यग्दृष्टि नृप श्रेणक गावत है जिन आगम सारा।
सुधि बुधि विसर गई नृप केरी, आप घात कर नर्क सिधारा।
कर्मन की० ॥३॥

कर कर करनी रहे निर्वांछित, चाह नहीं फल की उरधारा।
चमना ते नर धन्य जगत में, कर श्रद्धान उतरे भवपारा।
कर्मन की गति० ॥४॥

॥ ३६ पद ॥

देह अपावन देखो बुध जन,
वालू की भांति सुखेह की क्यारी ॥टेक॥

प्रेत दरी रज रेत भरी है,
ब्याधि की पोटि उपाधि की डोरी।
औगुण महल के माहिं विराजत,
मोह की चेरी कुकर्म की नारी। देह ॥१॥

सहज करे दुख दोष को संचय,
मोक्ष की हानि समाधि सो न्यारी।
सो यह चेतन होय अचेतन,
ताहिं लखे सबसों अति प्यारी। देह ॥२॥

अशुचि वस्त्र कर यह निर्मापित,
सार कछु न लखो घिनकारी।
पद भूषण जुत नीकी लागत,
जैसे काली कनेर निहारी। देह ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्त तुम्हें तज न्यारी होगी,
तातें तजो तुम या संग यारी।
भागचन्द यह जान भविक जन,
यासे ममता भाव निवारी। देह ॥४॥

॥ ३७ गजल ॥

कैसे प्राणी के प्राणों का घात करे,
तेरे दिल में दया का असर ही नहीं।
जो तू हिरनों का वन में शिकार करे,
तुझे नर्क निगोद की खबर ही नहीं ॥टेक॥

जिनवाणी सुनो जरा गोर करो जान,
औरों की अपनी ध्यान धरो।
जरा रहम करो अपने दिल में डरो,
प्यारे जुल्म का अच्छा समर ही नहीं। तेरे० ॥१॥

भोले वन के पंखेरु हैं डरते फिरें,
मारे डर के तुम्हारे से दूर रहें।
वे तो तुम्हारा न कोई बिगाड़ करें।
उनका बनके सिवा कोई घर ही नहीं ॥ तेरे० २ ॥

तृण घास चरें अपना पेट भरें।
धन देश तुम्हारा न कोई हरें।
प्यारे बच्चों से अपने प्रीति करें,
उनके दिल में तो कोई भी सर ही नहीं। तेरे० ॥३॥

कामी लोगों ने इसको रवाह किया,
झूठा अपनी तरफ से है मसला गढ़ा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वरना पुण्य कुरान में जीवों के मारन का ॥
आना कहीं भी जिकर ही नहीं॥तेरे दिल ४ ॥

दयामय है धर्म सत जानो सही,
जिनराज ने है यही बात कही।
सुनो न्यामत बिना दया धर्म कभी प्यारे,
होगा मुक्ति में गुजर ही नहीं। तेरे० ॥५॥

॥ ३८ भजन ॥

अब तुम साँचा ही सत्गुरु हैरो,
जा से मिट जावे भर्म अँधेरो। ॥टेक॥

जिया रे मछली पड़ी जाल के माहीं, ज्यों वगसे तन तेरो।
चातुर होय सो बच कर निकसे, मूरख को कहा बेरो। अब०॥१

काया रूपी कोठरी रे, करे मुसाफिर डेरो।
जब जम आन पकड़ ले जावे सांझ गिने न सवेरो। अब० ॥२

यो संसार असार जलधि में, को लग करूँ बखेरो।
प्रेमी कहे प्यारे की अर्जी कर्मों ने घालो छै घेरो। अब० ॥३॥

॥ ३९ गजल ॥

मरना जरूर होगा करना जो चाहे करलो।
फल उसका पाना होगा, करना जो चाहे करलो ॥टेक॥

पाया मनुष जनम है जिसका न मोल कम है।
जब तक कि दम में दम है, करना जो चाहे करलो। ॥१॥

जीवन के साथ मरना, यौवन का फल बुढ़ापा,
धन का भी नाश होगा, करना जो चाहे करलो ॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोवोगे बीज जैसा, फल प्राप्त होगा वैसा।
होना है वो ही होगा, करना जो चाहे करलो ॥३॥
रोओगे व हंसोगे, शीशे को देखकर तुम।
प्रतिविम्ब वैसा होगा, करना जो चाहे करलो ॥४॥
करलो भलाई भाई करते हो क्यों बुराई।
दिन चार जीना होगा, करना जो चाहे करलो। ॥५॥
कर कर के छल कपट जो लाखों रुपे कमाये।
सब छोड़ जाना होगा, करना जो चाहे करलो। ॥६॥
अपने मजे के खातिर पर के गले न काटो।
दुख तुम को पाना होगा, करना जो चाहे करलो ॥७॥
उपकार को न भूलो, जो चाहते हो भलाई।
येही तो साथ होगा, करना जो चाहे करलो ॥८॥
शुभ काम करके मरना, समझो इसी को जीना।
जीना ना और होगा, करना जो चाहे करलो ।६
जो आज धर्म करना छोड़ो न उसको कल पर।
साथी धर्म ही होगा, करना जो चाहे करलो ॥१०॥
है मोल जग में सबका, पर मोल नहीं समय का।
बालक यह कहना होगा, करना जो चाहे करलो ॥११॥

॥ ४० गजल ॥

यह दौरे आलम पानी है, इक हंसता है इक रोता है।
मिलता है यहाँ सबको, वह ही तकदीर में जो कुछ होता है ।टेक
यह मेरा है वह तेरा है, जर माल के चक्कर में पड़ कर।
नहिं अपनाने का विचार किया फंस मोहक फंस क्यों सोता है१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है वक्त अभी उठ जाग जरा, दुनियाँ में किसी का कोई नहीं ।
सब हित मित दुश्मन होते हैं, जिस वक्त नसीवा सोता है ।यह०२
हस्ती जो मिटा दे या मिट जा, फिर अपने रब से ध्यान लगा।
लखि आप नये दिल में खुद दिल, तवही सच्चा सुख होता है ।
शिवनारायण गर की गफलत सेहोगी वही,चरितार्थ मसल ।
जब सूख गई हां सब खेती फिर बारिस क्या होता है ॥यह०३

॥ ४१ गजल ॥

चेत अचेत समझ क्यों न मूरख इक दिन उस घर जाना है ।
तन धन यौवन वाम धाम सब जावे न संग बेगाना है ॥टेक॥

तू ममतावश जान आपना, छल से धन्न जुड़ाना है ।
अरे बावरे क्यों मन फूला होगा नर्क ठिकाना है ॥
कठिन कठिन मानुष भव पाया, जो सुरपति मन माना है ।
गह अनमोल, रिद्धि शिव दाता, भुसके मोल विकाना है । चेत ।१
सप्त व्यसन में राग पाग कर, अजहूँ नाहिं अघाना है ।
परिणति श्वान समान धार कर, अस्थि चिचोड रिझानाहै ॥
सुकृत कर जो निज सुख पावे, भाषा वेद पुराना है । चेत ।२।
निज तज जो पर कारज लागे, मूढ़ है वो न सयाना है ।
मोह छोह तस्कर बश होकर, अपना राह भुलाना है ॥
मान सुजान कानधर वाणी, जो होय कल्याणा है ।
सेवक गृह की पंक पड़ा तूं, नर भव पाय लजाना है । चेत ।३।

॥ ४२ माड ॥

ऋषभ जिन आवता ये माय । अम्मा मोरी नग्न दिगम्बर काय ।टेक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब नर नारि मिल देखिया ये माय,
अम्मा मोरी नजर भेंट बहुलेय। ऋषभ ॥१॥
कई गज कई अश्व देवें ये माय,
अम्मा मोरी कई इक कन्या देत। ऋषभ ॥२॥
कई रतन नजर करया ये माय,
अम्मा मोरी केई वस्त्र अपार। ऋषभ ॥३॥
इत्यादिक वस्तु देवें ये,
अम्मा मोरी वे कुछ लेते नाहिं। ऋषभ ॥४॥
क्या जाने क्या चाहिये ये माय,
अम्मा मोरी धन वे कछुय न लेय। ऋषभ ॥५॥
ऐसे जिन मोकों मिलियो ये,
अम्मा मोरी बुध महा चंद के भाव। ऋषभ ॥६॥

॥ ४३ स्वारथ के विषय पर ॥

तन नहीं छूता कोई, चेतन निकल जाने के बाद।
फेंक देते फूल ज्यों, खुशबू निकल जाने के बाद ॥टेक॥

आज जो करते किलोलें, खेलते हैं साथ में।
कल डरेंगे देख तन, निर्जीव हो जाने के बाद ॥१॥

बात भी करते नहीं, जो आज धन की ऐंठ में।
मांगते नज़र आये वही, तकदीर फिर जाने के बाद ॥२॥

पाँव भी धरती पै जिनने, हैं कभी रक्खे नहीं।
वनमें भटकते वो फिरें, आपत्ति आ जाने के बाद ॥३॥

बोलते जबलों सगे हैं, चार पैसे पास में।
नाम भी पूंछे नहीं, पैसा निकल जाने के बाद ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वार्थ प्यारा रह गया, असली मुहब्बत टूट गई।
भूल जाता माँ को बछड़ा, पय निकल जाने के बाद ॥५॥

भाग जाता हँस भी, निर्जल सरोवर देख कर।
छोड़ देते वृक्ष पक्षी, पत्र झड़ जाने के बाद ॥६॥

लोग ऐसा मतलबी, फिर क्यों करें विश्वास हम।
बाल डरता अग्नि से, इक बार जल जाने के बाद ॥७॥

इस अथिर संसार में क्यों मग्न कुन्दन हो रहा।
देख फिर पछतायगा, असमर्थ हो जाने के बाद ॥८॥

॥ ४४ भजन

करो रे मन सज्जन जनको संग ॥ टेक ॥

नीच की संगति नीच कहावे, धेनु न होत कुरंग।
हँस न देख्यो बगुला कहतो, भेरुण्ड न होत भुरंग ॥१॥

चंदन को कोइ नीम न कहवत, सागर होत न गंग।
अमृत को नहिं विष उच्चारत, खर को कहे न तुरंग ॥२॥

कोयल को कोइ काग न कहवत, महषी न होत मतंग।
नहीं सितार को कहत सरंगी, नहीं मृदंग को चंग ॥३॥

दिन को रैन नहीं कोइ कहवत, रवि को कहे न पतंग।
वीर चन्द नहिं श्वेत दूध को, कहे न कारो रंग ॥३॥

४५ मंगला

तूं तो करले श्री जी नह्वन जात राजलकी,
तेरे सिरसे पापकी पोट जो हो जा हलकी ॥ टेक ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तूने मल मल धोई देह खिडाये पानी,
नहिं किया श्री जी न्हवन अरे अज्ञानी।
तेरे सपरस के वश भोगे भोग घनेरे,
नहि भये तदपि सम्पूर्ण मनोरथ तेरे। तूं तो ॥१॥
तूंने ब्रह्मचर्य गजराज बेंच खर लीना,
ले जगत कलंक चले दुर्गति कहा कीना॥
अचहुं चेत अचेत खबर नहिं कलकी। तेरे सिरसे पापी ॥२॥

तूंने रसना के वश पुद्गल सब चख लीने,
तूंने भून भुसल षटकाय को शंकट दीने।
तूंने भाखी वीरण विकथा, असत कहानी,
दुर्बचन से वीधे मरम स्ताने प्राणी ॥३॥

तूंने चाखे नागर पान, जीभ कूंछीली,
तेरे तदपि रही यह जीभ थूक से गीली।
अब करलें भजन मेरे वीर आस तज खलकी ॥ तेरे सिरसे ॥४॥

तूंतो टाँक मांस की डली को नाक बतावे,
अरु बांध नाक सों खड्ग कुवाक धरावे।
उसकी तो तीन हैं फांक समझले मनमें,
हो जैसा तीनका आँख देख दर्पण में ॥ ५॥

तूंतो इससे सूंघे पुद्गल जग के सारे।
नहीं गई सिणक रही भिणक समझले प्यारे,
अब प्रभु की सेवा करो तजो पुद्गलकी। तेरे सिर से ॥६॥

तेने आँखां में अंजन वार अनंती डारे,
लिये तीन लोक के अंग पदारथ सारे।
लिये निरख जन्म अरु मरण अनंती बारे,
सब जानत हैं पर मानत क्यों नहिं प्यारे ॥७॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तूं तो धोवत अपनी सौ वर आँख अज्ञानी,
बहुतेरे रिताये कूप खिडाये पानी।
कर दर्श प्रभूजी का दृष्टि हटे तेरे छलकी। तेरे सिरसे ॥८॥

तूने कानों से सुन लई जगतकी असत कहानी,
नहीं रुका तदपि सुन छैल मैलका पानी।
तूतो सुन रहा निशदिन हर दम मौत विरानी,
तेरे सिर पे खेल रहा काल, क्या यह नहिं जानी ॥९॥

अब करले प्रभुजी का नह्वन, सुनो जिनबानी,
तेरी हो जाय निर्मल देह, फेर नहिं आनी।
कह नैन सुक्ख अब तजदे बात छलबल की,
तेरे सिर से पाप की पोट जो हो जाय हलकी ॥१०॥

॥ ४६ भजन ॥

हम देखे जगत के साधु कोई साधु नजर नहिं आते ॥ टेक ॥
कोई अंग भवूत रमाते, केश नखून बढ़ाते।
कोई कन्दमूल फल खाते, वे साधु का नाम लजाते। हम देखे ।१।
कोई नाहक कान फड़ाते, फिर घर घर अलख जगाते,
कलि भूठ जगत भरमाते. गहि हाथ नरक ले जाते। हम देखे ।२।
घर छोड़ विपन चल जाते, मठ छाप ध्वजा बनवाते,
वे पूजा भेंट धराते, सो वमन करी फिर खात। हम देखे ॥३॥
निर्ग्रन्थ गुरु नहिं पाते, जो मारग मोक्ष बताते,
नयनानन्द शीश नवाते, हम उनके दास कहाते। हम देखे ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ४७ लावनी ॥

जब अशुभ कर्म क चक्र उदय लाते हैं।
फँदे में स्याल के सिंह भी आ जाते हैं ॥ टेक ॥

जब आये फँद में पाण्डव से बलवानी,
लगे जुआ खेलने बड़े चतुर अति ज्ञानी।
दी हार दाव पर द्रोपदी सी महारानी,
बैठे सिर नीचा किये बड़े अभिमानी ॥
छंद–तब कुछ नहिं पार बसावे, जब करसे तीर छुट जावे।
क्या द्रुपद सभामें आवे, दुःशासन हाथ बढावे ॥
अहो कर्म ये तेरी गती, सुनके ऋषि जती रुदन लाते हैं।
फँदे में श्याल के ॥१॥

था लंका में रावण बड़ा प्रबल बल दाई,
पंडित अरु नीति शास्त्र का ज्ञाता भाई।
जब आया विपति का समय बुद्धि बिसराई,
जा दण्डक बनके बीच सिया को चुराई।
छंद–तब कहत मंदोदर नारी, क्यों हरी पिया पर नारी।
कही नीति विभीषण सारी, दी लंकपत्ति तब गारी ॥
ढिग गया विभीषणराम, तजके धन धान शरण लाते हैं।
फँदे में स्याल के सिंह भी आ जाते हैं ॥२॥

जब अशुभ कर्म सीता का प्रगट हो आया।
लोकापवाद से बन में राम छुड़ाया ॥
पड़ी विपत उठानी सभी जो कर्म नचाया।
फिर रामचन्द्र ने अग्नि कुण्ड बनाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छंद-कहा लछमण देर न लाओ, तुम सूखा काष्ट मंगाओ ।
सिया अग्नि कुण्ड बिठलाओ, ये परीक्षा शील कराओ ॥
ये लेखनी है असमर्थ करे जो अर्थ रोम ठाते हैं ।
फंदे में स्याल के सिंह भी आ जाते हैं ॥३॥

ये कहूं अन्त इक सीख जो सत्गुरु बरणी ।
तुम करोगे जैसा मित्र पड़ेगी भरणी ॥
वो करके वृक्ष ववूल, चखो नहिं खरनी ।
शुभ अशुभ कर्म का भेद टरे नहिं टरनी ॥
छंद-हुए बड़े बड़े छत्तरधारी, महावीर तू कौन चिकारी ।
सबने ही वाजी हारी, नहिं टरे किसी से टारी ॥
कहे गुरु मुकुन्द शुभ कर्म अथिर है, चर्म ये समझाते हैं ।
फंदे में स्याल के सिंह भी आ जाते हैं ॥४॥

॥ ४८ लावनी ॥

बंधे हैं अपनी भूल से प्राणी, बंधे बंधे मर जावेंगे ।
दया जीव को करेंगे जब हम भी सुख पावेंगे ॥ टेक ॥

दया से परजा कहेंगे राजा, दया से संत कहावेंगे ।
दया के कारण, सेठ और साहुकार बतलावेंगे ॥
जो दुखिया की मदद करेंगे, इस जगमें जस पावेंगे ।
विपति काल में वही फिर मदद हमें पहुँचावेंगे ॥
धन यौवन के मद से हम तुम जिसका जीव दुखावेंगे ।
जब पुण्य गिरेगा, तो वे छाती पर चढ़ जावेंगे ॥
छेदेंगे अरु भेदेंगे तन काट कलेजा खावेंगे । दया जीव की ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झूठ वचन से मान घटे अरु जिसके ढिग हम जावेंगे।
सत्य वचन भी कहेंगे तो सब झूठ बतलावेंगे ॥
वसु राजा की तरह झूठ से नरक कुण्ड में जावेंगे।
सत्य घोष की तरह फिर राज दण्ड भी पावेंगे ॥
चोरी के कारण से प्राणी कुल कलंक कहलावेंगे।
रावण की ज्यों वंश अरु वेल नाश हो जावेंगे ॥
फिर नरकों में उनके मुख में कूंचा बाल जलावेंगे। दया ॥२॥
मैथुन व्यसन बुरा है प्राणी, जो इसमें फंस जावेंगे।
उन जीवों के वीज अरु वंश नष्ट हो जावेंगे ॥
फिर उनके संतान न होगी, अरु होगी तो मरजावेंगे।
जो न मरेंगे तो उनके तन से रोग न जावेंगे ॥
नरकों में उनको लोहे के थंभों से लिपटावेंगे।
लोह की पुतली गरमकर छाती से चिपटावेंगे ॥
हाहाकार करेगा जब वो मुख में वांस चलावेंगे। दया ॥३॥

जिनके नही परिग्रह संख्या तृष्णावंत कहावेंगे।
लोभ के कारण झूठ और चोरी में मन लावेंगे ॥
गुरु को मार देव को बेचें सभासे धर्म उठावेंगे।
बाल वृद्ध के कण्ठ में फाँसी दुष्ट लगावेंगे ॥
राजा पकड़ धरे सूली पर फेर नरक में जावेंगे।
वचन अगोचर नर्क के बहुत काल दुख पावेंगे ॥
कहें नेनसुख दया से सब संकट टर जावेंगे। दया जीव ॥४

॥ ४६ श्री आदिनाथ की लावनी ॥

श्री आदिनाथ करहैं सनाथ मरू देविमाय तिनकी माई।
कैलाश पाय तप किया जाय तज दिया राज उन शिव पाई ।टेक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरजू के नीर बहते गहीर तट अवधि तीर बस्ती भाई ।
तहाँ नाभिराय मरु देविमाय, तिन कूख आय श्री जिनराई ॥
आये जु इन्द्र सजके गयेन्द्र लेगये जिनेन्द्र को तहाँ भाई ।
माया का रूप रचके अनूप जननी समीप दिये पोंड़ाई ॥
महिना जु चैत्र उत्रा नक्षत्र, नवमी पवित्रके दिन भाई ॥ कै० ॥१॥

भेरी बजाय नृत्य करे गाय, लेगये जाय पाँडुक वनको ।
भर करके छीर सागर का नीर, ढारे गहीर कर कर मनको ॥
बाजे मृदंग नाचे सुरेन्द्र, गावेजु इन्द्र हर वे मनको ।
फिर लिये उठाय, ले गये जाय तहाँ पोंड़ीमाय सौंपे उनको ॥
गृह गृह अनन्द तहाँ भये जिनेन्द्र, छविपूर्ण चन्द्र कैसी छाई ।
कैलाशपाय ॥ २ ॥

तिन आयुपाय चौरासी लाख, पूरव की साक सुनलो भाई ।
है बीस लाख पूरव की साख. कुवरण में खोय दई जिनराई ॥
खेले अनंग लड़कों के संग नहिं राग रंग तिनके ताहीं ।
पढ़करके कोष दिल में न सोक, रहते अशोशं मन के माहीं ॥
चलते सुनीति तजके अनीति, फिर राजनीतिकी सुध आई । कै० ।३।

विद्याका रूप सुन्दर स्वरूप भये ऐसे धूप उस जग माहीं ।
ऐसे प्रवीण जप तपको चीन, सब दुख न दीन प्रभु लघुताई ॥
इक लाख पूर्व तप किया अनूप, वट वृक्ष रूप नीचे भाई ।
करते उपास तज भूख प्यास बारा जु मास तक जिनराई । कै० ।४।

धरते हैं ध्यान सुन्दर महान, कुछ नहीं मान तिनके ताई ।
ठाड़े अभग तज राज रंग, अंतस तरंग जिनशिव पाई ॥
भोजन को जाय रस ईख पाय, श्रेयांसराय के ग्रह जाई ।
फागुन महेश ग्यारस दिनेश, केवल जिनेश पायो भाई । कै० ।५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संग लाख तीन श्रावक प्रवीण, प्रभु के अधीन शिव गतिपाई।
यह है विचार इतने हजार अस्सी पै चार श्री मुनिराई॥
तिनको प्रणाम कर आठों याम दुख कष्ट काम सब मिटजाई।
कहैं भागवंत जिनमत का पंथ नन्नू तुरन्त गाते भाई। कै० ।६।

॥ ५० भजन ॥

जन कौम की नाव भंवर में फँस गई हो,
फंस गई फंस गई फँस गई हो, जैन कौम की नाव ॥ टेक ॥
और पंथ बनते दिन दूने, जैनी होत दिनों दिन ऊने।
क्या बीमारी धस रही हो। जैन कौम ॥ १ ॥
क्रोड़ों से लाखों पर आये, घटि घटि बारह लाख कहाये।
जाति दिनों दिन नश रही हो। जैन ॥ २ ॥
कोई दिगम्बर कोई श्वेताम्बर, लड़े परस्पर ले ले नम्बर।
दौलत वृथा निकल रही हो। जैन कौम ॥ ३ ॥
कभी विजय श्वेताम्बर पावे, कभी दिगम्बर खुशी मनावें।
लखि लखि दुनियां हंस रही हो। जैन कौम ॥ ४ ॥
बाबू पंडित दलके प्राणी, करें परस्पर खेंचा तानी।
गांठ बीच में कस रही हो। जैन कौम ॥ ५ ॥
कहीं बीस तेरह का झगड़ा, कहीं दसों बीसों का रगड़ा।
रगड़ झगड़ में घिस रही हो। जैन कौम ॥ ६ ॥
रहा नहीं इनमें कोई राजा, विगड़ गया संगठन समाजा।
फूट दिलों में वश रही हो। जैन कौम ॥ ७ ॥
वीर जिनेश्वर पार लगाओ मक्खन जान निकल रही हो॥ जैन ।८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ५१ भजन ॥

मुश्किल है जैन फकीरी, खाड़े की धार फकीरी ॥ टेक ॥

जो कोई इसको ध्यावे मनसे, ममता छोड़े सारे धनसे ।
त्रिया पुत्र अरु प्यारे जनसे, त्याग के सकल अमीरी । मु० ॥१॥
परिग्रह छोड़ के होय दिगम्बर, ध्यान मे काटे कर्म भयंकर ।
शीत गर्म की वाधा सहउर, करता की कठिन जंजीर । मु० ॥२॥
छहों कायकी रक्षा करता, पंच महा व्रतमें रत रहता ।
लघु भोजन इक बारहि करता, सब त्याग के सुक्ख अमीरी ।मु०।३
द्वादश तप जो तपता ठनके, मूल गुण अट्ठाइस धरके ।
सुमति पांच और हैं जिनके, शिवपुर की है दिलगीरी । मु० ॥४॥
समता भाव है सब जीवों पर, शिक्षा देते उनको हितकर ।
चाहे कैसा भी हो वो नर द्वादश राग है भीरी । मु० ॥५॥
मंडल ऐसे गुरु को मानो, सच्चा वोही सबसे जानों ।
और किसी का नाहीं ठिकानो, करता है नकल फकीरी । मु० ।६।

॥ ५२ कव्वाली ॥

नहिं होवे राजतिलक रघुवर को कैकइ यों उठ ललकारी ।
यों उठ लरकारी मतवारी, राजा दशरथ की दुहाई दे पुकारी॥
वचन हमारा कीजे पूरा स्वामी, मतवनो धरम हारी ॥ टेक ॥
शैर–मेरा था स्वयंवर जहां आये थे हजारों राजा ।
लेले भारी फौज बड़े वंशनके महाराजा ॥
आप भी पधारे थे खड़े थे अखाड़े वार ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबको विसार मैंने किया तुमको भर्तार ॥
जल गये नृप गल गया मान जब पड़ा जंग भारी। नहीं ।१।

मारा गया सारथी तुम्हारा, तुम जानो सारी।
आकर योधों ने तुम्हें घेर लिया, मैंने रथ हांका इकवारी ॥
जब आपका हुकम पाय, चुन चुन योधोंकी छातीपे पड़ी थी धाय
रण को फतह तुम किया मुझे वर दिया ॥
मांगले मन वांछित प्यारी। नहीं होवे ॥ २ ॥

वचन विसारो तो ना केशर डारो न स्वामी,
चन्दन को डारो कोरो काजर उपारके।
करदो कलंक को तिलक रघुवर जी के।
करदो चले हैं धरम हार के, गुप्त समस्या करो महल पे खड़ी,
राम दशरथ ने सुनो सारी। नहीं होवे ॥ ३ ॥

राजा ने हुकम दिया खूबते दिलाई याद,
मांग ले जो इच्छा होय शंका नहीं करनी।
टर जावे पाँचों मेरू टर जावे चँद सूरज,
वचन टरे न चाहे टर जा धरनी।
बोली राम को तो दे काड भरत को दे दो राज,
राजा को कतर लियो हियो ज्यों कतरनी।
दीर्घ मुख नृपकहे हाय पड़े चनकराय करमगति,
टरे न भाई टारी। नहिं होवे राज तिलक ॥ ४ ॥

॥ ५३ ॥ राग कल्याणी ॥ प्रभावती

जड़ता जिनराज बिना कौन हरे मेरी ॥ टेक ॥
सुनत ही जिनेन्द्रवैन, भयो मोहि अतुल चैन।
सम्यक् के अभाव, मैंने कीनी भव फेरी। जड़ता ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतुल सुक्ख अतुल ज्ञान, अतुल वीर्य को निधान,
काया में विराजमान, मुक्ति मेरी चेरी ।। जड़ता ।। २ ।।

द्रव्य कर्म विनिर्मुक्त, भाव कर्म असंयुक्त,
निश्चयनय लोक मात्र, परजय वपु घेरी । जड़ता ।।३।।

जैसे दधि माहिं घीव, तैसे जड़ माहिं जीव,
देखी हम अपने नैन आनंद की ढेरी । जड़ता जिनराज ।।४।।

।। ५४ लावनी ।।

ऐसे कर्म बड़ेरी वलवान जगत में पेरत हैं ।।टेक।।
पवनंजय की रानी अंजना गर्भ विषें हनुमान ।
सगी सासुने दियो निकारो, किस विध राखे प्राण । जगत०१
घरसे निकसी चली मांयके, मात पिता के गुमान ।
भाई वंधु ने बात न बूझी नेक न किये सन्मान ।। जगत०।२
बार बार वो कहे अंजना दीरघ लेत उच्छ्वास ।
कहो सखी अब कैसी करिये, टूट गई मोरी आस ।। जगत०३
उतसे निकसी वन को चाली, वीच मिले मुनिराय ।
पूरव भव की सोध कराई, रोम रोम हरषाय ।। जगत ।।४।।
भूधरदास कहत भव जनसों, चेतन अवधि सुधार ।
प्रभु का नाम तरण तारण है, कर्म फंद निरवार ।। जगत ।।५।।

।। ५५ भजन ।।

जिन धर्मके टुकड़े हजारों हुए, कोई यहाँ गिरा कोई वहाँ गिरा ।
विखरे हुए मोती मिल न सके, कोइ यहां गिरा कोइ वहां गिरा ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महावीर ने वाणी वर्षा कर, इक सुन्दर पेड़ लगाया था।
जहाँ फूल खिले फिर बिखर गये, कोइ यहाँ गिरा कोइ वहां गिरा॥
जिन धर्म के० ॥१॥

दसा बीसा तो बन ही चुके, अब चालीसे की देर नहीं।
टूटे हुए दो दिल मिल न सके कोइ यहां गिरा कोइ वहां गिरा॥
जिन धर्म के० ॥२॥

कहीं तेरा पंथी कहीं थानकवासी, कहीं जैन श्वेताम्बर मंदिर हैं
मुक्ति की मंजिल एक ही है, कोइ यहां गिरा कोइ वहाँ गिरा॥
जिन धर्म के० ॥३॥

इन आपसके मत भेदों से, जिन धर्म की शान घटाओ ना।
था हरा बाग अब उजड़ गया कोइ यहां गिरा कोइ वहां गिरा॥
जिन धर्म के० ॥४॥

॥ ५६ ॥ स्वारथी दुनियां ॥

समझ मन स्वारथ का संसार ॥ टेक ॥

हरे वृक्ष पर पक्षी बैठा, गावत राग मलार।
सूखा वृक्ष गया उड़ पक्षी, तजकर दम में प्यार॥ समझ० ॥१॥

ताल पाल पर डेरा कीना, सारस नीर निहार।
सूखा नीर ताल को तज गये, उड़ गये पंख पसार॥ समझ० ॥२॥

जब वह्यो मालिक घर यावत, तावत बांध्यो द्वार।
वृद्ध भयो तब नेह न कीनो दीनो तुरत निकार॥ समझ० ॥३॥

पूत कमाऊ सब घर चाहे, पानी पीवे वार।
भयो निखट्टू दुर दुर पर पर, होवत बारम्बार॥ समझ० ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब तक स्वारथ सधे तभी तक, बने फिरे हैं यार।
स्वारथ सधे बात नहीं पूछे, बिछुड़ गये संग छार ।। समझ० ।।५।।
स्वारथ तज निज गृह परमारथ, किया जगत उपकार।
ज्योति ऐसे गुरू देव के गुण चिंते हर वार ।।समझ मन ।।६।।

॥ ५७ पद ॥

छाँड़ मन तू मेरा मेरा, अंत समयमें कोई नहीं तेरा। छांड ।।टेक।।

धन कारण फिरतो फिरयो, रच्यानित नया ढंग।
ढूढ़ ढूढ़ कर पाप कमाया कोड़ी चली नहीं संग।
होगा ये मालिक वहु तेरा। छांड़ मन तू मेरा मेरा ।।१।।

टेडी बाँधी पागड़ी वन्यो छबीलो छैल।
धरती पर गिनकर पग मेल्या, मौत आ गई गैल।
वखेरया हांड हाड तेरा। छांडमन तू मेरा मेरा ।।२।।

नित साबुन से नहायो, अतर फुलेल लगाय।
सजी सजाई पूतली तेरी पड़ी मसाणा जाय।
जलाकर करी भस्म ढेरा।। छांडमन तू मेरा मेरा ।।३।।

मदमातो करडो रह्यो राख्या राता वैन,
आया ने आदर नहि दीनों, मुख नहिं मीठा बैन।
अन्त जम दूत आय घेरा।। छांड मन तू मेरा मेरा ।।४।।

परधन परनारी तकी, पर चरचा से हेत।
पाप पोट माथे पर मेली, मूरख रह्यो अचेत।
हुआ फिर नरकन में डेरा।। छांडमन तू मेरा मेरा ।।५।।

प्रभु नाम लियो नहीं, सत्सँग से नहिं नेह।
जहर पियो अमृत को छाँडयो अंत पडी मुख खेह।
सांस सब वृथा गया तेरा ।। छांडनन तू मेरा ।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुर्लभ देही खो दई कर्म किया बदकार।
हूं हूं करतो ही मरयोरे, गयो जमारो हार।
पड़ा फिर जन्म मरण डेरा ॥ छांडमन तू मेरा मेरा ॥७॥
काम क्रोध मद लोभ तज, कर अन्तर में चेत।
मैं मेरे को छांड हृदय से कर तू प्रभु से हेत।
जनम यूं सफल होय तेरा ॥ छांडमन तू मेरा मेरा ॥८॥

॥ ५८ ॥ भजन ॥

सुख दुख दाता कोइ नहिं जीव को पुन्य पाप करण है वीरा।टेक।
अन्य सब मित्र मात्र हैं जानो, यह लख मन निज धरना धीरा।
इन्द्र नरेन्द्र फणेन्द्र सभी मिल, टार सकै नहिं विधि फल पीरा॥
सुख दुख दाता० ॥१॥
सीता जी के अग्नि कुण्ड में किया सुरों ने निर्मल नीरा।
जब हर लीनी थी रावण ने, तब क्यों नहिं आये कोई सुरधीरा।
सुख दुख दाता० ॥२॥
वारिषेण पर खड्ग चलायो, फूलमाल कीनी सुरधीरा।
क्यों नहिं आये तीन दिवस तक गिदडी भख्यो सुखमाल शरीरा
सुख दुख दाता० ॥३॥
कृष्ण हने शिशुपाल जरासिंध भोगे भोग हली संग केरा।
कछु न चली जब अरिन्य कसूबी जरदकुमार शर से तन चीरा॥
सुख दुख दाता० ॥४॥
मानतुंग अडतालिस ताले तोड़के छेदा बंध जंजीरा।
पाण्डव मुनि जारे दुश्मन ने पाप निकांचित फल गंभीरा।
सुख दुख दाता० ॥५॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऐसे ही सुख दुख होत है जीवको पुण्य पाप जब चलत समीरा।
मंगल हर्ष विषाद न करना फिर रखना चहिये निज हियरा।
सुख दुख दाता० ॥६॥

॥ ५६ ॥ लावनी ॥

जल से गले रवि से जलता, कमल जगह छुट जाने से।
मित्र अरी हो जाय जगत में अशुभ कर्म के आने से ॥टेक॥

जिन पाण्डों के पुत्र सुनी वो जरासिन्धु पर चढ़ आये।
दिया उन्हों को देश निकाला जीत द्वारका फिर आये।
रावण मर कर लंका खोई, किस कारण वो दुख पाये।
उस सीता को छोड़ी बन में, रामचन्द्र जी भरमाये।
जाता रहा विवेक न सोची लोगों के वहकाने से। मित्र अरी०॥

सीता शील परीक्षा कारण, अग्नि कुण्ड जब राम रचा।
कमल पत्र पे हुआ सिंहासन, अग्नी निर्मल नीर हुआ।
पांचों पाण्डव हुए मुनि जब, ध्यान धरा बन में जाकर।
फेंक दिये उन अरन आवरण अरि ने उनको पहना कर॥
कोई न साथी हुआ उन्होंका अग्नि के जल जाने से॥मित्र अरि०॥

पार्श्वनाथ स्वामी ने दीक्षा ले ध्यान धरा बन में जाकर।
कमठ जीव ने देख उन्हों को रोष किया मन में लाकर॥
बड़ा किया उपसर्ग बहुत से कंकर पत्थर बरसाये।
कहाँ गये वो देव जिन्होंने षट नवमास रतन बरसाये॥
तीर्थंकर भी बचे नहीं, इस अन्तराय फल पाने से। मित्र अरि०॥

सूर्यहाँस खड्ग नहिं पाये, बारह वर्ष तप करने में।
संबू कुंवर अरु लक्ष्मण ने सिद्ध किया इक पल छिन में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आयु कर्म जो हुआ उन्हों का एक तीर से प्राण हरे।
वे नारायण जिन्हों के सुदर्शन चक्र ने घात करे॥
महावीर यों कहे कोई नहिं बचा काल विष खाने से॥ मित्र०४॥

॥ ६० ॥ लावनी ॥

महा निन्द पर्याय त्रिया की महा कुटिल भावों का फल।
तीनों पन दुख भुगते योंही नहीं सुक्ख नारी को पल॥ टेक॥
जन्म सुनत सिर धुनत पितादिक उदास होके कुल के जन।
आशावान निराश होत सब, कमीन याचक अपने मन॥
नेग योग वाले सकुचाने, मांग सकें नहिं किंचित धन।
श्रवण सुनत उदास सब होते, पुरा पड़ोसी भी तत्क्षण॥
गीत नृत्य वादित्र महोत्सव, बन्द भये गृह में मंगल॥ तीनों०१

खान पान में सदा निरादर मरयो जियो भाग्यन अपने।
नहीं कुटुम्ब बढ़ने की आशा बेटी से काहू स्वप्ने॥
बालपने से सकुचित निकसे सर्व अङ्ग पड़ते ढकने।
बदनामी का अति दुख भारी श्रवण सुनत लागे कपने॥
ब्याह भये दुख सासु ननद का काम करत ना पावे कल॥तीनों०२

सासु ससुर पति की दहशत से रात दिवस रह कम्पित तन।
सबके पीछे भोजन पावे जैसा बचे घर में उस क्षण॥
बेअदवी जो करें पड़े अति मार कुटे डंडों से तन।
घर बाहर के कुवचन कहते, पराधीन हो सुने श्रवण॥
हो स्वतन्त्र कहीं जाय न सकती,राखे चाहे कुल की लाज॥तीनों०३

गर्भ भार का अति दारुण दुख नौ महीना सहती नारी।
मरण समान प्रसूति समय में तो दुख का कहना क्यारी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बड़े कष्ट से पाले बालक, छीन भई छवि तन सारी।
मरे अधूरा पूरा बालक, तो दुख का कहना क्यारी॥
बाँझ होय तो कुल की नाशक कहलाने का दुख अतिबल॥तीनों०४

होय कदाच बाल विधवा तो जाय जन्म रोवत सारा।
मिले कुवल निर्धनी धनी तो, मौत नहीं दुःख का पारा॥
अति हीनादिक वय पति पाके तो न जाय फिर दुःख टारा।
रोगी वा पति मिले नपुंसक, तो महान दुख सिर भारा॥
मूढ़ अकर्ता चोर ज्वारी मिले, तो नित होवे कल कल ॥तीनों०५

जो भर्तार दरिद्री होवे तो अपार दुख क्या कहना।
वड़े कष्ट से उदर भरे अरु, फटे वस्त्र से तन ढकना॥
हो क्रोधी भर्तार कृतघ्नी, तो शोकाकुल तन में रहना॥
वृद्ध भये सुत बहू न माने बात,रात दिवस दुख को सहना।
बात कहत ललकारत सबही रोवे नेत्र भर के झलमल॥तीनों०६

वर्णन कहां तक करूं गुणी जन, थोड़े में समझो सर्वांग।
महादुःख की खान जन्म त्रिय, जान पराश्रय रहती तंग॥
दुर्व्यसनी व्यभिचारी त्रिय की, करें प्रशंसा मति के भंग।
जो नारी की खायं कमाई, सो सराहते त्रिय का अंग॥
पुत्री के ले दाम, चहें आराम, जीव के जो हैं चपल ॥तीनों ०७

महा नीच निर्लज्ज मूढ़ जन, त्रिय का धन चाहें खाने।
सो नारी को कामधेनु चिंतामणि के सदृश जाने॥
जो सज्जन सत्पुरुष सुधी सो वेद शास्त्र के अनुमाने।
लखे निन्द पर्याय त्रिया की दुख स्वरूप ताको माने॥
नाथूराम जिन भक्त कहे दुख रूप त्रिया पर्याय सकल ॥तीनों०८॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१ ॥ भजन ॥

अब तुम सांचा ही सत्गुरु हेरो,जासे मिट जाय भरम अंधेरो॥टेक
जियारे मछली पड़ी जाल के माहीं; ज्यों वगसे तन केरो।
चातुर होय सो बचके निकसे, मूरख ने कहा वेरो ॥अब तुम०१
काया रूपी कोठरी रे, करे मुसाफिर डेरो।
जब जम आन पकड़ ले जावे, साँज गिने न सवेरो ॥अब तुम०२
यो संसार असार जलधि में, को लग करूं वखेरो।
प्रेमि कहै प्यारे की अर्जी, कर्मों ने घालो घेरो ॥ अब तुम० ३ ॥

६२ ॥ सप्त व्यसनों की लावनी ॥

सप्त व्यसन दुख मूल जगत में, बंधवाते हैं नर्क गती।
व्यसनों में फस नक गए कइ राजा राणा छत्रपती ॥ टेक ॥
किन किन इनमें फंस दुख पाये, शिवनारायण गाते हैं।
कान लगा कर सुनो भव्य सब, कर्म नाश हो जाते हैं॥
बुधजन इनसे दूर रहत, विषधर सम इनको जान हिये।
यातें इनका त्याग करो, संयम व्रत लो सब आन हिये॥
इनका त्यागी मुक्ति पावे, गाते हैं सब जैन जती।
व्यसनों में फंस नर्क गये कई राजा राणा छत्रपती॥

१ ॥ जुआ खेलने से पांडवों ने दुख पाया ॥

पाँडव से बलवान जुआ वश, जग में अति दुख पाया है।
अर्जुन नारी द्रोपदि हारी, जिनमत ऐसा गाया है॥
भीम सरीसे गदा चलैया, अर्जुन से हैं गाण्डपती।
राजसभा में खिंचा चीर, दुख पाया चित में महासती॥
खड़े देखते भूमि कुचरते,भगवन ये क्या हुई गती।व्यसनों में०१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जुआ व्यसन से ऐसे योधा भी जग में शरमाते हैं।
महाभारत तो विजय किया,निज नारि बचा नहिं पाते हैं ॥
इस तरह इस द्यूत व्यसन बश नल राजा दुख पाया है।
राज सम्पदा नष्ट हुई, भाई ने वन भिजवाया है ॥
दमयन्ती सी नारि पुत्र तज, रथ हाँकत वे निषधपती।
व्यसनों में फंस नर्क गये कई राजा राणा छत्रपती ॥२॥

२ ॥ मांस भक्षण से वक राजा ने दुख पाया ॥

श्रुतपुर नगर विशाल एक था, वक राजा की रजधानी।
न्याय नीति में निपुण प्रजा प्रिय, सब बातों में लासानी ॥
थी कुटेव इक उसमें भारी माँस नित्य वह खाता था।
पाचक नित बजार मे लाकर, उसको पका खिलाता था ॥
एक दिना जब बाजार बन्द था, माँस मिला नहीं उसे रती।
व्यसनों में फंस नर्क गये कई राजा राणा छत्रपती ॥ १ ॥

पाचक को नहिं माँस मिला, तब दिल में अति घबराता है।
कर विचार समशान गढ़ा मृत, बालक का शव लाता है ॥
शव से माँस निकाल पका कर, नृप का थाल सजाता है।
वक राजा वह माँस खाय अति प्रसन्नता दिखलाता है ॥
पाचक से पूछा यह किसका माँस बनाया स्वाद अती ॥व्यसनों०२

रसोइया सुन बात नृपति की, सच्चा हाल बयान किया।
विषय लोलुपी अन्ध विषय का, तत्क्षण उसको हुक्म दिया ॥
रोज बने नर मांस, स्वाद इसके खाने में आता है।
राजाज्ञा पा पाचक पुर से, उठा बाल नित लाता है ॥
घटने लगे नित्यप्रति बच्चे,सोच प्रजा मन हुआ अती॥व्यसनों०३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाल उठाता पाचक इक दिन, प्रजा जनों ने पकड़ लिया।
मार पड़ी फिर खूब दुखी हो भेद नृपति का खोल दिया॥
कुपित हुए सब सुन पुरवासी, राज्य लक्ष्मी से रहित किया।
हुई प्रतिष्ठा भँग रिद्धि सब नास हुई वनवास लिया॥
वन में उसको मिला नहिं नरमाँस हृदय में दुखी अती॥व्यसनों०४

पाचक भी था साथ नृपति के,माँस हेतु किया उसका घात।
खाया मांस पका कर, लम्पट मन में सोची एक न बात।
देखो व्यसन वशी इम नृप का,आखिर में क्या हाल हुआ॥
वासुदेव के हाथों मरकर, नर्क गया फिर वह कुमती॥ व्यसनों०५

भरत क्षेत्र कांपिल्य पुर नगरी, भीम देव थे उसके नाथ।
सोमश्री थी उसकी रानी, भीमदास था सुत शुभ गात॥
कुल क्रम के अनुसार पर्व नन्दीश्वर ये नहिं हिंसा होय।
करे मुनादी धूम-धाम से, पुण्यवान सब माने लोय॥
इसी तरह से ढोंग रचाकर माँस खाय वो नित्यप्रति॥व्यसनों०६

३ ॥ मद्यपान से यादवों ने दुख पाया ॥

नेमिनाथ भगवान समय में, पुरी द्वारिका रिद्धि धनी।
छप्पन कोटि निवासी यादव, सभी सुखी सब महा धनी॥
एक समय श्रीकृष्ण चन्द्र भगवान नेमिसों पूछी बात।
द्वारावति अरु यादव कुलका, हो भविष्य सो भाखो नाथ॥
कृष्ण चन्द्र की सुनी बात,तब बतलाया सब बाल जती॥व्यसनों०१

द्वादश वर्ष गये द्वारावति, भस्म होय यादव कुल साथ।
दीपायन मुनि क्रोध करें, बलभद्र हरी बच हैं दो भ्रात॥
हरि चित में चिन्ता अति व्यापी, युक्ती एक विचार लई।
द्वारावति में थी मदिरा, पर्वत पर फिकवाय दई॥
मदिरा तो फिकवाय दई, पर मेट सके नहिं कर्मगती॥व्यसनों में०२

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गड्ढे में पृथ्वी पर पानी, पर्वत से बह कर आया।
वर्षा ऋतु का समय साथ जल, मदिरा अंश बहा लाया ॥
यादव बालक एक दिना, वन क्रीड़ा हेतु गये दश बीस।
लगी प्यास वह जल पीलीना, भावी थी भाखी जगदीश ॥
हुए मत्त वे जल पीते ही,लोप गई सबकी सुमती ॥व्यसनों ॥०३॥

दीपायन मुनि चतुर्मास कर, लख कर अन्त विहार किया।
अधिक मांसकी याद न आई, पुनि आकर तहँ निवासकिया॥
वे बैठे थे ध्यान मगन, यादव वालों ने लखि पाये।
यही नाश का कारण यदुकुल, मदिरा वश यह चितलाये ॥
नग्न दिगम्बर मुद्राधारी, तेज पूर्ण थी तीव्र रती ॥व्यसनों में०४॥

मत्त हुये उन बालों ने मुनि को, कुमती वश छेड़ करी।
शान्ति चित्त सुखधाम तपोधन,नहिं कछु चित में बात धरी॥
पर जब शिशुओं की अशाँतना, बढ़ी हृदय में आया रोष।
क्रोध युक्त हो लखी द्वारिका, लगी आग मदिरा के दोष ॥
द्वारावति यादव कुल जल गये, बचे भ्रात दोउ नशीरती।
व्यसनों में० ॥ ५ ॥

४ ॥ वेश्या गमन से चारुदत्त सेठ ने दुखपाया ॥

भरत क्षेत्र में चम्पा नगरी, एक समय अति भारी थी।
नदी ताल बहु कूप वापिका, उपवन की छवि न्यारी थी ॥
चारुदत्त नामी इक रहता, सेठ ताहि में महा धनी।
बत्तिस क्रोड़ सम्पदा का पति, रिद्धि अनेक प्रकारभनी ॥
भोगों से अनभिज्ञ पठन पाठन ही में थी अधिक गती॥व्यसनों०१

चारुदत्त के सासु ससुर लखि मन में दुख पाते थे।
नित्य नई तरकीब, नित्य प्रति समधन को समझाते थे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करो यत्न ऐसी जो दवाई, विषय भोग में फंस जावे।
माता तब ही बात सोच, बुलवा देवर को समझावे॥
दोनों ने हित हेतु राह सोची, सोच सके नहिं करमगती।
व्यसनां में० ॥ ४ ॥

चारुदत्त को साथ लेय काका विहार को जाते हैं।
वेश्या के गृह के समक्ष आ, गज का भय दिखलाते हैं॥
मत वाला हाथी आता है कह गृह में घुस जाते हैं।
चारुदत्त को बिठा आप उस वेश्या को समझाते हैं॥
बसंतसेना ने देखा है, मूढ़ नहीं है लेश मती ॥ व्यसनों में० ३

वेश्या ने चौपड़ लगवाई, चारुदत्त के खेली साथ।
धोके से मद पिला दिया, मद मत्त रहा तहां सारी रात॥
एक रात वेश्या गृह में रहते ही, बुद्धि का हुआ विनाश।
मोह जाल फंसकर वेश्या के बारह वर्ष रजा गृह वास॥
वेश्या में लवलीन रात दिन, काम काज से चाह घटी॥व्यसनों४

क्रोड़ों की घर सम्पति जो थी, नित मंगवाते जाय घटी।
भूषण वसन लखे जब आते, वेश्या उर से प्रीति हटी॥
मन में समझा भया दरिद्री, भूषण वसन लगे आने।
भृकुटि चढ़ा दिखला विरक्ति, इक दिन पटका पैखाने॥
शिवनारायण लखो होय, वेश्या राचे क्या बुरी गती॥व्यसनों०५

राजा के प्रहरि ने लखि कर, सावचेत कर समझाया।
वेश्या का व्यवहार देख हो दुखी आपने घर आया।
मात भार्या लखी दरिद्री, दशा देख अति दुख पाया॥
धन की वाँछा चित्त लिये, तत्काल आप बन में धाया।
पड़ा जाल सन्यासी के; तहाँ गिरा कूप में हुई कुमति॥व्यसनों०६

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ५ ॥ शिकार से ब्रह्मदत्त चक्रवर्ति ने दुख पाया ॥

चक्रवर्ति श्री ब्रह्मदत्त का हाल सुनो सब नर नारी।
छहों खंड का नाथ रत्न चौदह निधियें नो भारी ॥
चेतन सातरु सात अचेतन, सेवा जिनकी देव करें।
क्रोडचौरासी हाथी जिनके, अश्व अठारह क्रोड खरे ॥
प्यादे चवरासी क्रोड़, गौयें त्रय क्रोड़ सुनो सुमति। व्यसनों ।१।

क्रोड़ चौरासी रथ थे घर में, रिद्धि सिद्धि यूंही पड़ी सड़े।
सहस बत्तीस मुकुटयुत राजा, सेवा में कर बद्ध खड़े ॥
बत्तीस सहस देश पुनि, अठारह सहसम्लेच्छ नृपद्वार अड़े।
शिवनारायण ऐसे ऐसे व्यसन वशी जा नर्क पड़े ॥
नेमिनाथ भगवान अहिंसा धर्म सुनाते जगत पति। व्यसनों ।२।

व्यसन शिकार इसे भारी था, नित शिकार को जाता था।
मूक दीन प्राणी नितप्रति, नाहक खून बहाता था ॥
अपने मन रंजन का अर्थी, भारी पाप कमाता था।
नीच लंपटी नर्क गति का जरा न भय लाता था ॥
सप्तम नर्क लहा मर आयु, तेतिस सागर भणीयति। व्यसनों ।३।

॥ ६ ॥ चोरी करने से शिवभूत ने दुख पाया ॥

चोरी व्यसन महा दुखदाई, पत नहिं कोई जग बीच करे।
जहाँ जाय अपमान होय, पुनि अंत समय में नर्क परे ॥
पूर्व काल कौशाम्बी नगरी, न्याय नृपति की रजधानी।
नाम सिंहरथ राजा का, अरु विजया थी उनकी रानी ॥
साधु भेष में चोर वहाँ, शिवभूत नाम रहे पाप मती। व्यसनों ।१

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बटका वृक्ष समीप ग्राम के था, अतिशीतल थी उसकी छाया।
ठगविद्या में बड़ा निपुण, फैलाई वह अपनी माया॥
उसी वृक्ष पर साधु रूप धर, इसने झूला लटकाया।
दिवस समय झूले में वैठे, देख जगत बहु चकराया।
धरा पराई काम न ले, गुरू ऐसे हैं ये बड़े यति। व्यसनों॥२॥

धरा तलक उपयोग करें नहिं, परधन छूना पाप गिने।
चेलों की सुन बात, भक्ति नर नारि करें बहु रात दिने॥
सिक्का अच्छा जमा वहाँ पर सरधा सबको हुई भारी।
चोरी करने लगा दुष्ट, नरकों की बस करली त्यारी॥
दिवस साधु निशतस्कर बन करता, वह चोरी रोजमती। व्य०।३।

कई दिनों तक इसी तरह वश, चलती रही उन्हों की चाल।
एक दिना इक ब्राह्मण कारण, उनकी राखी माल संभाल॥
रात्रि समय वन अंधटिका, तहं पता पाय प्रहरीसों कही।
प्रहरी भी लख पकड़ ले गया, राज सभा में सजा ठई॥
चोरी वश फांसी से मृत्यु हुई, नर्क गया वह कुमतमति। व्य०।४

॥ ७॥ परस्त्री से रावण ने दुख पाया ॥

तीर्थ काल मुनिसुव्रत प्रभु के, लंकपती था रत्नश्रवा।
रानी उसकी केकसी के, गर्भ दशानन जन्म हुआ॥
अर्ध चक्र का धारी रावण, विद्याधर अतिवीर बली।
ज्ञान वान अति नीति विचक्षण, काम वासना बुद्धि रली॥
अष्टम था प्रतिनारायण पति तीन खंड का हरी मती। व्य०।१।

रामचन्द्र भी उसी समय, अवधेश के गृह अवतार लिया।
नारायण लक्ष्मण भी उपजे, दशरथ का हुलसाय हिया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कालान्तर में हुए युवा, तब दशरथ के मन यह आया।
रामचन्द्र को राज्य देय दीक्षा ले तज दे सब माया॥
एक दिना शुभ मुहूर्त आया, राज तिलकका मोद अती। व्य० ।२।

कर्म योग केकई मति बिगड़ी, पतिसों तब यह बात भखी।
नाथ याद है बात या नहीं, बचन दोय हम थातिरखी॥
हो प्रसन्न मुख दशरथ बोले, दोय कहा मांगो दस बीस।
आज खुशी का दिन अतिभारो, बड़े भाग्य दीना जगदीश॥
सुनकर वचन केकई बोली, नाथ चहूं मैं मम थाती। व्य० ॥३॥

दशरथ को लखि प्रसन्न केकई, मुखसों यह उच्चार किया।
चौदह वर्ष राम वन जावें, राज भरत को देवो पिया॥
सुनकर वचन दुखी हो नृप ने, केकई को बहु समझाया।
कर्म गति बलवान केकई के, मन कुछ भी नहिं भाया॥
रामचन्द्र वनवास चलें, संग लक्ष्मण और हुई सीयसती ।व्य।४।

सूर्पनखाके हेतु लखन ने, खरदूषण से ठाणी रार।
रक्षाहित संकेत राम को, समझाया वश जातीवार॥
उसी समय रावण भी वन में, क्रीड़ा करने आया था।
काम वाण से त्रिधा दशानन जो लखिपाई सीयसती। व्य० ॥५॥

सिंहनाद संकेत लखण का, विद्यावल से जान लिया।
निश्चय रामचन्द्र रक्षा हित, जावेंगे यह मान लिया॥
सिंहनाद तत्काल किया, सुन रामचन्द्र घबराते हैं।
सीता को समझाय, लखन की रक्षा को फिर जाते हैं॥
रामचन्द्र को जाता लखि, लाया विमान बिन ढील रती ।व्य०।६।

पक्षी जटायु प्रहरी था, आते ही आहट उसे किया।
सीय हरण कर काम लोलुपी, जगमें अपजस मोल लिया॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम लोलुपी नीच लंपटी, ला मेली सिय लंकपुरी।
कामवाण से भिद कर रावण, सोची नहिं कुछ भली बुरी॥
हित मित पुरि जन सब समझावत, दश कंदर मति हरी मती।७।

महा सती मंदोदरि रानी, रावण को वहु समझाया।
सीता पीछी देहु नाथ, नहिं काल शीश तुमरे आया॥
वे बलभद्र नारायण दोऊ, छिण नाश करेंगे माया।
मानी एक न बात लंकपति, अन्त नाश सव करवाया॥
लक्ष्मण के हाथों से मरकर, नरक तीसरे अधोगती। व्य० ॥८॥

सागर सात आयु वहां की, वड़े वड़े फँस जाते हैं।
फिर तेरी हस्ती कितनी सी, रावण से नश जाते हैं॥
शिवनारायण करे अर्ज, जो इन चित्त हटाते हैं।
कर्म काट वे जीव जगत से, निश्चय मुक्ति पाते हैं॥
पक्ष उजारी भाद्र मास की चतुर्दशी है वृहस्पतिवार।
उन्नीस सौ पिच्चानो, विक्रम पूर्ण लावनी को सुखकार॥
बुद्धीहीन शिव समझ भूल सव, क्षमा करहु मोहि महामति।
व्यसनों में फँस नर्क गये कई राजा राणा छत्रपति ॥६॥

॥ ६३ ॥ परनारी से ॥ लावनी ॥

परनारी से दूर रहो पर नारी नागिन कारी है।
नर्क निशानी है रुधर्म का पंथ विगारन हारी है ॥टेक॥

इत्र सुगंध फुलेल लगाकर, अंग दिखावन हारी है।
बड़े ढोंग से मुफ्त जनों का माल उड़ावन हारी है॥
ऊपर चमक दमक अति सुन्दर, मोह जगावन हारी है।
दीप शिखासी अधम नरक में, जंतु जरावन हारी है॥
संत जिन्हों से दूर रहें, हजार पुरुष की नारी है। नरक ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊपर कोमल वचन सुधा सम, बोल बोल मन ललचावे।
उर अंतर में कभी किसी की, नहीं कभी खातिर लावे ॥
मूरख मोही सदा सर्वथा, मन लगा लगा कर बतलावे।
धर्म गमावन हारा पावे, इष्ट दुखी हो बिललावे ॥
परनारी की प्रीति सबनको, दाग लगावन वारी है। नरक ॥२॥

चितवन वक्रसम, फणी विषधरी, विषकी बुझी कटारी है।
लागे उसको उसी समय से, करे कुमति की त्यारी है।
लगे दूर से चोट ओट, फिर खून सुखावन हारी है ॥
घायल होके हरि हर ब्रह्मा, अपनी बुद्धि बिसारी हैं।
कठिन कटारी अजसकी फाँसी, सज्जन ने परहारी है। नरक॥३॥

पर वस दीन बने जस खोवे, नाहीं ज्ञानरु ध्यान रहे।
जोवन छीजे बुद्धि बल रूप, जहाँ चतुरपन नाहिं रहे ॥
धीरज साहस अरु उदारता, सुविध धर्म मन नाहिं रहे।
एक शील बिन हों सुगुण दूर सब सूर पन नाहीं रहे ॥
कहें जिनेश्वरदास सर्वथा, दुख समुद्र पर नारी है। नरक ॥४॥

॥ ६४ ॥ भजन ॥

जगत स्वप्ने की माया, मूरख यामें वृथा लुभाया।
माया जाल के दूर करन को भेद बताया रे ॥ टेक ॥

रंक एक को स्वप्ना आवे, लाख करोड़ बहुत धन पावे।
मनही मनमें क्षणिक लुभावे, फिर दुख पाया रे। जगत ॥१॥

स्वप्ने में इक शत्रू भारी, नृप की संपति छीनी सारी।
दारुण दुख लहि जाने वो, स्वप्ने की छाया रे जगत॥ २ ॥

मनुष जन्म है लंबा स्वप्ना, आतम रूप संभालो अपना।
इस स्वप्ने का काल बली ने अंत कराया रे। जगत ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नया स्वप्न फिर आगे आवे, जीव तहाँ सुख दुख फिर पावे।
यों अनादि से जीव सकल संसार भ्रमायो रे। जगत ॥४॥
ज्ञानी इस में कबहुं न रमता, कर्म काट के पावे भ्रमता।
नानू तू भी मोह त्याग, सत्गुरू यों गाया रे। जगत॥ ५ ॥

॥ ६५ ॥ लावनी ॥

कर्म महा बलवान सुनिये सरस कहानी।
निश्चल मन को धार, सार लखिये बहु ज्ञानी ॥ टेक ॥
एक शिकारी भील, तीर ले वन में आयो।
हाथ न आयो जीव, सर्व दिन भ्रमत गमायो ॥
सांज समय जल तीर वृक्ष चढ़ बैठा शिकारी।
दैव योग वहाँ एक आयो मृग वन चारी ॥
जल पीवत मृग देख, पारधी बाण उठायो।
मृग जान्यों निजकाल, वचन अतिदीन सुनायो ॥
करुणा करिये नाथ सुनिये अर्जी मेरी।
पुत्र भयो मेरे आज, प्रसूती हिरणी मेरी ॥
उसको आयो छोड़ वचन कह तुम पर आऊँ।
करियो फेर शिकार घड़ी दो जीवन पाऊँ ॥
बोलो मृग से भील, गर्भिणी घर मेरे नारी।
भोजन घर में नाहिं, करे वो मेरी ख्वारी ॥
मरणे को जग माँहिं, गयो फिर आवत नाहीं।
तू मृग पशु की जाति, प्रतिज्ञा जानत नाहीं ॥
बोल्यो मृग सुन नाथ, वचन में सत्य उचारूं।
जो नहिं आऊं पास, कुगति गति निश्चय पाऊं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चाल्यो मृग कर कोल, दौड़ निज घर पै आयो ।
घरमें हिरणी नाहिं, अकेलो बालक पायो ॥
बालक पर अति प्रेम, उठा कर कंठ लगायो ।
ले बालक को गोद, हिरणी हेरन आयो ॥

हिरणी पीवन नीर, तीर वहाँ जल की आई ।
देखी वधिक शिकार, धनुष प्रत्यंच चढ़ाई ॥
हिरनी कहे सुन नाथ, सुनिए अर्जी मेरी ।
बालक दूध पिलाय, तुर्त आऊँ मैं नेरी ॥

मेरा पति घर नाहिं, भोजन लेवे आयो ।
ढूंढ फिरी बन माहिं, तो भी अजहुँ न पायो ॥
बालक भूका छोड़, निर्दयी मैं यहां आई ।
हुकम करो अब मोह, आऊं दूध पिलाई ॥

कहे पारधी भील, झूठ क्यों हिरणी बोले ।
गयो एक कर कोल, वो मृग बन में डोले ॥
मानूं अब न करार, हिरणी तू है नारी ।
छोड़ूं आई शिकार, मो सम कौन अनाड़ी ॥

हिरणी कहे सुन नाथ, सच्ची सौगंध खाऊं ।
जो नहिं आऊं पास, तो नरकों में जाऊं ॥
यों कह हिरणी आय, बालक घर नहीं देखा ।
पड़ी भूम मुरझाय करे मन ही मन लेखा ॥

हाय कहां मेरा पुत्र, कोऊ जंतु खाया ।
अति लोभी भरतार, घर पर अजहूं न आया ॥
अहो मौत बलवान, जग की अद्भुत माया ।
कौन पुत्र पति भ्रात, मन स्वप्ने ज्यों लुभाया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हृदय धरूं भगवान, देह को तुर्त तजूंगी।
छाँड़ू प्रतिज्ञा नाहिं, सत्य मन माहिं धरूंगी॥

हिरणी यों मन धार, मारग देखन लागी।
देख्यो पति सरताज, उनको रोकन भागी॥

हे पति सुन मेरी बात, ताल पर तुम मत जाओ।
वहाँ पारधी भील, अपने प्राण बचाओ॥

सौंपो बालक मोहि, दूध पा घर ले जाओ।
रेन दिवश रख पास, अब तुम इसको जिवाओ॥

हे बालक पियो दूध, मइया फिर नहिं पावे।
मइया मानो बाप, कंठधर गोद खिलावे॥

यों कह हिरणी रोय, पति को बालक सौंपा।
कह कर पकड़ी राह पारधी चल न समीया॥

बोल्यो मृग यों बात, सुन हिरणी मेरी रानी।
कर्म महा बलवान, कर्म की गति नहिं जानी॥

तुम जाओ घर माहिं, संग बालक ले जाओ।
मात पुत्र दो जीव, सुख से दिवश गमाओ॥

आओ पुत्र सुन बात, मात की आज्ञा राखियो।
रैन दिवश सब काल, पितु सम माता लखियो॥

आओ पुत्र मम पास, फिर तोह कंठ लगाऊं।
जोवे पारधी वाठ, अब मैं उस पर जाऊं॥

यों कह वो मृग दीन, पुत्र तज चालन लाग्यो।
आगे हिरणी जात, देख यों पूछन लाग्यो॥

हिरणी कह सुन नाथ, मैं दृढ़ मेरे प्रण में।
तुम मृग अपनी निभाय, मैं दृढ़ मेरे प्रण में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रण के पूरण काज, तुम हम दोनों आओ।
सुनो पारधी भील, अब क्यों देर लगाओ॥

मृग हिरणी अरु पुत्र, पारधी दृढ़ मन देख्या।
लज्जित हो मन माहिं, ज्ञान निज घट का पेख्या॥

धृग धृग जग में मोह, जीव हिंसा को आयो।
धन्य पशु मृग तोहि, धर्म रूच्चा दरसायो॥

मैं नहिं मारूं तोहि, तू है सत्गुरु मेरा।
हुआ ज्ञान अब मोहि, गया मिथ्यात्व अंधेरा॥

तू मृग पशु की जाति, धर्म को अति दृढ़ जान्या।
मैं मानव तन धार, धर्म का मर्म न जान्या॥

हुआ अब परभात, गुरु पै दिक्षा धारूं।
तप संयम धर ध्यान, महा रिपु कर्म पछारूं॥

चेतन पूंछू तोहि, पारधी मृग अब को है।
सत्गुरु कहे पुकार, वृथा क्यों जग में मोहे॥

ये संसारी जीव, जग में मृग सम डोले।
माया हिरणी साथ, ममत सुत सों मन खोले॥

भवसागर जलतीर, पारधी भील खड़ो है।
धर्म प्रतिज्ञा सत्य, धर्म सबसे ही बड़ो है॥

याते गहिये धर्म, कर्म रिपु नाशन कारण।
नौका सम जग माहिं, धर्म वहु सिंधु उवारण॥

चोथमल्ल सिरनाय, प्रणमूं श्री जिनवाणी।
कर्म महा वलवान, कर्म की गति नहिं जानी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ६६ लावनी

मान करो मत मूल मानमें हानि तेरी होगी निश दिन।
जिन जिन कीना मान प्राण तज गये यार वो भी नरकन।टेक॥
मान करो लंकापति रावण नारि राम की हर लाया।
समझाया वहु लोग कुटुम ने, नहिं मानी हट में आया॥
नाश किया कुल जग में अपना, अजस बांधकर किया मरण॥
जिन जिन० ॥१॥

भरत चक्री है जाहिर जग में, राज किया तिन ने छह खंड।
इन्द्रसार की विभूति जिनके, बलकर पूरण है गुणवंत।
युद्ध किया वाहुवलि जी से, लड़े दोई ठोके भुजदंड।
उठा लिया वाहुवलि जी ने, चरम शरीरी हते प्रचंड।
भरतेश्वर का मान भंग कर, द्रग जानी मुनि हरो नगन॥
जिन जिन० ॥२॥

राजा अकपन रच्यो स्वयंवर, आदि समय में आनद पूर।
देश देश के भूपति आये, उठी गगन में छाई धूल।
माल परो जब कुंवर गले में, उतर गये सबके मुख नूर।
अर्ककीर्ति के मान भरा था, जेठासुत चक्री का सूर।
नाश किया कुल जग में अपना, आखिर को फिर हारा रण॥
जिन जिन० ॥३॥

मान नर्क की खानि, ऊंच से नीच करे अरु वुधि नाशे।
ज्ञान ध्यान होने नहिं पावे, नाना विधि के रंक फंसे।
यह विचार नर अपने मनमें, कर विचार बिगड़े आवे।
पड़ी आत्मा के वश चेतन, यामें सुख कछु नहिं पावे।
कहते लछमण सिंगइ, मानको तजो, करो तुम प्रभु भजन।
जिन जिन० ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ६७ ॥ लावनी ॥

मानुष पर्याय गमाई, रत्नत्रय निधि नहिं पाई।
भयो चार प्राण को धारी, दुख वर्तत रसना हारी।
श्री जाने केवल धारी।
रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥ टेक ॥

झेला–एक श्वास में जन्म मृत्यु, दश आठ बार कर लिया जी।
लट पिपील अधि आदि असैनी भुगतत भुगतत गया जी ॥

दोहा--कथा जहां के दुःख की, सही अनंती वार।
काल अनंत वसो जहाँ, चेत चेत चित पार।
श्री गुरु ने राह बताई।
रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥१॥

जव पाप उदय जिय आवे, तव निन्द नरक गति पावे।
थिति सागर बंध कमाये, कर्मन वश काल खिपाये॥

झेला--छेदन भेदन ताड़न तापन, सूलां रोपण किया जी।
असुर लखाया वैर जहां, जिन मार मार निज किया जी ॥
सिंडासन से ओंठ फार मुख तामो शीसो दिया जी।
जहां चितारत हाय हाय, यह कौन पाप हम किया जी।

दोहा—कथा जहाँ के दुःख की, कहे कहाँ लो कोय।
के जाने जिन केवली, के जाने जिय वोय।
याद मोहि नरकों की आई।
रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥२॥

रह गर्भ माझ दुख भीनो, सो मोपर जात कहीनो।
झेला--बालापन अज्ञान दशा में, धर लिया ज्ञान नहिं रंचजी।
तरुणपने तरुणी संग राच्यो, इन्द्री विकल भई है पंच जी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विकल दशा धर वृद्धपने में क्रियो पुन्य नहिं रंच जी ।
तीनों पन ऐसे वीत गये ज्यों ज्ञान विना तिर्यंच जी ॥

दोहा—तीनों पन ऐसे गये मिलो न सम्यक भेद ।
देव धर्म गुरु ग्रन्थ बिन, भव भव पायो खेद ।
शैली विन वुद्धि नशाई ।
रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥३॥

कोई पूर्वे सुकृत कीना, क्रम क्रम कर सुरपद लीना ।
लोकोत्तम भोग नगीना, सुरत्रिया समूह रस भीना ।
कभी जिनालय जाय सुरन संग पूजा जिनको करी जी ।
मेरू आदि नंदीश्वर वंदे, धन्य धन्य जा घड़ी जी ।
सागर वंधप्रमाण जहाँ थिति, सुखमय संपति भई जी ।
आयु अंतमाला मुरझानी, लखि उर आर्त धरी जी ।

दोहा—नरक वास सम्यक सहित भलो कह्यो जिनराज ।
सुरपद पाय कहा कियों, भ्रम एकेन्द्री ब्याप ॥
अब चेत चेत चित भाई ।
रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥४॥

दृग बोध चरित्र विचारो, सम्यक को भूल विसारो ।
रागादि सुभट मद मारो, फिर आतम तत्व विचारो ।

झेला--अविनाशी आनंद स्वरूपी हुए चेतना राम ।
अलख अकथ अविनाशी है ये सिद्धन को धाम ।
निर्विकार निर्वार कर्म सब, विमल अनल शुभ ठाम ।
स्वपद रचत जे धन्य धन्य, तिनको ले करत प्रणाम ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—यह विनती सबसे करूं जिनशैली के भ्रात।
रत्नत्रय रस पान कर, वसन करो मिथ्यात्व।
जिन ध्वनि सुन कुमति नशाई।
रत्नत्रय निधि नहिं पाई॥५॥

॥ ६८ लावनी ॥

देखो काल प्रभाव आज पाखंड जगत में छाया है।
जैनधर्म को पाखंडो लोगों ने दाग लगाया है॥ टेक॥

जग जाहिर अरहंत देव निर्ग्रन्थ गुरु हैं जिनमत के
दया धर्म है, अरु जिनागम सत्य वचन है जिन मत के
इन्हीं को जाने माने श्रद्धान करें जन जिन मत के,
सिवा इन्हों के और को कभी न माने जिन मत के
इनको तज अज्ञानों ने मन कल्पित ठाठ बनाया है। जैनधर्मको॥१

कोई बने कलयुगी अचारज आर्जव धर्म विसार दिया,
महन्त होके धर्म के कामों में यह इखत्यार किया।
पहले नग्न दिगम्बर होके फिर वस्त्रादिक भार लिया।
परिग्रह तज के वनज व्योपार व्याज का कार किया।
देखो हीन आचरण करके भक्तन को सरमाया है। जैनधर्म० ॥२॥

कोई भोले जीव जिन्होंने जिन शासन को नहिं जाना।
जो कुछ जैसी कही किसी ने ,वही उसी को सच माना।
खान पान लड़ने में चातुर पढ़ने में मन अलसाना।
क्रोधी मानी लोभ मोह वश लिया कृपणता का वाना।
हाय हाय ऐसे जीवों ने नर भव वृथा गमाया है॥जैनधर्मको॥३॥

कोई उद्यम हीन दीन नर पेट काज भये ब्रह्मचारी।
खान पान को मिला खूब तब धरयो भेष स्वेच्छा धारी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूंछे पर वह जवाब दें हम इतने ही दिन व्रतधारी।
धृक धृक उनको धर्म पद छोड़ भये जे गृहचारी।
सुनिये देव जिनेश्वर अर्जी यह कलियुग की छाया है। जैनधर्म ।४

।६६ लावनी गृहस्थाचार की ॥

उत्तम नर जिनमत को धारे सो श्रावक कहलाते हैं।
कोई उन्हीं में गृहस्थाचारज का पद पाते हैं ॥ टेक ॥

गर्भादिक संस्कार क्रिया जे सभी कराने का अधिकार,
जिन ग्रह प्रतिमा प्रतिष्ठा तथा धर्म के काम अपार।
व्रत विधान की सभी प्रक्रिया अथवा प्रायश्चित पर आचार
गृहधर्मी को करावें इस भव परभव हित व्यवहार।
धर्म क्रिया को करते करते, जो उत्तम कहलाते हैं।
उत्तम नर जिनमत को धारे सो श्रावक कहलाते हैं ॥१॥

क्रिया विशेष गृहस्थाचारज करते जिनका सुनो बयान।
जाके सुनते समझले सर्व हाल को चतुर सुजान।
दीक्षान्वय अवतार क्रियामें ग्रहन करे जिनमत सुखदान
चौथा दर्जा त्याग कर कुदेव पूजन निंद्य महान्।
श्री अरहंत देव के पूजक सद्ग्रहस्थ कहलाते हैं।
उत्तम नर जिनमत को धारे सो श्रावक कहलाते हैं ॥२॥

व्रत का चिन्ह जनेऊ धारें नवमी क्रिया विषे व्रतवान।
फिर क्रम क्रम से पन्द्रमी क्रिया लहे उपनीत महान।
प्रायश्चित शास्त्र के ज्ञाता जानत नय निक्षेप प्रमान।
सो बड भागी गृहस्थाचारज अरु जानो सम्यकवान।
सभी गृहस्थी उनको माने जो श्रावक कहलाते हैं॥
उत्तम नर जिनमत को धारे सो श्रावक कहलाते हैं ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमत आदि पुराण शास्त्र में उन्तालिसमा है अधिकार
दिज्ञान्वय की क्रिया उपनीत विषे देखो निर्धार।
गुण लक्षण पहिचान सुधीजन यथा योग्य करते व्यवहार
बिना परख के धर्म अरु धन खोवें मूरख जीव अपार।
यही जिनेश्वर की आज्ञा है जो श्रावक उर लाते हैं॥
उत्तम नर जिनमत को धारे सो श्रावक कहलाते हैं ।। ४ ।।

॥ ७० लावनी ॥

कर्म उदय अनिवार जगत में सभी जीव भरमाये हैं;
कर्म उदय की इसी चाल में बड़े पुरुष भी आये हैं ।।टेक।।

युग के आदि तीर्थंकर स्वामी छह महिना बिन असन करे।
कर्म उदय से प्रभु सुपारस पारस जिन उपसर्ग सहे॥
कर्म उदय चक्री पद पायो भरतेश्वर बहु सुक्ख लहे।
कर्म उदय से ही उन्होंने मान भंग के दुक्ख सहे॥
रेखता--जो आदि कुलका तिलक क्षत्री अर्ककीर्ति कुमार है।
भरतेश का बेटा बड़ा युवराज नृप सिरदार है॥
पर नारि काज अकाज सो क्या करे अपयश कार है।
यह कर्म की कर्तव्यता जग में बड़ी अनिवार है॥
बहुत बार जग जीव कर्म ने बहुत भाँति भटकाये हैं।
कर्म उदय० ॥१॥

कर्म उदय दशरथ राजा ने रघुवर से सुत पाये हैं।
कर्म उदय से उनहीं को तब वन के वास कटाये हैं॥
लक्ष्मण के रावण की शक्ति लगी राम घबराये थे।
कर्म उदय से पवन सुत नारि विशाल्या लाये थे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रेखता--फाँसी लगाके वन विषें वनमाल जिसकी चाह में।
मरती वही लक्ष्मण तहाँ विधि योग पहुंचे राह में॥
संबूक ने बारह वर्ष साधा खंग दुख पाय के।
विधि जोग सो सहजहि लियो लक्ष्मण हाथ वढ़ायके॥
तिह असीसे संबुक कुंवर ने बनमें प्राण गमाये हैं।
कर्म उदय० ॥२॥

कर्म उदय पाण्डव बहु भटके अपने नाम छिपाये थे।
देश देश में उन्होंने तब नाना रूप बनाये थे॥
बारह वर्ष सहे दुख भारी भोजन भी नहिं पाये थे।
कर्म योग से विप्र वहाँ वनपाल ग्वाल कहलाये थे॥

रेखता--विधि योग नंगे पग चली वह विकट वनकी वाटमें।
सतवंत रानी द्रोपदी मालिन बनी वेराट में॥
अति विकट रन कर राज पायो आपनो हरि साथ में।
विधि योग फिर भी देश छूट्यो कर्म नहिं निज हाथ में॥
क्या कोई तदवीर करे नर पदवी धर घबराये हैं।
कर्म उदय० ॥३॥

नगर शेठ कोटीध्वज घरमें जन्म हुआ सो सेठ कुमार।
कर्म उदय से व्यसनों में अरु खोया सारा द्रव्य अपार॥
कर्म उदय पर देश भ्रमन में रहा न बाकी दुःख लगार।
पुण्य कर्म से उदय उसी ने फिर भी पाया निधि भंडार॥

रेखता--कर्म ही से राज पावे कर्म तावेदार है।
कर्म ही से रंक बनकर फिर बने सिरदार है॥
जितनी अवस्था कृत सो नहीं निज इकत्यार है।
वह धन्य है संसार में जो करे आप सम्हार है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्म जीत पद लहे जिनेश्वर वे जगदीश कहाये हैं।
कर्म उदय अनिवार जगत में सभी जीव भरमाये हैं ॥४॥

॥ ७१ ॥ पद ॥

करम वश चारों गति जावे, जीव कोई संग नहिं आवे ॥ टेक ॥
अकेलो स्वर्गों में जावे अकेलो नर्क धरा पावे।
दोहा—बूढ़ा होवे आप ही, थर हर काँपे देह।
बल वीरज जासों रहे, धरके तजें सनेह ॥
गेह तज द्वारा में ल्यावे।
जीव कोई संग नहीं आवे ॥ १ ॥
उदय वश रोग जबै आवे, बहुत फिर मन में पछतावे।
इक छिन थिरता नहिं पावे, कुटुम्ब सब बैठो विललावे ॥
दोहा—चले दवाई एक न, किये बड़े उपचार।
कोई काम नहिं आवहि, गये वैद्य सब हार ॥
विपति में बहु विध विललावे।
जीव कोई संग नहीं आवे ॥ २ ॥
अकेलो मरण दुःख पावे, अकेलो दूजी गति जावे।
अकेलो पाप किये धावे, अकेलो धर्मी कहलावे ॥
दोहा—पाप उदय बन नारको, दुखी रहे दिन रात।
पुण्य उदय सब संपदा, लहे अकेलो भ्रात ॥
सुखी सुर गति में कहलावे।
जीव कोई संग नहिं आवे ॥ ३ ॥
अकेलो मिथ्या पर हारी, अकेलो समकित उर धारी।
अकेलो कर्म सभी टारे, अकेलो अक्षय पद धारे ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—यही अकेलो जगत में, यही आतमाराम।
कही जिनेश्वर देव जी, गई सुवुधि गुण धाम ॥
स्वांहित निज संपति दरसावे।
जीव कोई संग नहिं आवे ॥ ४ ॥

॥ ७२ ॥ पद ॥

कोई नहिं शरण सहाय जगत में भाई।
मोही नहिं माने सुगुरु वचन सुखदाई ॥ टेक ॥
ज्यों नाहर पगतल पड्यो, हिरण विललावे।
त्यों जीव कर्म वश पड्यो बहुत दुख पावे ॥
या जगत विषे अति वली इन्द्र नश जावे।
हरि हर ब्रह्मा को कालग्रास कर जावे ॥
तव और कौन अव होगा शरण सहाई। मोही नहिं ।१।
जब कर्म उदय दुख होय, जीव विललावे।
तिह वार अनेक प्रकार यत्न करवावे ॥
विन पुण्य उदय के दुख का अन्त न आवे।
सब जन्त्र मन्त्र औषधी विफल हो जावे ॥
कोई राख सके नहिं, जीव देह तज जाई। मोही नहिं ॥२॥
जब आवे आयु का अन्त, मरण तव होवे।
मूरख मन में पछताय, वहुतसा रोवे ॥
विपरीत काम कर वीज पाप का बोवे।
सब देवी देव मनाय, धर्म निज खोवे ॥
नहीं कभी किसी ने, किसी की आयु बढ़ाई। मोही नहिं ।३।
ग्रह व्यंतर भैरव यक्ष योगनी माता।
मिथ्यात्व भाव वश, निशदिन तुम्हें मनाता ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहिं पावे मनका इष्ट, दुखी विललाता।
तौ भी नहिं छोड़े, निंद्य टेव दुख दाता॥
जग माहिं जिनेश्वर, शरण सदा सुखदाई। मोही नहिं ।४।

॥ ७३ ॥ पद ॥

करमगति टारी नाहिं टरे।
जंत्र मंत्र तंतर नहिं लागे भूलो हि खेद करे॥ टेक॥

सेठ सुदर्शन प्रतिमा धारी, शूली ताह धरे।
श्रीपाल से सुध समदृष्टि सागर माहिं परे। करम ॥१॥

रावण राय बड़ो अभिमानी, मरतहिं नर्क पड़े।
छप्पन क्रोड़ परवार कृष्ण का, वनमें जाय मरे। करम ॥२॥

रामचन्द्र तो शिवके गामी, वन वन भ्रमत फिरे।
सीता नारि सतिनमें शिरोमणि, जलती अग्निपरे। करम ॥३॥

भरत वाहुवलि दोनों भ्राता, कैसे युद्ध करे।
हनुमान की माता अंजनी, वनमें दुःख सहे ॥४॥

पाण्डव पुत्र अर्जुन की त्रिया, जाको चीर हरे।
कृष्ण रुकमणि का सुत प्रद्युमन, जन्मत देव हरे। करम ।५।

कित फँदा कित रहत पारधी, कितहु मृग्य चरे।
कहा जमी को घाटो पड़ गयो, फंद में पाँव धरे। करम ।६।

कहाँ लग साख दीजिये इनकी, लिखतहि ग्रन्थ भरे।
भूधर प्रभु जी से अज करत है, आवागमन हरे। करम०॥७॥

॥ ७४ ॥ भजन ॥

जब से जिन मत को तजा, हिंसक ज़माना हो गया।
सबके दिल से भाव करुणा का, रवाना हो गया॥ टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झूठ, चोरी अरु ज़िनाकारी है अधिक बढ़ गई।
हृदयसे गुजर पाप करते आप, कलियुग बहाना होगया ॥१॥
जीव हिंसा जिसमें है, उसको कलाम ईश्वर कहे।
हाय भारत आजकल, बिलकुल दिवाना होगया ॥जवसे॥२॥
याद रखिये जीव हिंसा से, नहीं होगी निजात।
लाखोंकी हिंसा जो करें, नरकोंमें जाना होगया ॥जवसे ॥३॥
इक दया से दूसरे भी, आपके हो जायँगे।
देख लो हिंसा से, भारत यह विगाना हो गया ॥ जवसे ।४।
भाई से भाई जव लड़ें, हरगिज दया आती नहीं।
फूट का दिल में तुम्हारे, क्यों ठिकाना होगया ॥ जवसे ।५।
न्यायमत अव तो दया का, भाव दिल में कीजिये।
हिंसा करते करते तो, तुमको जमाना हो गया। जवसे ॥६॥

॥ ७५ ॥ कव्वाली ॥

हुकम हमको पिताजी का, वजाना ही मुनासिव है।
अवध को छोड़ कर जंगल में जाना ही मुनासिव है ॥टेक॥
नहीं है रोष कामों का, सुनो लछमन मेरे भाई।
मात केकई के आगे, सिर झुकाना ही मुनासिव है ॥१॥
अवध के तख्त के ऊपर न वैठूँगा कभी हरगिज।
ताज मेरा भरत के सिर सजाना ही मुनासिव है ॥२॥
धनुष तुमने जो चिल्ले पर, चढ़ाया है विना समझे।
धनुष को चाप से, उल्टा हटाना ही मुनासिव है ॥३॥
राज के वास्ते न भाई से हम लड़ें हरगिज।
वचन हमको पिताजी का निभाना ही मुनासिव है ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ भारत सभी गारत, पड़ी जो फूट आपस में।
कहें न्यामत फूट को, अब मिटाना ही मुनासिब है ॥५॥

॥ ७६ ॥ गजल ॥

रावण तू धमकी बताता किसे,
मुझे मरने का खोप खतरही नहीं।
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना,
तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ॥ टेक ॥

जो तू सोने की लंका का मान करे,
मेरे आगे वो मिट्टी का घर ही नहीं,
मेरे मनका सुमेर हिलेगा नहीं।
मेरे मनमें किसी का डर ही नहीं। रावण तू ॥१॥

तूने सहस अठारा जु नारि वरीं,
हाय इस पे भी तुझको सबर ही नहीं।
पर त्रिया पै तूने जो ध्यान किया,
तुझे नर्क निगोद की खबर ही नहीं ॥२॥

आवे इन्द्र नरेन्द्र सभी मिलके,
मजाल जो क्या मेरे शीलको हने।
मेरी हस्ती है पिया राम शिवा,
मेरी नजरों में कोई बसर ही नहीं ॥३॥

क्यों न जीत स्वयम्बर लाया मुझे,
मेरी चाह हती तेरे दिल में अगर।
कौन शहर तू बतादे मुझे,
जहां तुझको स्वयंबर की खबर ही नहीं ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुआ सो हुआ अब मान कहा,
मुझे जल्दी से दे तू राम पे पठा।
कहे वो न्यामत तूं देखेगा,
तेरे सिर की कसम तेरा सर ही नहीं ॥४॥

॥ ७७ ॥ लावनी ॥

त्रिया जन्म मत दियो प्रभु जी, अर्ज करूँ दुख भरी भरा।
उमर गुजर गई सुख नहिं पाया, संकट में गये तीनों पना ॥टेक॥
बालापन की सुनो प्रभुजी, जिस दिन धरणी जन्म लिया।
मात पिता सब उदास होगये मुख मोड़े सब लोग कुटम ॥ १ ॥
टूटगई बालक की आशा, नेग चार छूटे उस दिन।
जब जो भई दो चार वर्ष की, मात सिखावन लागी संग ॥ २ ॥

ज्वानीपन की सुनो प्रभुजी, नौ महीने का गर्भ रहा।
एक से एक पीर जब आई,तब बालक का मुख देखा॥
बड़े कठिन से बालक पाया, छूट गई सबरी ममता।
उस बालक का ब्याह किया, जब लगा दई सब जमा पता ॥३॥

वृद्धापन की सुनो प्रभुजी, घर में भये ज्वान बेटा।
उन बेटों की बहुऐं आईं, लड़ लड़ कर लेतीं हिस्सा॥
हाथ जोड़कर कहें जवाहर, भूल न हो तिरिया को जनमा।
उमर गुजर गई सुख नहिं पाया संकट में गये तीनों पना ॥ ४ ॥

७८ ॥ लावनी ॥

सुन सप्त व्यसन का स्वरूप न्यारा न्यारा।
इनके त्यागे बिन नहिं होवे निस्तारा ॥ टेक ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १ ॥ जुआ ॥

ये जुआ सात व्यसनों महा अन्याई,
इसका है खेल इसपर भव में दुखदाई ॥
दे राजदण्ड काढ़े मात पिता अरु भाई,
ज्वारी की कोई कर सकता न सहाई ॥
जो जुआ खेल पाण्डवों ने लिया दुःख भारा,
इनके त्यागे बिन नहिं होवे निस्तारा ॥१॥

॥ २ ॥ माँस ॥

ये मांस भक्ष अति निंद्य भक्ष्य जे जानो,
इक कण में अनन्ते जीव जिनेन्द्र बखानो।
निर्दयी है जिनके हाथ जीव हत्यानो,
कर कस वायस जो गृद्ध चील को खानो ॥
धृग है तिनको जे मत में लीन उचारा,
इनके त्यागे बिन नहिं होवे निस्तारा ॥ २ ॥

॥ ३ ॥ मद्य ॥

मद्य पानी पिय आतम कि घात करते हैं,
माता-भगनी धिय पै कुदिष्ट धरते हैं।
दर्शन ज्ञानादिक गुण का मूल हरते हैं,
मिष्टादिक भोजन पै लड़ लड़ मरते हैं ॥
मद पीके आप आपुन को ठगे गंमारा,
इनके त्यागे बिन नहिं होवे निस्तारा ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥ वेश्या ॥

वेश्या ने धन के कारण प्रीति बखानी,
नीचों के सँग नहिं रमते करे गिलानी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नरकों में गर्म पुतली से करावे प्यारा,
इनके त्यागे विन नहिं होवे निस्तारा ॥४॥

॥ ५ ॥ शिकार ॥

जे पहले हुए भयभीति मृगा बन चारी,
नहिं करैं पराया दोष जे तृणा अहारी।
धन वोही वास इक देह मात्र के धारी,
सब वनचर में निर्दोष जे परें अहारी ॥
हाय हाय रे दुष्ट क्यों करो प्रहार विचारा,
इनके त्यागे विन नहिं होवे निस्तारा ॥५॥

॥ ६ ॥ चोरी ॥

चोरी करने वाले अति दुःख पाते,
राजा उनके हाथ पाँव कटवाते।
प्राणों से प्यारे धन को हर लाते हैं,
खोटे मारग से नरकादिक जाते हैं ॥
सुत तात मात भाई न करे इतबारा,
इनके त्यागे बिन नहिं होवे निस्तारा ॥६॥

॥ ७ ॥ परस्त्री ॥

पर नारी में जिसने कुदिष्ट दीनी है,
उसने अपजश की पोट शीश लीनी है।
जिसके वश रावण को दुर्गति भीनी है,
धनि है उनको जिन नीचि नजर कीनी है ॥
मोहन की चूक कर माफ जैन का प्यारा,
इनके त्यागे बिन नहिं होवे निस्तारा ॥ ७ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ७६ ॥ भजन ॥

वा दिन का कर सोच जिया मन में । वा दिन ॥टेक॥

वनज किया व्यापारी तूने टांडा लादा भारी रे ।
ओछी पूंजी जूआ खेले, आखिर बाजी हारी रे ॥
आखिर बाजी हारी रे, तू करले चलने की तैयारी रे ।
इक दिन डेरा होयगा वन में ॥
वा दिन का कर सोच जिया मन में ॥ १ ॥

झूठे नैना उलफत बांदी, इक दिन पवन चलेगी आंधी ।
किसका सोना किसकी चांदी, नाहक चित्त लगाया तन में ।
वा दिन का कर सोच जिया मन में ॥
मिट्टी से मिट्टी मिलेगी, पानी से पानी जी ॥
मूरख सेती मूरख मिलियो, ज्ञानी से ज्ञानी जी ।
यह मिट्टी है तेरे तन में ॥
वा दिन का कर सोच जिया मन में ॥ २ ॥

कहत बनारसी सुन भाई प्राणी, यह पद है निर्वाणा वे ।
जीवन मरण की आशा नाहीं, सिर पर काल निशाना वे ॥
सूझ पड़ेगी बुढ़ापे पन में ।
वा दिन का कर सोच जिया मन में ॥ ३ ॥

॥ ८० ॥ भजन ॥

अजहु न चेतो सुगर नर तेरा तीसरा पन जात रे,
पल घड़ी दिन दो चार में जमराज तोकों खाय रे ।
मैं मैं करत सब दिन गयो सोवत गई सब रात रे,
जिनराज को सुमरो नहीं बहुर फिर नहिं दावरे ॥टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बालापन ख्यालन गमाया, ज्वानी गई मद छाय रे।
वृद्धापन अब जात है, नर बहुर फिर पछतायरे ॥अजहुन चेतो०१॥
यह काल है विकराल खोटा, जगत जीव ग्रस जात है।
याते सकारे चेत स्याने, जन्म वीतो जात रे ॥ अजहु न चेतो०२॥
सम्पति इकट्ठी जोर के नर, ताहि सेती पतयात है।
दान पूजा करत नाहीं, जोर के धर जात रे ॥ अजहु न चेतो०३॥
दान पूजा कर भविक जन, हरषके गुण गायके।
कहत उदया जीत प्रभु जिन, जजहु मेरे मन भात रे ॥अजहु न०४

॥ ८१ ॥ लावनी ॥

सार वस्तु जिन धर्म भविक जन ताको उर धरना।
कर पूजा जिनवर की अष्ट कर्मों का नाश करना ॥ टेक ॥

बोलत प्रथम जो सार वस्तु है, वाणी जिनेश्वर की।
नहिं राग नहिं द्वेष जु यामें, छाया कर्मों की ॥
जिनवाणी से गति सुधर गई नाग नागिन की।
केवल वाणी है जिनवाणी, मोक्ष जड़ीहै शिव की ॥सार०१॥

बोल दूजी ये सार है,णमोकार मन्त्र की बात पकी।
चोर को सूली हुकम दियो जब,प्यास से दम उसकी अटकी ॥
हाथ जोड़कर कहे सेठ से महिर करो जल की।
मेरे गुरु ने मन्त्र सिखाया, याद रखो उसकी ॥
गये सेठजी जल भरनेको,चोर का उधर हुआ मरना॥सार०२

तीजी सार है विरत आखड़ी, जिनमत की सांची।
चांडाल ने लई प्रतिज्ञा है चउदश के दिन की ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब राजा ने हुकम दिया है, पुत्र मारने का।
चाण्डाल ने कही आज नहिं ऐसा होने का॥
लगा गुस्सा राजा को पोट बन्धवादी दोनों की।
उन दोनों को पोट बंधाकर, नदी में पटकी॥
पटकत परमानन्द, मणी रे सिंहासन पै धरना।
चाण्डाल के सिर पे राजपुत्र छत्तर करना॥ सार वस्तु० ३॥

चौथी सार है सुनो जु महिमा, है गन्धोदक की।
कोटी भट श्रीपाल कुष्ट से देह भई उनकी॥
सिद्धचक्र का व्रत जो कीना,होगई काय जु कंचन की।
सखा सात सौ संघ जिन्हों के, दूर भई उनकी॥
समझ समझ नर चेतन बातें सतगुरु मिलने की।
अर्ज करे जिनदास, तुम बिन और नहिं शरणा॥सार वस्तु०४

॥ ८२ ॥ भजन ॥

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले।
होवे समाधि मेरी, छूटे जनम मरण से॥ टेक॥

यह लख चौरासी योनी, दिन रात घूमी दूनी।
चारों गती में भ्रमता,दुखी होके भव के वन से॥ इतना तो० १॥
धन धान्य मोह माया, परिग्रह ने जो फंसाया।
सबसे ममत्व छूटे, कहूँ तन व मन वचन से॥ इतना तो० २॥
गुरू जन से नाहिं सारे, पितु मातु बन्धु प्यारे।
सबसे क्षमा मैं चाहूं, छोटे बड़े सुजन से॥ इतना तो० ३॥
भगे कर्म चोर वैरी, बचे ज्ञान निधि ये मेरी।
फिर वन्दना करें मुझको, इस चर्म पीजरन से॥ इतना तो० ४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तप दर्श ज्ञान चरना, इनका ही मुझको शरणा।
चारों करूं अराधन, महावीर धीर पन से ॥ इतना तो० ५ ॥

॥ ८३ ॥ भजन ॥

जोगी जोग जुगत क्या करता, पहले अपने मन को मार।
अपने मन को मार, योगी अपने मन को मार ॥ टेक ॥

बस्तर अपने रंगे गेरुआ, ली गल सेली डार।
हाथ में चिमटा, काँधे झोली, मुद्रे कानों फाड़ ॥ जोगी ॥ १ ॥

अङ्ग भवूत रमाई तूने, सिर पर जटा ली धार।
हाथ सुमरनी बगल कतरनी, पोथी लीनी चार ॥ जोगी ॥ २ ॥

वन में बैठे तुम तप करते, अग्नि पंच प्रकार।
भंग चरस गाँजा पीने में, माना शिव का द्वार ॥ जोगी ॥ ३ ॥

इस प्रपंच से काज न सरता, अपना रूप निहार।
ब्रह्म रूप तेरा स्वरूप है, आतम रूप निहार ॥ जोगी ॥ ४ ॥

ज्ञान गुदड़िया को तू गहले, मन्त्र जपो नवकार।
जैन बैन की सीख मान तू, हो समकित हिय धार॥
हे वीर तुझे जो सत्गुरु मिलजा, होजा भवदधि पार ॥ जोगी ॥५॥

॥ ८४ ॥ लावनी ॥

धन्य दिवस धन घड़ी आज की, जिन छवि नजर पड़ी।
स्व पर भेद बुद्धि प्रगट भई, उर भर्म बुद्धि बिसरी ॥ टेक ॥

नाशाग्रह है दृष्टि मनोहर, वर विराग सुथरी।
आतम शुद्ध सु राजत मानो, अनुभव स्वरस भरी ॥ धन्य १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शांत्याकृति निरखत ही परकी, आरत सर्व गिरी।
चिर मिथ्या तम नाश करनको, मा•ो अमृत मेघ झरी।।धन्य।।२।।

वीतरागता का सुहेतु सुनि, मोह भुजङ्ग विसरी।
पट भूषण विनसे सुन्दरता, नाहीं रंक हरी ।। धन्य ।।३।।

जाकी द्युति शत कोटि चन्द्र ने, अद्भुत जग विस्तरी।
तारक रूप निहार देव छवि, मानक नमन करी ।। धन्य ।।४।।

।। ८५ ।। भजन ।।

शरण अपनी में रख लीजे, दया मय दास हूँ तेरा।
तुम्हें तजकर कहां जाऊँ, हितू को और है मेरा ।। टेक ।।

भटकता हूँ मैं मुद्दत से, नहिं विश्राम पाता हूं।
दया की दृष्टि कर दीजे, नहीं तो डूबता बेड़ा ।।शरण० १ ।।

सताया अष्ट कर्मों का, तपाया पांच पापों का।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तङ्ग हाल है मेरा ।। शरण० २ ।।

दुखों को मेटने वाला,तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आपड़ा अब तो, भरोसा नाथ है तेरा ।। शरण० ३ ।।

क्षमा अपराध कर मेरे, फक्त अब आस है तेरी।
दया शिवनारायण पर, बनालो नाथ निज चेरा ।। शरण ४ ।।

।। ८६ ।। पद ।।

मौत जब सिर तेरे आजायगी,
रिद्धियां सारी रह जायगी।

झूठ-सच से जो कमाया धन,
साथ में पाई न उसके जायगी ।। टेक ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—स्वारथ के सबही सगे, बिन स्वारथ नहिं कोय।
कड आवे जबई स्वरस, छूंछ न पूछे कोय॥
तेरी भी यह गति बनाई जायगी। मौत जब० ॥१॥
गात भ्रात पितु मात सब, परिजन छोड़े तोय।
नारी अति प्यारो तेरी, बड़े स्वार्थ को रोय॥
फिर किसी को सुध तेरी नहिं आयगी। मौत जब० २॥

दोहा—मलमल न्हाया इत्र मल, हंस स निरखा गात।
गात पलक में भस्म हुई, राख पड़ी रह जात॥
अस्थि पंजर भी वहीं रह जायगो॥ मौत जब० ३॥

दोहा—मदिरा पीकर मूक बन, मत सुधि निज की खोय।
भूला नर्क निगोद दुःख, पाप बीज नित बोय॥
कैफियत सब तलब करली जायगी। मौत जब०॥ ४॥

दोहा—भ्रमत भ्रमत बहु भव गये, सुख की मिली न राह।
अजहू जो चेतो नहीं भव नद बहत अथाह॥
भ्रमण की गणना ही बढ़ती जायगी॥ मौत जब०॥ ५॥

दोहा—श्री गुरु करुणा वंत हो, कहत सीख समझाय।
नहीं अन्त में हाय कछु भले रहे पछताय॥
समझ फिर कछु काम में नहिं आयगी। मौत जब०॥ ६॥

दोहा—आज आज कल कल करत, आजावेगो काल।
शिवनारायण यों कहे, सोच होय क्या हाल॥
जब हरी झंडी तुझे लग जायगी। मौत जब०॥ ७॥

॥ ८८ ॥ भजन ॥

परम निर्ग्रन्थ साधु वीतरागी गुरू हमारे हैं।
निरारम्भी सभी संसार के झंझट से न्यारे हैं॥ टेक॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

न कामी हैं न क्रोधी हैं, न लोभी हैं न मानी हैं।
क्षमा व्रत शील संयम ध्यान, जप तप के पिटारे हैं ।। परम० १ ।।

न आशा है न वासा है. दिगम्बर भेष खासा है।
तजी नारी सवारी सब, महाव्रत पंच धारा है ।। परम० २।।

न स्वादी निःप्रमादी, सत्यवादी रीति सादी है।
पिपासा भूख गर्मी, शीत वाधा से न हारे हैं ।। परम० ३।।

रत्नत्रय काँच कंचन, मित्र अरि अहि माल सम जाने।
सभी सुख दुख मरण जीवन से, राग द्वेष टारे हैं ।। परम० ४ ।।

तरण तारण गुरू सच्चे, अगर हैं तो दिगम्बर हैं।
वही संसार के मक्खन, हितैषी बन्धु प्यारे हैं ।। परम० ५ ।।

।। ८८ ।। कव्वाली ।।

सारी दुनियां तो सागर दुख से भरी,
सुखिया कोई आता नजर ही नहीं।
या में मोह का जाल पड़ा है गजब,
जामें जीव फंसे हैं खबर ही नही ।।टेक

कौन मात पिता कौन बन्धु सुता, कैसे भाई वहिन कैसे दारा पती।
इस जग के नाते हैं भूठे सभी, सच पूछो तो रहते घर ही नहीं।।१

नदी नाव संयोग से आन मिले, जैसे वृक्ष पै पक्षी बसेरा करे।
भोर भयं सब विछुड़ गये, संग चलने का कोई जिकर ही नहीं।।२

स्वारथ की सारी दुनियां लखो, यामें भूलके न कोई नेह करो।
सूखे दरियापे नर पशु पक्षी कोइ, देखो करताहै आके गुजर हीनहीं३

चाहे फौज पयादे हजारों रखो, चाहे महल किले में जो बन्द करो
मंतर जंतर लाखों करो, पर मौत की टाली तो टलती नहीं ।।४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धन दौलत राज खजाना सबे, कोई अंतसमय काम आवे नहीं।
आ मुसीबतमें कोई सहाई नहीं,ऐसा कोई सुर या असुर हीनहीं॥
ऐसा जानके भाई विचार करो,दुख शोक तजो समता को भजो।
मोह मायाको मनसेती दूर करो,मोह करनेका अच्छा समर ही नहीं
जिनराज भजो मन धीर धरो, तप संयम शील सुधार करो।
धर्मध्यान से न्यामत सर करो,विन धर्मसे होता गुजर ही नहीं७

॥ ८६ ॥ भजन ॥

क्या रामचन्द्र से मेंरी साहवी कम है।
नहिं दूंगा जानकी जब तक दम में दम है॥ टेक
पुरी अयोध्या से लंकपुरी क्या कम है।
नहिं दूंगा जानकी जब तक दम में दम है॥ १॥
रामादल से राक्षस दल क्या कम है।
लक्ष्मण जी से कुम्भकरण क्या कम है॥ २॥
हनूमान से मेघनाद क्या कम है।
सीता जी से मन्दोदरि क्या कम है॥ नहिं० ॥ ३॥
मोतीलाल उस्ताज सभी में क्या कम है।
नहिं दूंगा जानकी जब तक दम में दम है॥ ४॥

॥ ६० लावनी ॥

दोई बात हैं जग में सांची, पाप पुण्य का है जोड़ा।
धर्म घटे जब मति फिर जावे, पाप आन पाड़े फोड़ा॥ टेक
पुन्य घटो राजा हरिश्चन्द्र को, नीच घरां भरियो पानी।
बारह वर्ष तो अति दुख पायो, बेच दई तारा रानी॥ दोई०१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुन्य हस्यो श्रीपाल राय को, बालपने में दुःख भया।
अपना जो काका दुश्मन होके,चम्पापुरि से निकास किया।
पुन्य उदय जब आयो राय को, चम्पापुरि का राज किया ॥
जब काका ने लीनी दिक्षा, अष्टकर्म से बहुत लडया ॥दोइ०२॥

पुन्य घटो जब चक्रवर्ति को, बात किसी की नहिं मनी।
जा बैठो समुद्र की तीराँ, पूर्व जन्म की नीशानी ॥
चक्रवर्ति तो करे चाकरी, हाजिर सेता देव खड़ा ॥ दोई बात० ३

पुन्य घटो राजा रावण को, अपने जोर का गर्व किया।
रामचन्द्र की सीता जु रानी, बिना हुकम से हर लाया ॥
कहत मन्दोदरि सुन पिया रावण,होनहार सिर पर छाया॥दोई०४

चार बात का दिया दाखला; हाजिर चरणों में जु खड़ा।
नियम धरम कर,करो तपस्या जो सुख चाहो मन चाहा ॥दोई०५

॥ ६१ ॥ भजन ॥

ऐसा दिन कब पाऊं नाथ मैं ऐसा दिन कब पाऊं।

बाह्याभ्यन्तर त्याग परिग्रह नग्न स्वरूप बनाऊं।
भैक्षाशन इक बार खड़ा हों, पाणी पात्र में खाऊं ॥
राग द्वेष छल लोभ मोह, कामादि विकार हटाऊं।
पर परणति को त्याग निरन्तर, स्वाभाविक चितलाऊं ॥नाथमैं०१

शून्यागार पहाड़ गुफा तटिनी तट ध्यान लगाऊं।
शीत अरु वर्षा की बाधा से नहिं चित अकलाऊं।
तृण मणि कंचन काँच माल अहि विष अमृत समभाऊं।
शत्रु मित्र निंदक वंदक को एकहि दृष्टि लखाऊं॥नाथ मैं०२
गुप्ति समिति व्रत दश लक्षण रत्नत्रय भावन भाऊं।
कर्मनाश केवल प्रकाश, मक्खन जब शिवपुर पाऊं ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ९२ ॥ लावनी ॥

गाफिल तू सोच जरा मन में, जग चिड़िया रैन बसेरा है।
मानव तूने देखा यह तन, मिट्टी का एक खिलौना है॥
तू हंस रहा है देख जिसे, कल देख उसे ही रोना है।
उठ जाग बांध अपनी गठरी होता जारहा सबेरा है॥ १॥

जब आवेगा तूफान प्रवल नश जावेंगे वैभव सारे।
कुछ फिक्र करो निज आतम की, क्यों बनते जाते मतवारे॥
सुनले कुछ सोच समझ भी ले, इस जग में कोई न तेरा है।
गाफिल तू सोच जरा मन में, जग चिड़िया रैन बसेरा है॥ २॥

मानव मानव को चूस रहा कोइ विलसाता दाना दाना।
कोइ भरा उदर कृशित काय, इनमें क्या अन्तर पहिचाना॥
सारी दुनियां मतलब की है, करले सुकृत यह तेरा ॥गाफिल०३॥

साथी सब तेरे चले गये क्या सोच रहा अपने मन में।
आना आना है लगा सदा, कोई रह सका नहीं जग में॥
तू भी अब जल्द सम्हल जारे, यह अल्प समयका डेरा है।
गाफिल तू सोच जरा मन में, जग चिड़िया रैन बसेरा है॥ ४॥

जो चला गया वह आवेगा, आया है उसको जाना है।
ओ भोले मानव सोच समझ, जग एक मुसाफिर खाना है॥
हुशियार देख मग में चलना, सारा जग यहां लुटेरा है।
गाफिल तू सोच जरा मन में, जग चिड़िया रैन बसेरा है॥ ५॥

यात्रा तेरी है महा कठिन कंटकाकीर्ण पथरीला मग।
वाधायें सिर पर नाच रहीं, मत डरे बढ़ाता जा तू पग॥
आंधी आवे तूफान प्रवल, होता जा रहा सवेरा है।
गाफिल तू सोच जरा मन में, जग चिड़िया रैन बसेरा है॥ ६॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ ६३ लावनी ॥

शील विरत पर भाव भविक जन, जाहिर जग में है भाई।
महिमा जिसकी सुनलो जैसी जैनागम में बतलाई ॥

लंकापति ने कुमति उपाई, जनक सुता का हरण किया।
महावली दशरथ के सुत ने;रावण का कुल दमन किया॥
फिर सीता देख राम ने, मन में कुछ उद्वेग किया।
चन्दन चिता रचो जल्दी से यह लक्ष्मण को हुकम दिया॥

चौपाई—अग्नि प्रवेश कियो जब सीता।
भये नारि नर सभी भयभीता ॥
शील प्रभाव जरी नहिं देही।
मिट्यो कलंक शुद्ध भई देवी ॥

दौड़—निर्मल कीर्ति भई जगत में,रामचन्द्र के मन भाई ॥महि०१

भरी सभा के बीच दुर्योधन, महा भयंकर जुल्म किया।
द्रुपद सुता का, चीर हरण जब दूशासन को हुकम दिया ॥
हुआ क्रोध दुष्ट दुशासन, चीर हरण तैयार हुआ।
अहो अनर्थ देखकर सबने,दिल में यह अफसोस किया॥

चौपाई—द्रोपद सुता मन में घबराई ।
त्रिभुवनपति से डोर लगाई ॥
मेरी बार करी क्यों देरी ।
राखो लाज नाथ अब मेरी ॥

दौड़—द्रुपद सुता का चीर बढ़ा जब दूशासन लज्जा पाई ॥२॥

मनोरमा को दोष लगाकर, सासू ने घर से बाहर किया।
महा भयङ्कर वन में जा, सारथि ने उसको छोड़ दिया ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजग्रह के राज कुंवर ने, अकस्मात देखा उसको।
हुआ काम के वशीभूत तो,ले आया निज घर उसको।।

चौपाई—दुख पर दुख जब पड़े बहु भारी।
सती शिरोमणि विकल पुकारी ।।
तुम करुणा निधि अन्तरयामी।
राखो शील मिटे बदनामी ।।

दौड़—राजकुंवर को ताडन करके, सुर ने सुन्दर समझाई।
महिमा जिसकी सुनलो जैसी जैनागम में बतलाई ।। ३ ।।
शील की महिमा कहां तक वरणूं, कहने में नहिं आता है।
ज्यों अगाध सरिता पत पानी, गागर में न समाता है ।।
पाले शील प्रतिज्ञा कोई, नर होवे अथवा नारी।
इन्द्रादिक हो किंकर जाके, तब कीरत हो जग भारी ।।

चौपाई—ईत भीत व्यापे नहिं ताही, संकट में सुर होय सहाई।
सुरगादिक सुख पर भव पावे, कबहूँ नर्क निगोद न जावे ।।
पुण्य कीर्ति यह रत्न अनूपम भव भव में शिवफलदाई।
महिमा जिसकी सुनलो जैसी जैनागम में बतलाई ।। ४ ।।
शील किया सीता सतवन्ती, जिसने जग में धारया है।
शील से बढ़कर न कोई जप तप, मुनियों ने बतलाया है।।
शीलवती रानी द्रोपदी का, सभा में चीर बढ़ाया है।
शील की महिमा समझो, अग्नि में फूल खिलाया है ।।

।। ९४ ।। कव्वाली ।।

भगवन मुझे शरण दो चिन्ता सता रही है।
संसार की ये माया नफरत दिला रही है ।। टेक ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेरी ही जुस्तजू अब मुझको मिटा रही है।
आंखों में आस दिल में, हसरत समा रही है॥ भगवन० १॥
समझा था जिनको अपना, लेकिन वह गैर निकले।
सच्चे हितैषी तुम हो, दिल में समा रही है॥ भगवन० २॥
मुश्किल से वक्त कोई, देगा न साथ अपना।
खुदगर्ज है जमाना, दुनियां बता रही है॥ भगवन० ३॥
नर जन्म को तो पाकर, योंही गमाया हमने।
पापों की यातना अब, हमको सता रही है॥ भगवन० ४॥
तेरे सिवा तो कोई, जचता नहीं नजर में।
यह वीतराग मुद्रा, दिल में समा रही है॥ भगवन० ५॥
उम्रे रवांही अपनी, ऐदासना सहा है।
राहे फना का हमको, रस्ता बता रही है॥ भगवन मुझे० ६॥

॥ ९५ ॥ गजल ॥

कुमति प्रीति के हम सताये हुये हैं,
विषयभोग दुःखों में आये हुये हैं॥ टेक०॥

न सुध है न अपने वतन की खबर है।
फिरे जावजां गर उठाये हुये हैं॥ कुमति० १॥

कभी नर्क में हैं, कभी स्वर्ग में हैं।
रहट की तरह भरमाये हुये हैं॥ कुमति० २॥

जगह कोई ऐसी न बाकी रही है।
जहां हम गरे न जाये हुये हैं॥ कुमति० ३॥

यह हालत हुई है, मगर दिल व दिल हम।
ज्वाला विषय की बढ़ाये हुये हैं॥ कुमति० ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कभी सीख मानी न हमने किसी की।
अजब मोह मदिरा पिलाये हुए हैं ।।कुमति० ५।।
गया बीत योंही जमाना हमारा।
सो अपना किया आज पाये हुये हैं ।।कुमति०६।।
हुआ होश अब आनकर कौन हैं।
हम किस आफत में आकर फंसाये हुये हैं ।।७।।
दर्श ज्ञान उपयोग है रूप अपना।
जबसे किसलिये हम छिपाये हुए हैं ।। कुमति।।८।।
न हम किसीके न कोई हमारा।
हजारों दफे आजमाये हुए हैं ।। कुमति० ९ ।।
ये तन भी तो हमदम नहीं है हमारा।
जिसे रात दिन हम लडाये हुये हैं ।।कुमति।।१०।।
पिता पुत्र भाई जु जाहिर जुदे हैं।
नहीं साथ आये न जाये हुए हैं ।। कुमति ।।११।।
पड़े हैं कुमति के फंद जो अगर हम।
मगर ध्यान सुमति लगाये हुए हैं ।।कुमति०१२।।
न कर सोच दिलमें जरा भी तो कुन्दन।
कोई दिन मतलब बनाये हुए हैं ।।कुमति०१३।।

।। ९६ ।। लावनी

सब धरमन में सार मूल इक दया जीव की गाई है।
नर्क पशु गति होत उन्हों की जिनको दया न आई है ।। टेक ।।
कठिन कठिन से नर तन पाई, वृथा दया को गमाई है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निश दिन मगन भोग में रहते, करते प्रीति सवाई है ।।
दया धर्म को गिनते नाहीं हिंसा धर्म मनाई है ।

झेला—तुम नर्क पड़ोगी जाई, जहां कंटक भूमि बताई ।।
जहाँ तपे तवा सम जानो, जैसे तिल आदि बखानो।।
तुम तीन बार उछलाई, होय अवधि विभंगा भाई ।

दौड़—जब हाय हाय बिल्लाय करे, जब याद वहां हो जाई है ।
नर्क पशु गति होत उन्हों की जिनको दया न आई है ।।१
देव असुर जब नया नारकी, दौड़े मार लगाई है ।
कोई सूली रोपण करते, कोई आग लगाई है ।।
कुम्भी पाक में डाल दिया, जहाँ कागा लोचें खाई हैं ।

झेला—जब कर कर याद चिल्लावे,उठ भाग कहां कोजावे ।
जब प्यासो अति चिल्लावे, तब तांवों शीसो प्यावे ।
सिंहासन सों मुख फारे, छाती पर लातें मारे ।

दौड़—जब परवश होकर सहे वेदना, आप कर्मवश पाई है ।
नर्क पशु गति होत उन्हों की, जिनको दया न आई है ।।२
कोई कोई ताते गोला सेकें, सूली सेज सुलाई है ।
जिनने भेंट करी पर नारी, उन्हें पुतरी भेंट कराई है ।।
अनछाना पानी पानी तिन ढोलो, वेतरणी तरवाई है ।

झेला—जहाँ शीत उष्ण अति होवे, परलय की पवन झकोरे ।
योजन लख का भाई, जहां लोह पिंड गल जाई ।
जहाँ कठिन वेदना गाई, नरकों की जानो भाई ।

दौड़—जे विषय भोग वस होकर प्राणी, आयु सागरों पाई है ।
नरक पशु गति होत उन्हों की जिनको दया न आई है ।।३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परवश होकर सहे वेदना, पड़े नरक में जाई है।
सुयश दयामय धर्म न सेवे, कहे बड़ी कठिनाई है।
रंचक कार्य करने के काजे, करे अनेक उपाई है।

झेला—अरे अरे मूरख प्राणी, तू हुआ बड़ा अज्ञानी।
तेरे हृदय विवेक न आवे, आखिर पीछे पछतावे।
थोड़े दिन की जिन्दगानी, तू कही गुरू की न मानी।

दौड़—तू हिंसा धर्म को छोड़, दयामय धर्म सदा सुखकारी है।
नर्क पशु गति होत उन्हों की, जिनको दया न आई है ॥४
विषय भोग भव रोग जानकर, इनको देख छुड़ाई है।
तृष्णा नागिन लहर जहिर की, तजो यार मनलाई है।
जो सत्गुरु की सीख न माने, तो वृथा उमर गमाई है।

झेला—जो दया धर्म को जानो, तो जैन धर्म को मानो।
कुदेव देव मत पूजो, जिनवर सम देव न दूजो।
जो तिरनो चाहो भाई, तो सुनलो शास्त्र मन लाई।

दौड़—जिनवाणी अमृत पियो भविक जन, दुलीचन्द गुण गाई है।
नर्क पशुगति होत उन्हों की, जिनको दया न आई है ॥५॥

॥ ९७ लावनी ॥

तुम तारण तरण जिनेश, अरज सुन लीजे।
संसार समुद्र से तार, पार मोह कीजे ॥ टेक

यह विषय भवोदधि जाहिर अगम गम्भीरा।
तिस बीच पड्यो में जाय सही नहिं पीरा।
जिन पाय नाम की भाव बैठ भये पारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उन किया जमारा शुद्ध, त्याग संसारा।
तुम हो अनाथ के नाथ, हाथ गह लीजे ॥ संसार० १ ॥

श्रीपाल समुद्र गिरा पार नहिं पाया।
हे कृपासिंधु तुम नाम धार भये पारा।
मुनि मानतुङ्ग की तुमही काटी जंजीरा।
अहिफण माल भई दृढ़ व्रत हीरा।
इन आदि सबन के काम नाम से सीजे ॥ संसार० २ ॥

शूकर सिंह नकुल बांदर जो तारे।
तुम सती जानकी अग्नि कुण्ड जल धारे।
सुक अंजन भील चंडाल आदि जिय भोरा।
इनही में करो सुमार मोह क्यों छोडा।
तुम हो अनन्त भगवन्त कहां लग कीजे ॥ संसार० ३ ॥

जो होती एक दो चार भवों की पीरा।
तो रहतो उर समभाय धार मन धीरा।
मैं भ्रमों अनन्ते बार पार नहिं पाया।
याते जिनेश्वर देवशरण तुमरे में आया।
मोहन की अब चूक माफ कर दीजे ॥ संसार समुद्र से० ४॥

॥ ९८ ॥ गजल ॥

कर पार नैया मेरी, डूबा मैं जा रहा हूं ॥ टेक

भव सिन्धु है अपारा, जिसका न पार वारा।
हैरत में जा रहा हूं ॥ डूबा मैं जा रहा हूं १ ॥

मद लोभ क्रोध माया, तूफान सिर पै आया।
चक्कर में खा रहा हूँ ॥ डूबा मैं जा रहा हूँ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिथ्या अन्धेरा छाया, रास्ता मेरा भुलाया।
उल्टा मैं जा रहा हूं ॥ डूबा मैं जा रहा हूं ॥ ३ ॥
परमाद चोर आया, पुरुषार्थ धन चुराया।
आलस में आरहा हूं ॥ डूबा मैं जा रहा हूँ ४ ॥
तारण तरण तुम्हीं हो, भव दुख हरण तुम्हीं हो।
निश्चय मैं लारहा हूं ॥ डूबा मैं जा रहा हूं ५ ॥
न्यामत है मझधारा, टुक दीजिये सहारा।
मैं सर झुका रहा हूं ॥ डूबा मैं जा रहा हूं ॥ ६ ॥

॥ ६६ लावनी ॥

आशक हैं हम उस गुलके, जिसका जग सारा नाम जपे।
जिसका नाम सुनते हमेशा, थर थर ठाडा काल कपे ॥ टेक ॥

हरिहर ब्रह्मा आदि सभी इक, काल वली से हारे हैं।
वचा न कोई जगती में जन, सब बहुवार पछारे हैं ॥
इन्द्रादिक सुर अमर कहावें, सो भी आयु गत मारे हैं।
सत्य अमर हैं वे ही जगमें भवदधि पार उतारे हैं ॥
अजर अमर है वही ब्रह्म पद, जिसका सुयश जगमाहिं छपे।
जिसका जग सारा नाम जपे ॥ १ ॥

वही ब्रह्म है रूप हमारा, उसी पै आशक म्हारा मन।
जिसकी संगति पाकर यह, अशुचि पवित्र कहाता तन ॥
ज्यों कुधातु लोहा पारस संयोग, शुद्ध होता कंचन।
त्यों यह उसके योग से, पूजत बन बैठा सज्जन ॥
गुण अनंत किम कहूं भला क्यों, अंगुल से आकाश नपे।
जिसका जग सारा नाम जपे ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कोट भानु एकत्र होय तो, तिसके तेज से लज्जित हैं।
ज्यों केहरि का शब्द सुने ही, लाखों जंबुक भाजत हैं॥
ये शरीर मुर्दा समान सब उसी के बल से भाजत हैं।
एक उसी के नाम अनंते सभी गुणों कर छाजत हैं॥
यद्यपि दृष्टि न पड़े तदपि भी तेज ब्रह्म का नाहिं ढपे।
जिसका जग सारा नाम जपे॥ ३॥

ऐसे गुरु के दर्शन की मैं, आठ पहर रखता उम्मेद।
स्मरण जिसका करते ही, दूर होंय सब भव-भव के खेद॥
धन्य जन्म मैं मानत अपना, जबसे जाना उस गुरुका भेद।
अपार महिमा जिसकी है, नाथूराम गाते हैं वेद॥
विमुख रहे जो ऐसे गुरु से, सो ही भव आ ताप तपे।
जिसका जग सारा नाम जपे॥ ४॥

॥ १०० ॥ हितोपदेश की लावनी ॥

जाना है जानो के पास, दिल में खटक लाना होगा।
क्यों भूला फिरता चेत नहीं, पीछे पछताना होगा॥ टेक॥

बीता काल अनंत भ्रमत अब चेतो थिर थाना होगा।
नहिं लख चौरासी योनि में, फिर फिर दुख पाना होगा॥
तीन लोक में क्षेत्र न ऐसा, जाहि न ते छाना होगा।
अब भी ना थाको भ्रमत को, तुझसा नादाना होगा॥
पंच परावर्तन कर करके, नाहक दीवाना होगा।
क्यों भूला फिरता चेत नहीं, पीछे पछताना होगा॥ १॥

अव्रत योग कषाय पाय मिथ्यात्व तूं गर्भाना होगा।
तो भव भव सागर में डूबके बहु गोते खाना होगा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वृष चारित्र परीषह तप गह, निश्चय शिव राना होगा।
तहाँ सुक्ख अनंते भोगनित, यहाँ न फिर आना होगा॥
गुरू शिक्षा पर ध्यान न देहै तो खराब खाना होगा। क्यों ॥२॥

सुत संपति अपने मत जाने, इन्हें छोड़ जाना होगा।
पल एक न ठहरे, भये थिति पूरी सब विराना होगा॥
तीर्थंकर से त्याग गये सो ऐसा कौन स्याना होगा।
जग को थिर माने जहां नित काल वदन दाना होगा॥
अरे मूढ़ तिर्यंच नर्क दुख क्या तूं विसराना होगा। क्यों ॥३॥

नर गति के क्षण भंगुर सुख को तूंने, थिरमाना होगा।
तो तुझसा मूरख कौन जो, निज स्वभाव हाना होगा॥
अपने हाथ कुल्हाड़ी लेकर अपना पद भाना होगा।
तो कौन विवेकी ऐसे को बतलाता दाता होगा॥
नाथूराम शिव सुख चाहो तो, ब्रह्मस्वयश गाना होगा। क्यों ।४।

॥ १०१ ॥ परमात्मा का स्वरूप ॥

हमें है जाना वहाँ तलक, जिस जगह हमारा जाना है।
उसी की खातिर वेद मथ मथ कर अहो निश छाना है ॥टेक॥

उस जाना का रूप अनूपम, देख भानु शरमाना है।
लोक शिखर के अग्र विराजे, कहीं न आना जाना है॥
निश्चल आसन ज्ञान का, पिंड स्वरस कर साना है।
जाति अपेक्षा सब सिद्धों को, एक ब्रह्म कर माना है। उसी०॥१॥

त्रिजगत में चर अचर पदारथ, जिससे न कोई छाना है।
सर्व द्रव्य का द्रव्य गुण, अरु पर्यय युगपत जाना है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर से नवें जिसे, जब गृह तज संयम ठाना है।
उसी रूप में हूँ आसक्त वही उर आना है॥
जिस जाना की अनुकंपासे, निज स्वरूप पहिचाना है। उसी०।२।

उस जाना के जामे विन जी, भव भव में भटकाना है।
नहिं पाया आधार कहीं, चिरकाल सहा दुख नाना है॥
लख चौरासी योनि चतुरगति में बहुबार रुलाना है।
स्थान न कोई बचा जहाँ मरा न जन्मा प्राणा है॥
जिसने उस जाना को जाना, वही बसा शिवथाना है। उसी०।३।

उस जाना के मित्र भये तिन, वसु विधि अरि को हाना है।
काल वली का सर्व अभिमान, जहाँ त्तणक में भाना है॥
निरावाद अव्यय पद पाके, वही बना शिव राना है।
जो ग्रह कुटुम्ब को छोड़, धरा जाना का निज ध्याना है॥
नाथूराम जिन भक्तसार, उसी जाना का गुण गाना है। उसी० ।४

॥ १०२ ॥ कुमति चेतन का झगड़ा ॥

चेतन चेत कुमति कुलटा तज, सुमति सुहागल उरधारी।
जो है शिव रमणि की सहेली, जा सम और नहीं नारी॥ टेक॥

कुमति जान बिछुड़ा चेतन को, लगी उलहन खिजकर देन।
सुमति सौत ने तुम्हें विहकाया, सुना सुना कर मीठे बैन॥
पर पैहो अति कष्ट वहां तुम, जब करहो जप तप दिन रैन।
विषय भोग ये स्वप्ने में भी, मिलें नहिं देखन को नैन॥
तब करहो बच याद हमारे, अभी सुमति लागत प्यारी।
जो है शिव रमणि को सहेली, जा सम और नहीं नारी॥१॥

चेतन कही कुमति कुलटा, सुन तेरे साथ अति कष्ट सहा।
नाना विध मैने नर्क गत्यादिक में नहिं जाय कहा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल लब्धि शुभ के संयोग, अब सुमति नारि का संग लहा।
तेरी कृत जानी सर्व अभी, बहुत काल भव सिंधु बहा ॥
अबटल मुंह कर श्याम सुमति है, बात हमारी हितकारी। जो०।२।
कुमति कहेरे मूढ़ चिदानन्द, सुमति सदन तूं वास करे।
सुभखी तरुणी तज प्रगट अंधे, सुख का तू नाश करे॥
बना भिखारी फिरे घरों घर, पक्षमास उपवास करे।
सुख वर्तमान का छोड़ अज्ञान, भविष्यत की फिर आस करे॥
सुमति सत्य टोना कर तेरे, प्रेम फांस गल में डारी। जो० ॥३॥

अरी कुमति निर्लज्ज महा दुख खानि, सुख क्या जाने तू।
भोरे जीवों को ठगती ठगनी, प्रपंच अति ठाने तू॥
सुमति सहित हम शिवपुर बसि हैं, जहाँ दृष्टि नहिं आने तू।
त्रियमुक्ति मनोहर रमेंगे, जिसको कहा पहिचाने तू॥
सुमति समान नारि नहिं दूजी हियकारी जगमें भारा। जो० ।४।

कुमति कहे हो रुष्ट अरे सुन दुष्ट कृतघ्नी सुमति सुभोग।
मो संयोग पुष्ट भया तू इष्ट नाना विध के भोगे भोग॥
वस्त्राभूषण महल मनोहर सेज सुगंधादिक उपभोग॥
षटरस व्यंजन नारि संयोग हरे कामादिक रोग।
अब स्वप्ने न मिलें भोग ये सुमति किया छल छल हारो। जो०५॥

अरी कुमति अब खानि सेज शूलारोपण अरु नर्क महल।
देखे मैं तेरे वार अनंते धारा नारक पद खल॥
ताडन मारण शीत उष्ण भोगोपभोग विजन पल पल।
भोगे मैं तेरे साथ पर अब न चले कछु तेरा छल॥
हृदय विराजो सुमति हमारे, स्व पर भेद भाषा हारी। जो० ।६।

फेर कुमति खिसयाय कही, रे मूढ चिदानंद मति हीना।
मैं मोहराज की दूलारी, सकल विश्वजिन जय कीना॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तासे ते छल किया सुमति संग, लिया कठिन तेरा जीना।
अब तक अविचारी तेने क्या, मोहराज को नहिं चीना॥
अब भी हठ छोड़ सुमति संग, वह ठगनी है अधिकारी।
जो है शिव रमणि की सहेली, जा सम और नहीं नारी॥७॥

तब चेतन बच कहे गर्ज मैं, अभी मोह का नाश करूं।
अभिमान न कर तू, तुझे उसकी आस से निराश करूं॥
वंश मोह का जार करों शिवनारि मुक्ति पर वास करों।
नित्यानन्द विराजो, पूरण फिर न यहां की आस करों॥
नाथूराम जिनभक्त सुमति आसक्त भये लखि शुभ कारी।
जो है शिव रमणी॥८॥

॥ १०३ ॥ लावनी ॥

णमोकारके पाँचों पद पैंतिस अक्षर जो कंठ धरे।
सुर नर के सुख भोग जहाँवसु अरि हरके भव सिन्धु तरे॥ टेक

प्रथमणमोअरिहंताणं, पदसप्त अक्षर का सुनो विषय।
अरिहंतनको हो नमस्कार कहा हमारा यह आशय॥
अरिहंत तिन कहैं जिन्होंने चार घाति विधि कीने क्षय।
जिनवाणी का, उद्योत किया हरा भव्यजनों का भय॥
शैर–जिन्होंके ज्ञान में युगपत पदार्थ त्रिजग के झलके।
भविष्य भूत जो वर्ते समय ज्ञाता घड़ी पलके॥
अनंतानंत दर्शन ज्ञान अरु धारी हैं सुख बलके।
तीन छत्र शिर फिरें ढुरें वसु वगे चमर स्वर भक्ति करें॥
सुरनरके सुख भोग जहां वसु अरि हरके भवसिन्धु तरे॥१॥

द्वितीय णमोसिद्धाणं पद पंचाक्षर जो सार कहे।
सिद्धों के अर्थी हमारा नमस्कार हो अर्थ यहे॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिद्ध कर चुके काम सिद्ध तिन नाम तिष्ठशिव धाम रहे।
अष्ट कर्म को नाश कर ज्ञानादिक गुण आठ लहे।

शैर–धरें दीक्षा जो तीर्थंकर जिन्हांके नाम को भजकर ।
करें हैं नाश वसु अरिका सबल चारित्र दल सजकर ।।
नमूं मैं नाथ ऐसे को, सदा ही अष्ट मद तजकर ।
सुफल मस्तक हुआ मेरा, प्रभू के चरणों की रजकर ।।
लेत सिद्ध का नाम सिद्धि हो काम विघ्न सब दूर टरें ।
सुरनरके ।। २ ।।

तृतीय णमो आइरीयाणं पद सप्ताक्षर का भेद सुनो ।
जिसके सुनते दूर होवें, भवभव के अघ खेद सुनो ।।
आचार्यन को नमस्कार कर, यह जनकी उम्मेद सुनो ।
करूं निर्जरा वंदन करके, आस्रवका अब छेद सुनो ।।

शैर–मुनियों में जो शिरोमणी हैं यती छत्तीस गुण धारी ।
करें निज शिष्य औरनकों, कहें चारित्र विधसारी ।।
प्रायश्चित लेय मुनिजिन से, गुरू निज जान हितकारी ।
हरें वसु दुष्ट कर्मों को, वरें भव त्याग शिवनारी ।।
ऐसे मुनिवर सूर धरें तप, भूर कर्मों का चूर करें ।
सुरनर के सुख ।। ३ ।।

तूर्य णमो उवज्झायाणं पद सप्ताक्षर का सार कहूं ।
उपाध्याय के तईं हो नमस्कार हर वार कहूँ ।
आप पढ़े औरन को पढ़ावें, अध्यातम विस्तार कहूं ।।
ऐसे मुनिवर कहावें उवज्झाय जगतार कहूँ ।

शैर–पंच अरु वीस गुण धारी यती, उवज्झाय सो जानो ।।
महा भट मोह को क्षण में परिग्रह त्याग के हानो ।
सप्तभय, अष्टमद, तजकर करें तप घोर सूरानो ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सहें वाईस परीसह को अचल परिणाम गिरिमानो।
शुक्लध्यान धर कर्म नाशकर ऐसे मुनिशिवनारि वरें॥
सुर नरके सुख भोग ॥४॥

णमो लोए सव्व साहूणं, पंचम पद के ये नव वर्ण।
नमस्कार हो लोक के सब साधुन के वंदू चर्ण॥
साधे तप तज भागे जान भवरोग सो तारण तर्ण।
अष्टा विंशति मूल गुण के धारी मुनिराखो शर्ण॥
शैर-सार ये पंच परमेष्ठी भक्ति इनकी सदा पाऊँ।
न हो क्षण एक भी अंतर, जब तलक मुक्ति न जाऊँ॥
मिले सत्संग धर्मिण का सवों के चित्त में भाऊं।
जपूं वसु याम पद पाँचों, भाव धर हर्ष से गाऊं॥
नाथूराम शिवधाम वसनको, णमोकार अहिनिश उचरे।
सुर नरके सुख भोग ॥ ५ ॥

॥ १०४ ॥ लावनी ॥ शाखी ॥

परम ब्रह्म स्वरूप तिहुजग, भूप हो जग तारजी।
महिमा अनंत गणेश शेश सुरेश लहत न पार जी॥
मैं दास तेरा चरण चेरा, हरो मेरा भार जी।
जिन भक्त नाथूराम को अनजान पार उतार जी॥
दौड़-प्रभु मैं शरण लिया थारा, जन्म गद मरण हरो मारा।
प्रभु मैं सहा दुःख भारा, किसी से टरा नहीं टारा॥
विरद सुन नाथूराम जिन भक्त भजन थारेमें हुए आशक्त जी
परम ब्रह्म स्वरूप० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १०५ ॥ तीथकरों की लावनी ॥

छयालिस गुण युत दोष अठारह रहित देव अरहंत नमों।
त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवन्त नमों ॥ टेक ॥

रहित पसेव देह मल वर्जित, श्वेतरुधिर अति सुन्दर तन।
प्रथम संहनन प्रथम संस्थान, सुगंधित तन भगवन ॥
प्रिय हित वचन अतुल बल सोहे जनमत, प्रभु के सुनिये भविजन
मति श्रुति अवधि ज्ञान युत जन्मत सुर नरादि भगवंत नमों।
त्रिभुवन ईश्वर ॥ १ ॥

दो सौ योजन काल पड़े न, करें प्रभु जी गगन गमन।
चौमुख दर्शे सर्व विद्या होवें न, प्राण वधन ॥
वर ऐश्वर्य न कच, नख बढ़ते नहिं लागे टमकार नयन।
तनकी छाया न पड़ती, होता नहिं कवलाहार ग्रहण।
केवल ज्ञान भये दश अतिशय ये प्रभु के राजंत नमों।
त्रिभुवन ईश्वर ॥ २ ॥

सकल अर्थ मय मागधीभाषा, जाति विरोध तजा जीवन।
षट रितु के फल पुष्प तिन्होंकर शोभित अति सुन्दर वन।
पुष्प वृष्टि गन्दोदिक वर्षा, बाजे मन्द सुगन्ध पवन ॥
जय जय होते शब्द मेदिनी, विराजत है ज्यों दर्पण।
रचे कमल सुरपद तल प्रभु के, सर्व जीव हर्षत नमों ॥त्रिभुवन॥३

विमल दशा आकाश बिना कंटक अचला कीनी देवन।
मंगल द्रव्यें आठ वृष चक्र अगाड़ी चले गगन ॥
ये चौदह देवन कृत अतिशय, सुनोचतुष्टय अब दे मन।
अनन्त दर्शन ज्ञान सुखबल, प्रभु के राजे शुचि धन।
ऐसे गुण भण्डार विराजत शिवरमणी के कंथ नमों ॥त्रिभुवन०४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तरु अशोक भामण्डल सोहे, तीन छत्र अरु सिंहासन।
चमर दिव्य ध्वनी पुष्प वर्षारू दुंदभी नभ बाजन॥
प्रातहार्य ये आठ सर्व छचालिस गुण जिनवर के पावन।
जो भवि धारे कण्ठ नित सो न करें भव में आवन॥
ऐसे श्री अरिहंत जिनके गुण गान करत नित संत नमों॥त्रिभु०५

क्षुधा तृषा भय राग द्वेष विस्मय निद्रा मद असुहावन।
आरति चिंता शोक मद स्वेद खेद जरा जन्म मरण॥
मोह अठारह दोष रहित ऐसे जिनवर पद करूं नमन।
त्रिभुवन त्राता विधाता घातिकर्म जिन डाले हन॥
नाथूराम निश्चय अनन्त गुण सुमरत अघ भाजंत नमों॥त्रिभु०६

॥ १०६ ॥ हितोपदेशी लावनी ॥

जगमणि नर भव पाय सयाने, निज स्वरूप ध्याना चहिये।
जबतक शिव न मिले तव तक नित निज गुण गाना चहिये॥टेक॥

आर्य क्षेत्ररु श्रावक कुल लहि वृथा न डिहकाना चहिये।
जप तप संयम नेम विना नहिं काला जाना चहिये॥
भ्रमे दीर्घ संसार न पाया पार चित लाना चहिये।
पुरुषार्थ को करो, क्यों फिर तो कायर बन जाना चहिये॥
वार वार फिर मिले न अवसर यह शिक्षा माना चहिये।
जवतक शिव न मिले तव तक नित निज गुण गाना चहिये॥१॥

आप करो परिणाम शुद्ध औरों के करवाना चहिये।
सदा धर्म में रहो लवलीन न विसरना चहिये॥
धर्म समान मित्र न जग में यह उर में लाना चहिये।
अघ सम रिपु न ताहि निज अंग न परसाना चहिये॥
पर दुख देख हंसो मत मन में क्षमा भाव ठाना चहिये।
जब तक शिव न मिले तब तक नित निजगुण गाना चहिये॥२॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria,.Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधर्मी लख हर्ष करो उर मलिन भाव हाना चहिये।
अङ्ग हीन को देख कर भूल न खिजवाना चहिये॥
निज पर की पहिचान करो इसमें होना दाना चहिये।
इसी ज्ञान बिन भ्रमे चिर अव निज पहिचाना चहिये।
दुखी दरिद्री को दुख देकर कभी न कलपाना चहिये।
जब तक शिव न मिलेतब तक नित निज गुण गाना चहिये॥३॥

गुण वृद्धों की विनय करो नित मान विटप ढाना चहिये।
पर विभूति को देख मन कभी न ललचाना चहिये॥
मिथ्या वचन कहो मत छल से सुकृत का खाना चहिये।
अभक्ष भक्षण तजो चित शील में निज साना चहिये॥
नाथूराम निज शक्ति प्रगट कर बनना शिव राना चहिये।
जब तक शिव न मिले तब तक नित निज गुण गाना चहिये॥४॥

॥ १०६ ॥ लावनी ॥

प्रभु गुण गान करो निशि वासर आलस लाना ना चहिये।
करण विषय के स्वाद मेंअरु चित्त लगाना ना चहिये॥ टेक॥

नर तन चिंतामणि पाके यह वृथा गमाना ना चहिये।
जान बूझ के गोते भवोदधि में खाना ना चहिये॥
उत्तम श्रावक कुल पाके फिर अभक्ष खाना ना चहिये।
लोकनिंद जो नशे तिनमें चित्त सनाना ना चहिये॥
कुबिशन त्याग लाग निज पथ से सीख भुलाना ना चहिये।
करण विषय के स्वाद में अरु चित्त लगाना ना चहिये॥ १॥

हठ कर बात कहे तासे फिर विवाद ठाना ना चहिये।
अनरथ कारण खेल में जी बहलाना ना चहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हित उपदेश सुने ना उससे मगज पचाना ना चहिये।
अभिमानी के पास क्षण एक भी जाना ना चहिये॥
मित्रलाल जी होय उसे निज वस्तु दिखाना ना चहिये।
करण विषय के स्वाद में अरु चित्त लगाना ना चहिये॥ २॥

धर्म द्रोह अन्याय तहाँ निज वास बसाना ना चहिये।
दुष्ट मनुज से कभी स्नेह बढ़ाना ना चहिये॥
सुकृत कमाई करो देख परधन ललचाना ना चहिये॥
परमार्थ में द्रव्य खरचते हमें अलसाना ना चहिये॥
इष्ट वियोग अनिष्ट योग लख चित्त लगाना ना चहिये।
करण विषय के स्वाद में रूरु चित्त लगाना ना चहिये॥ ३॥

विद्या व्यसन विना निश वासर काल विताना ना चहिये।
भये उपस्थित आपदा फिर घबराना ना चहिये।
कुगुरु कुदेव कुधर्म इन्हें निज शीश नवाना ना चहिये।
दुखी दरिद्री दीन को कभी सताना ना चहिये॥
नाथूराम जिन भक्त धर्म में शक्ति छिपाना ना चहिये।
करण विषय के स्वाद में अरु चित्त लगाना ना चहिये॥ ४॥

॥ १०७॥ सिद्धों के गुणों की लावनी॥

अलख अगोचर अविनाशी सब, सिद्ध वसत शिव थान में हैं।
सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भाषत जिनके ज्ञान में हैं॥ टेक॥

ज्ञानावरणी नाश अनन्ती ज्ञान कला भगवान में हैं।
नाश दर्शनावर्णी सब देखें जितना ज्ञेय जहान में हैं।
नाश मोहनी क्षायिक सम्यक युत दृढ़ निज श्रद्धान में है।
अन्तराय को नाश वल अनन्त गुण निर्वाण में हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आयु कर्म के नाश भये रहे अचल सिद्ध स्थान में हैं।
सर्व विश्व के ज्ञेय प्रतिभासत जिनके ज्ञान में हैं॥ १॥
नाम कर्म हन भये अमूर्ति वंत लीन निज ध्यान में हैं।
गोत्रकर्म हन अगुरुलघु राजत थिर असमान में है॥
नाश वेदनी भये अव धित रूप मग्न सुख खान में है।
अपार गुण के पुंज अरिहंतन की पहिचान में है॥
अजर अमर अव्यय पद धारी सिद्ध सिद्ध के म्यान में हैं॥ २॥
अक्षय अभय अखिल गुण मण्डित भाषे वेद पुराण में हैं।
देह नेह विन अटल अविचल आकार पुमान में हैं॥
सर्वज्ञेय प्रति भासित ऐसे ज्यों दर्पण दरम्यान में हैं।
ज्ञान रश्मि के पुंज ज्यों किरणें भानु विमान में हैं॥
गुण पर्याय सहित युगपत द्रव्यें जानत आसान में हैं॥ ३॥
तीर्थंकर गुण वरणत जिनके जो प्रधान मतिमान में हैं।
छद्मस्थन में न ऐसे गुण काहू पदवान में हैं।
गुण अनन्त के धाम नहीं गुण ऐसे और महान में हैं।
धन्य पुरुष वे जो ऐसे धारत गुण निज कान में हैं॥
नाथूराम जिन भक्ति शक्ति सम रहे लीन गुण गान में हैं॥ ४॥

॥ १०९ ॥ चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न की लावनी ॥

सोलह स्वप्न लखे पिछली निशा चन्द्रगुप्त नृप अचरज कार।
भद्रवाहु स्वामी ने भाखे तिनके फल सो वर्तते अवार॥ टेक

सुर द्रुम शाखा भंग लखा सो, क्षत्री मुनि नाहिं धरें।
अस्त भानु से अङ्ग द्वादश मुनि ना अभ्यास करें॥
सुर विमान लोटत देखे चारण सुर खगह्यां न विचरें।
बारहफण के सर्प से बारह वर्ष अकाल परे।
सछिद्र शशिसे जिनमत में बहु भेद होय ना फेर लगार॥ १॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करि कारे युग लडत लखे सो वांछित ना वर्षे जल धार ।
अगिआ चमकत लखा जिन धर्म महात्म्य रहे लघुतर ॥
सूखाशर दक्षिण दिशि तिसमें आया किंचित नीर नजर ।
तीक्ष क्षेत्र से उठे वृष दक्षिण में रहसी कुछ घर ।
गज पर कपि आरूढ़ लखा कुल हीन नृपों का हो अधिकार ॥ २
हेम थाल में श्वान खीर खाता सो श्री ग्रह नीच रहे ।
नृप सुत उष्ट्रारुढ़ सो मिथ्या मारग भूप वहे ॥
विकशित पद्मलखा कूडे में जैनधर्म कुल वैश्य गहे ।
सागर सीमा तजी सो भूपति पंथ अनीति लहे ॥
रथ में बच्चे जुते सो बालक पन में धारें व्रत का भार ।
वृद्धापन में गहे शिथिलता नाश करे व्रतों का सार । भद्र ॥ ३ ॥
रत्न राशिरज से मैली सो यती परस्पर हो झगड़ा ।
भूत नाचते लखे सो कुदेव पूजन होय बड़ा ॥
इतनी सुन नृप चन्द्र गुप्त ने सुत सिंहासन दिया अड़ा ।
आप दिगम्बर भया गुरू संग फिर लगा तप करन कड़ा ॥
नाथूराम जिन भक्त कहेसो लहे स्वप्ने फल श्रुत अनुसार ।भद्र॥४॥

॥ ११० ॥ पतिव्रता सती की लावनी ॥

मन वच काय लीन निज पति से रहे सुशीला वहे सती ।
सुर नर जिनको जजें सभी गुण गावें वेद पुराण यती ॥ टेक ॥
तात भ्रात सम औरों को लखे अवस्था के अनुसार ।
नेम धर्म में रहे लवलीन वही कही कुल वंती नारि ॥
आज्ञा अनुसार चले नित जन्म उसी का जगमें सार ।
विपति पड़े भी विमुख न होय रहन सदा सेवे भर्तार ॥
छाया सम न तजे साथ हिरदय में विराजे सदा यती ।
सुरनर जिनको जजें गुण गावें ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जियत सदा पति के पद सेवे स्वप्ने भी ना करे उजर।
प्रवल पुण्य से मरे जो आप प्रथम गती है जाय सुधर ॥
जो कदाचणति मरे प्रथम तो संयम शुद्ध सजा के सर।
ध्यान अग्नि में दहती काया कलंक ना लाजे डर ॥
त्रिभुवन में हो पूजनीक वह पावे बेसक स्वर्ग गती। सुरनर।२।

त्रण लकड़ी की पावक में समता वस देह जलाती हैं।
मूढ़ जनों की समझ में वे ही सती कहलाती हैं ॥
कर अपघात मरे जल सो निश्चय दुर्गति जाती है।
नाम वरी को जलती पहले फिर वह प्राण छिपाती है ॥
जो तपकर तन जलावती है सती वे ही ना फेर रती। सुरनर।३।

ब्रह्मी सुन्दरी सुलोचना अंजना जानकी सुन भाई।
और विशल्या सुभद्रा मनोरमा है आगम गाई ॥
द्रोपदी चंदना और चौवीस जिनमाता सुखदाई।
इन्हें आदि दे सती बहुजिन कीर्ति है जगत में छाई ॥
नेमीश्वर जिनवर को नारी कही सुशीला राजमती। सुरनर ॥४॥

कुवारे पन में करें तपस्या ब्रह्मचर्य सेवें तज काम।
परम सती सो वे कहलावें पूजनीक जग में सो भाम ॥
पतीव्रता दूसरी सती जो निज पति से राचे वसुधाम।
दो प्रकार की सती ये कही जगत में नाथूराम ॥
जो ये लक्षण युत नारी पूजनीक सो शीलवती। सुरनर ॥ ५ ॥

॥ १११ ॥ मतवारों का मतवारापन हरने की लावनी ॥

निज हित का नहिं विचार जिनको मिथ्या हर्ष विषाद करें।
निज निज मत में मत्त सब, मतवारे वकवाद करें ॥ टेक ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मतवारा पन लगा जहाँ तहाँ, कैसे वर्ते न्याय विवेक।
पक्षपात में लीन हो, वृथा प्रलाप करें गह टेक॥
कोई कहे मेरा मत सच्चा, कोई कहे मेरा सत एक।
अपनी अपनी टेक में मान करें बड़ बड़ ज्यों भेक॥
चौपाई—अधम काल में विशेष ज्ञानी, रहे नहिं प्रगटे अभिमानी।
पक्षपात से ऐंचातानी, करें सत्यमत को दे पानी॥

दोहा-जहां पक्ष तहं न्याय ना, न्याय न तहाँ अधर्म।
जहाँ अधर्म तहँ दुरित पथ, दुर्गति तहाँ असर्म॥
सो विचार कुछ नहीं हृदय में पक्षपात निःस्वाद करें
निज हित का नहीं॥ १॥

जबसे यह कलिकाल लगा, अरु क्षत्री लगे अनीति करन।
क्षितिरक्षा को त्याग कर, दुर्व्यसनों में लगे परन॥
तबसे तेज प्रताप गया, दासी उपजे नीच वरण।
राजपुर से बने राजपूत लगे भागन तज रण॥

चौपाई—राज भार तब कौन उठावे, युद्ध सुनत जिनको ज्वर आवे
ऐसा अप्रबन्ध जब पावे, तब कैसे ना शत्रु सतावे।

दोहा—क्षत्री के दो धर्म हैं प्रथम होय रण शूर।
दूजे फिर तप शूर हो, करे वही रिपु चूर॥
सो दोनों धर्मों को छोड़ पर सेवा में अहलाद करें।
निज हित का नहिं॥ २॥

शूद्र मलेच्छ आदि नीचों ने राज्य लिया अपने कर में।
हिंसा मार्ग तभी से फैल गया है दुनियां भर में॥
धर्म ग्रन्थ सब नष्ट भये, अब जो रचना है घर घर में।
सर्व नयी है प्रथम से बड़ा भेद जो गो खर में॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई—जौन देश मत का नृप आया, ताने मत अपना फैलाया।
अन्य मतों को नष्ट कराया, यही धर्म अपना ठहराया।

दोहा—मूर्ति मन्दिर तोडके, दीने ग्रन्थ जलाय,
अथवा ले गहरी नदी, दीने सर्व डुबाय ॥
भये परस्पर द्वेषी नृप, क्यों ना भङ्ग मर्याद करें॥निज०३

इसी भांति बहु वाद परस्पर, नष्ट ग्रन्थ प्राचीन करे।
पक्षपात से नये नये मत भिन्न भिन्न फैले सगरे।
रुचि अनुसार करी रचना तिन, वहु प्रकार लिख ग्रन्थ भरे।
प्रमाण ताको पूर्व विद्वानों के ले ले नाम धरे।

चौपाई - यही हेतु प्रत्यक्ष दिखाता, कथन परस्पर मेल ना खाता।
कोई कहे जग रचा विधाता, कोई विश्व अनादी गाता।

दोहा—कोई कहे हैं एकहि परम ब्रह्म भगवान।
कोई कहें अनन्त हैं, पद है एक प्रधान ॥
कोई जीवको नाशवान, कोई नित्य मान संवाद करें॥जि०॥४॥
कोई भवानी सिद्धि करें कोई जन्म एक ही मानत हैं।
अनादि कोई कहें कोई नये जीव नित ठानत हैं॥
कोई तो स्वाधीन जीव के क्रिया कर्म फल जानत हैं।
परमेश्वर के कोई आधीन, सवकृती तानत हैं।

चौ०—इत्यादिक बहु विकल्प ठाने, एक कहे सो द्वितीय न माने
पक्ष आपनी अपनी ताने, अपनी पोषे पर की भाने

दोहा—अपने मतमें दोष हो तापर दृष्टि न देय।
वर्ण छिपावे शक्ति भर, ताको पुष्ट करेय ॥
तले अन्धेरा दीपक के रख, सर्व धर्म बरबाद करें ॥ निज० ५॥

जो हट छोड़ विचार करो तो प्रगट दृष्टि यह आता है।
सर्व मतों में कथन सभी कुछ विरुद्ध पाया जाता है॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किसी में बहुत असत्य, किसी में थोड़ा असत दिखाता है।
सत्य सर्व ही किसी एक में देखा अरु नहिं जाता है॥

चौपाई--इससे जो जो सत्य कथन है, सर्व मतों में सार मथन है
सर्व गृहण के योग्य रतन है, ताका गृहण उचित यतन है॥

दोहा--असत सर्व ही त्यागिये ढूँढ ढूँढ पहिचान।
मतवालापन त्याग हो, मतिवारा सुप्रधान।
बहुविद्या पढ़ बैल भारती हो शठ, वृथा विवाद करें।
निजहित ॥ ६ ॥

कैसे मटीले गेहुंन के बहु भांति प्रथक लग रहे हैं ढेर।
किसी में थोड़ी किसी बहुत, मिलीमृतिका का ना फेर।
तहाँ कोई निज ढेरी को वस मोह शुद्ध भाषे अवटेर॥
अन्य सर्वों को मटीला कहत, तहांना ल्यावे देर।

चौपाई--ताहि कुधी वह पक्षपात कर, शुद्ध मान पीसे अपने घर।
करै रसोई बहुत हर्षधर, मृतिका भखमाने भोजन वर॥

दोहा--बुद्धिमान तिहिं शुद्धकर, करैं शुद्ध आहार।
जिन पर पक्ष नहीं करें, गहे वस्तु जो सार॥
पर औगुण खल बहुत लखे, जिन औगुण देख न याद करें
निजहित ॥ ७ ॥

लघु दीर्घ सब रासों की, मृतिका को, सुधी मृतिका जाने।
निकाल ताको शेष गेहुन को शुद्ध गेहूं माने॥
निजपर पक्ष कदापि करे ना, चित्त परमारथ में साने।
सत्य कथन को सुधी निरपक्ष शुद्ध कर पहिचाने॥

चौपाई--मिथ्या पक्ष सुधी न करते, निजपर के दूषण को हरते।
जो मत पक्ष हृदय में धरते, नाथूराम अधर्मी नर ते॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—बहु विद्या पढ़कर कुधी कर मत पक्ष विवाद।
समय गमावे वृथा ही लहत न नर भव स्वाद ॥
हा कलिकाल कराल जीव निजहितमें अधिक प्रमाद करें।
निजहित नहिं विचार जिनकी मिथ्या हर्ष विषाद करें ॥८

॥ ११२ ॥ अवस्थाओं की लावनी ॥

बूढ़े बूढ़े भवसागर में, बिन पौरुष किम पावे पार।
जन्म जलधि के तरने को, तरुण अवस्था तरणीसार ॥टेक॥

बालकपन बावला स्वपर विज्ञान भेद कैसे जोवे।
क्रीड़ा कौतुक कांढा कलह करनकी जहां होवे ॥
क्रिया हीन खाने में लीन चित, कभी हंसे कबहु रोवे।
आत्म हितके सोच बिन, सदा नींद गहरी सोवे ॥
पाप करत कुछ भय न हृदय में हट कर डूबे कारीधार।
जनम जलधि के ॥ १ ॥

वृद्ध भये तृष्णा अति बाढ़े, कभी न मन आवे संतोष।
जो त्रिलोक की संपदा से, पूरित होवे निज कोष ॥
तन असक्त विकलेन्द्रिय उद्यम हीन खिजे क्षण-क्षण कर रोस।
नष्ट बुद्धि हो अशुभक्रिया से भृष्ट भया करता सब दोष ॥
ममता-वश ना उदास तनसे, तजे न मन से ग्रह का भार।
॥ जन्म जलधि के ॥२॥

तरुणपने पौरुष पूरण सब, क्रिया करन का चित उत्साह।
प्रबल इन्द्रियां ज्ञान की वृद्धि कर सके वृत्त्य निर्वाह ॥
सक्ति परीषह सहन योग्य, स्वाधीन ध्यान धर सके अथाह।
श्रुताभ्यास से भेद विज्ञान भये, हो पूरण मेरी चाह ॥
सर्व काय के सिद्ध करन की शक्ति व्यक्त वर्ते तिस वार।
॥जन्म जलधिके० ॥३॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तरुण अवस्था सब सामग्री सुलभ आप इकट्ठी होवे।
काल लब्धि है नाम इसी का, सुधी पुरुष इसको जोवे ॥
ऐसा अवसर पाय कुधी, दुर्व्यसन नींद में दिन खोवे।
तहां कलह में लीन रहे नित अन्त कुगति पड़के रोवे ॥
नाथूराम निज काज समारो मिले न अवसर बारम्बार।
॥जन्म जलधि के० ॥४॥

॥ ११३ ॥ पुरुषार्थ के सम्बन्ध मेंलावनी ॥

अरे मूढ़ पुरुषारथ तज के वृथा उर्म की आस करे।
वांछित फल को आप आपने करसे ही तो नाश करे ॥ टेक ॥

बाल वृद्ध सब ही जाने के बिन बोये ना जमता खेत।
और जमे बिन अन्न भूसा भी खेत ना किंचित देत ॥
उद्यम कर बोवे रु खावे सो जन फल निश्चय कर लेत।
ऐसा जानो सदा पुरुषारथ ही सब सुख का हेत ॥

चौ०—कर्म कोई देवता न जानो,निज करनीका फल पहिचानो।
यासे नित उद्यम को ठांनो, बिना किये फल कर्म न जानो ॥

दोहा—प्रथम क्रिया कर्ता करे, ताका फल सो कर्म।
नहीं कर्म कछु और है,समझ मूढ़ तज भर्म ॥
जो तूं आप हो निर उद्योगी पुरुषार्थ का ना खास करे।
वांछित फल को ॥ १॥

पूरव भव जो किया शुभाशुभ कर्म उदय सो आता है।
उसका भी फल निश्चय यहाँ सुख दुख में नर पाता है ॥
लेकिन वह भी किया आपही स्वयं न भय दिखलाता है।
इससे निश्चय यही भया कर्तव्य वृथा ना जाता है ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौ०—जैसे कोई बहुरिणियां आवे, अति श्रम कर अब द्रव्य कमावे
सो सब द्रव्य व्याज में जावे, यासे धनी न होत दिखावे।

दोहा—लेकिन द्रव्य कमावना, धन का कारण जान।
यह सुन पुरुषारथ करो, तज आलस बुद्धिवान ॥
बिना मूलतरु हीन होय तो फल को क्यों विश्वास करे।
वाँछित फल को० ॥२॥

सिद्ध न होता कार्य तब दोष दैव का कहते हैं।
अपनी भूल दृष्टि ना पड़ती वृथा खेद तन सहते हैं॥
पुरुषारथ को छोड़े जो प्रारब्ध भरोसे रहते हैं।

चौ०—सोते सिंह के मुख में जाके, नहीं प्रवेश करे मृग धाके।
अथवा वृक्ष बबूल लगाके, कौन आंम चाखत है वाके।

दोहा—इससे यह निश्चय भया करे सो भोगे आप।
पुन्य करे सो पुन्य फल पाप करे सो पाप॥
करनी करे नरक जाने की, स्वर्ग में कैसे वास करे।
वांछित फल को० ॥ ३ ॥

एक चक्के की गाड़ी सदा सर्वत्र न, भू पर गमन करे।
त्यों पुरुषारथ कर्म एकले से नाहीं कुछ कार्य सरे॥
जो नहिं अनुकूल वह तो तिरणे वाला सहज तरे।
वहे विपर्यय तो तरना कठिनता से लघु दृष्टि परे॥

चौपाई—तैसे कर्म जब होय सहाई, अल्प करे बहु पड़े दिखाई।
जो प्रतिकूल होय दुखदाई, कठिनता से लघु कार्य कराई।

दोहा—लेकिन करना मुख्य है, बिना किये क्या होय।
नाथूराम यासे सुधी शिथिल होउ मत सोय॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो तू आप हो निर उद्योगी, पुरुषारथ ना खास करे।
वांछित फल कोआप आपने कर से हीतो नाश करे ॥४॥

॥ ११४ ॥ सीताहरण की लावनी ॥

जनक सुता का हरण श्रवण सुन, को न नीर द्रग में लाया।
वरणन तिसका अब सुनलो जैसा जिन आगम में गाया ॥ टेक ॥

दंडक वन में धनुष बाण ले, सैर करन चाले लक्ष्मण।
सुगन्ध मारुत लगतेही तन भयो, प्रमुद लक्ष्मण का मन ॥
वंस भिडे पर सूर्य हास्य अति द्रष्टि पडा चर्चित चन्दन।
लेके हाथ में, लक्ष्मण ने काटा भिडा सघन ॥
चौपाई—खरदूषण वह शंबुकुमार, तामें साधन था अति सार।
सिद्ध भया था ताही वार, रक्षक जा असि यक्ष हजार ॥
दोहा—पूजा कर सुर खड्ग की, धरा भिड़े पर आन।
पुण्य योग लक्ष्मण लख पाया तब अभिराम ॥
वर्णन तिसका करूं जैसा जिन आगम में आया ॥ १ ॥

लेके खड्ग लक्ष्मण रघुवर तट गये, सुनो अब कथा नयी।
शम्भु पुत्र के पास ले भोजन सूर्पनखां गई ॥
कटा भिडे को देख पुत्र की पहिले निंदा करती भई।
फिर सिर देखा पुत्र का, तब तिस भूमि पछार लई ॥
चौपाई—करत विलाप हनत अरिधाई, द्रष्टि पड़े लक्ष्मण रघुराई
तिन्हें देख सुत सुधि विसराई; कामातुर विटदेहि बनाई।
दोहा—बोली रघु तट जायके, मैं अविवाहीत नाथ।
युगल भ्रात में एक मो, कर गह करो सनाथ ॥
व्यभिचारिणी लख कही राम, धिक पुरुष पर मन भाया।
तिसका वर्णन० ॥ २ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झिड़कारी लक्ष्मण ने जबही, तब लज्जित हो आई घर।
बोली पति सेयहां नारि युत, आये हैं वन में दो नर॥
शम्भु पुत्र हत खड्ग लिया तिन, फारे वस्त्र मेरे निज कर।
सुन खरदूषण तभी वजाये रण वाजे, अब करो समर॥

चौपाई–रावण के तट दूत पठाया, गर्जत घन सम नभ पथ आया॥
इत खरदूषण दल सजवाया, गर्जत घन सम नभ पथ आया।

दोहा—रण बाजे सुन राम ने, कही सुनो लघु भ्रात।
तुम सिय की रक्षा करो, हम लड़ने को जात॥
तब लक्ष्मण शर चाप उठा, रघु चरणों में मस्तक नाया।
तिसका वर्णन॥ ३॥

हे अग्रज तुम सिये रखाओ, मैं लड़ने को जाता रण में।
भीड़ पड़े तो करूंगा सिंहनाद मै ताही क्षण में॥
यों कह लक्ष्मण गये समर को दशकंधर आया वन में।
रूप सिया का देख तवैआसक्त भया कामी मन में॥

चौपाई–विद्या से दशमुख यह जानी, जनकसुता यह रघुवर रानी
सिंहनाद की कह मुख वानी, गये समर में लक्ष्मण ज्ञानी।

दोहा—तब छिपके दशमुख किया, सिंहनाद भयकार।
सुनत राम धनु वाण ले, भये समर को त्यार॥
सीता के ढिग छोड़ जटायु, गये समर को रघुराया।
तिसका वर्णन सुनलो॥ ४॥

देख अकेली सीता को, दशमुख ने तुरत विमान धरा।
विलपत सीता, देख जटायु उठा युद्धकों क्रोध भरा॥
चोंच रु पंजों से अंग रावण का, गिद्ध ने लाल करा।
दिया थपेड़ा तबै दशानन, उलट जटायु भूमि परा॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई—गिरा जटायु मृतक समान, गया दशानन बैठ विमान।
इधर राम पहुंचे रण स्थान, चलत तहां नाना विधि बाण।

दोहा—देख लक्ष्मण राम को, कही प्रभु किस काम।
सीता तज आये यहाँ, अभि जाओ उस ठाम॥
कही राम हे भ्रात यहां तुम सिंहनाद क्यों बजाया।
तिसका वर्णन सुनलो० ॥ ५ ॥

लक्ष्मण कही किया छल काहू, लौट जाओ सीता के पास।
मैं अरिगण को पलक में, तुम प्रसाद से करहूं नाश॥
गये राम तो लखी न सीता, तब अति ही मन भये उदास।
ढूंढत वन में जटायु दृष्टि पड़ा, तहां चलते श्वास॥
चौपाई—णमोकार रघुवर तिह दीना, चौथे स्वर्ग देव पद लीना।
अब लक्ष्मण अरिदल क्षय कीना, सिंह करै ज्यों मृग गण क्षीणा॥

दोहा—चन्द्रोदय नृप का तनुज, नाम विराधित तास।
लड़त भयो रिपु सैन से, आकर लक्ष्मण पास॥
तब लक्ष्मण ने खरदूषण को मार क्षिणक में गिराया।
तिसका वर्णन सुनलो० ॥ ६ ॥

अरिगण हन लक्ष्मण जय पाकर, रामचन्द्र के तट आये।
लोटत भू पर सिया बिन, रामचन्द्र विह्वल पाये॥
तब लक्ष्मण ने विनय सहित, धीरज बंधायके समझाये।
खोज सिया की करेंगे, कार्य चले ना घबराये॥

चौपाई—भूप विराधित भी तहां आया, राम लखन के पद सिरनाया
लक्ष्मण कही सुनो रघुराया, या नृप ने अति हेतु जनाया।
दोहा—भयो सहाई रण विषै नाशन को अरि पक्ष।
या प्रशाद हम जय लही, कहे वचन यों दक्ष॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भये परस्पर मित्र विराधित ने रघुवर को समझाया।
तिसका वर्णन सुनलो० ॥ ७ ॥
चलिये रिपु पाताल लंक में वहां नहीं रिपु गण का डर।
यहाँ सतें हैं शत्रु बहु, रावण आदिक महा जबर ॥
खरदूषण का साला रावण, हता सो वैर लहैंगे आकर।
चौपाई–तब यह बात सभी मन आई, लक्ष्मण सहित गये रघुराई।
यदपि भोग भोगो युग भाई, तदपि सिया सुधि ना विसराई।
दोहा—युग सम वीते दिवस इक, अति शोकित रघुवीर।
तहाँ विराधित लक्ष्मण अधिक वंधावे धीर ॥
नाथूराम जिनभक्त जानकी रूप राम में दृग छाया।
जिसका वर्णन सुनलो० ॥ ८ ॥

॥ ११५ ॥ राक्षस वंशीन की उत्पत्ति ॥

अजितनाथ के समय मेघवाहन राक्षस लंका पाई।
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनन्ददाई ॥ टेक ॥

विजयारध दक्षिण श्रेणी में, चक्रकालपुर नगर वसे।
नृप पूर्ण घन मेघ वाहन, ताके शुभ पुत्र लसे ॥
तिलक नगर का नृपति, सुलोचन, सहस्र नयन सुत ता त नसे।
कन्या उत्पल मती दोनों जन्मे सुन्दर उनसे ॥
चौ०–उत्पलमतीपूर्ण घन जाय निज सुत को, जाची मन लाय।
वचन निमित्ती के सुन राय, दई सगर को सो हर्षाय।
दोहा—तब पूण घन सेन ले, हना सुलोचन राय।
सहस्र नयन ले बहिन को, छिपा विपन में धाय ॥
पूर्णघन ने कन्या के खातिर, नगरी सब ढुंढवाई।
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों० ॥१॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सगर चक्रवर्ति को इक दिन माया मयि हयने हरा सही।
धरा विपन में वहीं लख उत्पलमती भ्रात से कही॥
चक्री के तट सहस्र नयन ने जाय बहिन परनाय दई।
अति आदर से युगल श्रेणी की पाई आप मही॥

चौपाई—सहस्र नयन चक्रीवल पाके, पूरणघन मारा रण धाके।
भगा मेघ वाहन घबराके, समोशरण पहुंचा जाके।

दोहा—अजितनाथ को वंदके, बैठा समता ठान।
सहस्र नयन के भट तहाँ, देख गये निज थान॥
तिनके मुख सुन सहस्र नयन भी गया जहाँ जित जिनराई।
तिसका वर्णन सुनलो ॥२॥

समोशरण में जाय भवान्तर पूंछ सभी निर वैर ठये।
यह सुन राक्षस इन्द्र प्रमुदित मन भीम सुभीम भये॥
कहा मेघ वाहन से धन्य तू अब तेरे सब दुख दूर गये।
श्री जिनवर के चरण तल जो तेरे वसु अंग नये॥

चौपाई—हम प्रसन्न तोपर खग राय, सुनो वचन मेरे मनलाय।
राक्षसद्वीप वसो तुम जाय, वह भू तुमको अति सुखदाय॥

दोहा—लवणोदधि के मध्य है, राक्षसद्वीप प्रधान।
लम्बा चौड़ा सातसौ योजन तास प्रमाण॥
सब द्वीपों में द्वीप शिरोमणि, जासु कीर्ति जग में छाई।
तिसका वर्णन सुनो० ॥ ३ ॥

ताके मध्य त्रिकूटाचल, योजन पचास ताका विस्तार।
ऊँचा योजन कहा नव तास तले नगरी सुख कार॥
लंका योजन तास तहां, जिन भवन बने चौरासी सार।
सपरिवार से निवसो तहाँ, तुम अरिगण का भय टार॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौपाई—अरु पाताल लंक शुभथान, ठौर शरण का है सुप्रधान।
छह योजन औंडा परधान, है सुन्दर स्थान महान।
दोहा—इक शत साढ़े तीस इक, डेढ़ कला विस्तार।
यह कह निज विद्या दई, अरु रत्नों का हार॥
वसे मेघ वाहन तहाँ जाके, कुटुम्ब सहित अति हर्षाई।
तिसका वर्णन॥ ४॥
ता राक्षस कुल में अखंड नृप भये, सो निज करनी अनुसार।
कोई शिवपुर को गये, किनही सुर के सुख लिये अपार॥
कोई पाप कर गये अधोगति. भ्रमत भये चहुँगति दुखकार।
मुनिसुव्रत के समय में, विद्युत केश भये नृपसार॥
चौपाई—तिनके पुत्र सुकेश सुजान, इन्द्राणी तिसके त्रिय जान।
तीन पुत्र ता:के गुणवान, भये सुवीर महा बलवान।
दोहा—माली और सुमालि, अरु माल्यवान तिन नाम।
सुमाली के रतन श्रवा पुत्र भया गुण धाम॥
भई केकसी रानी ताके, जासु कीर्ति जग में गाई।
तिसका वर्णन० ॥ ५॥
रत्नश्रवा तिय केकसी के सुत तीन महा बलवान भये।
पहिला रावण, दुतिय सुत कुम्भकरण, गुण धाम ठये॥
तृतीय विभीषण कुल के भूषण, जिनने शुभगुण सर्व लये।
तीनों योद्धा जगमाहिं अनूपम तिनको भूप अनंक नये॥
चौपाई—सूर्पनखा तिन बहिन प्रधान, भई अनूपम रूप महान।
खरदूषण परनी बुधिमान, बसे लंक पाताल सुजान।
दोहा—राक्षस द्वीप बिषें वशे, विद्याधर गुण धाम।
यह वर्णन संक्षेप से, कहा सु नाथूराम॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पल भक्षक राक्षस ये नाहीं, नर पवित्र ये जानो भाई।
तिसका वर्णन० ॥ ६ ॥

॥ ११६ ॥ वानर वंशीन की उत्पत्ति की लावनी ॥

वानर वंशीन की जैसी उत्पत्ति भई सो सुनो श्रवण।
जिन शासन का लहो आधार, न कल्पित कहो वचन ॥टेक

विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी मेघपुर, तहां खगपती शुभ नाम।
अतीन्द्र राजा का पुत्र श्री अरु कंठ मनोहर कन्या धाम ॥
तहीं रत्नपुर नृप पुष्पोत्तर पद्मोतर ता सुत अभिराम ॥
कन्या ताके एक भई पद्मा भामनु सुरपति की भाम।

चौपाई—मनोहरा पुष्पोत्तर राय, निज सुत को जाची उमगाय।
श्रीकंठ कन्या के भाय, दई न ताको मने कराय।

दोहा—धवल कीर्ति लंकाधनी राक्षस वंशी भूप।
व्याही ताहि मनोहरा, लखिके अधिक अनूप ॥
पुष्पोत्तर खग श्रवण सुनत, यह बहुत उदासी मानी मन।
जिन शासन को लहो आधार न कल्पित कहो वचन ॥१॥

एक दिना श्रीकंठ वंदना सुमेरु की कर आते घर।
पद्माभा का राग सुन मोहित हो सो लीनी हर ॥
सुन कुटुम्ब जन तभी पुकारे पुष्पोत्तर को दई खबर।
क्रोधित होके तभी खग चढ़ा सेन ले ता ऊपर ॥
चौपाई—श्रीकंठ लंका को धाया, धवल कीर्ति लख अति हर्षाया।
सैन लिये तोलों खग आया, धवल कीर्ति सुन दूत पठाया।

दोहा—पुष्पोत्तर को तास ने समझाया बहु भाय।
अरु पद्माभा की सखी गई कही तहाँ जाय ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तात दोष ना श्रीकंठ का वरा मैं ही याको आप।
जिन शासन का लहो आधार ॥२॥
लौट गया खग कीर्ति धवल तब श्रीकंठ को प्रीत दिखाय।
निवास करने बानर द्वीप तिन्हें दीना शुभ राय ॥
श्रीकंठ तहां गये बसाया नगर किहकपुर अति सुखदाय।
बानर देखे तहाँ बहु केलि करत नाना अधिकाय ॥
चौ०—तिनने कपि पाले रुचि ठान, तिनसे क्रीड़ा करत महान्।
सो चित्र तिनके गृह स्थान, रंग रंग के लख सुदखान ॥
दोहा—ता पीछे बहु नृप भये, तिन भी कपि के चित्र।
मंगलीक कारज विषें माडे मान पवित्र ॥
वाँसुपूज्य के समय अमर प्रभु भये भूप सो सुनो कथन।
जिन शासन का० ॥३॥
तिन की रानी डरी भयंकर देख चित्र कपि के तब राय।
ध्वजा मुकुट में तबहिं कराये चित्र गृह दिये मिटाय ॥
तब से ये कपि केतु कहाये, कपि वंशी उत्पत्ति यों आय।
बानर नाही नृपति नर विद्याधर हैं जानो भाय ॥
चौ०—ता कुल में बहु नृप गुणधाम, भये कहाँ तक लीजे नाम।
फेर महोदधि नृप अभिराम, भये अनूपम ताही ठाम ॥
दोहा—तिनके सुत प्रति चन्द्र के दोय पुत्र अति धीर।
भये प्रथम किहकंध अरु छोटा अंधक वीर ॥
तिन्हें राज प्रति चन्द्र देय व्रत लेय गये तप करने वन।
जिन शासन का लहो० ॥४॥
एक दिवस विजयार्ध पर आदित्यपुर के विद्याधर ने।
नृपति बुलाये सबही स्वयंवर मंडप में कन्या वरने ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नृप किहकंद श्री माला ने तहाँ प्रेम धा के परने।
रथनूपुर का ईश लख विजयसिंह लागा जरने॥

चौ०—भया परस्पर युद्ध महान्, अंधक ने कर गही धनुवाण।
विजयसिंह मारा शर तान, भगी सैन ताकी तज थान॥

दोहा—असनवेग ताका पिता सुनत चढ़ा ले सैन।
तब वानर वंशी भये सन्मुख तहाँ रहे न॥
असनवेग ने घेर किहकपुर कपिवंशिन से कीना रन।
जिनशासन का लहो० ॥५॥

असनवेग का सुत विद्युतवाहन किहकंद लड़े ले वाण।
असनवेग ने तहां मारा अंधक दारुण रण थान॥
विद्युतवाहन ने किहकंद किया घायल मारी सिल तान।
मूर्छा खाकर गिरा भूमि पर मगर ना निकले प्राण॥

चौ०—तब लंकेश सुकेश उठाय, रखा किहकपुर में सो आय।
फिर पाताल लंक में जाय, छिपे सर्व ही प्राण बचाय॥

दोहा—असनवेग तब सैन ले लौट गया निज थान।
फिर उदास हो भोग से, धारा तप बुधिवान॥
सहस्रार पुत्र को राज तिन दिया.किया निज नास विपन।
जिनशासन का लहो०॥६॥

सहस्रवार ने लंका में निरघात सुभट राखा ताने।
सूर्यरज रक्षरज भये किहकंद के दो सुत गुण स्याने॥
नगर बसा के बसे किहकंद पुर के तब दरम्याने।

चौ०—सूर्यरज के दो सुत भये, नाम बालि सुग्रीव सुठये।
रक्षरज के भी दो सुत भये, नल अरु नील नाम तिन दये॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दोहा—जिनसे वानर द्वीप में यासे कपि कुल नाम ।
ये बन पशु वानर नहीं विद्याधर गुणधाम ॥
विद्या के बल चढ़ विमान में करें सर्वठाँ गगन गमन ।
जिनशासन का लहो० ॥७॥
लंका पति राक्षस सुकेस के तीन पुत्र उपजे गुणवान ।
माली सुमाली और लघु माल्यवान हैं रूप निधान ॥
माली ने निर्घात सुभट को मार लिया लंका निज थान ।
फिर माली को इन्द्र विद्याधर ने मारा रन म्यान ॥
चौ०—सुमाली के सुत रत्नश्रवा के भये तीन सुत अति बल वाके ।
रावण आदि तीनों ने जाके, बांधा इन्द्र समर में धाके ॥
दोहा—रथनूपुर पति इन्द्र यह विद्याधर नरनाथ ।
नहीं इन्द्र सुरलोक का हारा रावण साथ ॥
नाथूराम वानर वंशिन की कही कथा यह मनभावन ।
जिनशासन का लहो० ॥८॥

॥ ११७ ॥ लावनी ॥

माता सरस्वति दीजिये विद्या का जन को दान जी ।
अज्ञान तिमिर विनाश हृदय प्रकाश अनुभव भान जी ॥
मैं शरण आया सुयश गाया धरूं तेरा ध्यान जी ।
जिन भक्त नाथूराम को जन जान दे निज ज्ञान जी ॥
दौड़—शारदा जपो नाम तेरा मनोरथ कर पूर्ण मेरा ।
भ्रम्यो बहु चौरासी फेरा ज्ञान बिन कहीं न सुख हेरा ॥
मात अब कृपा दृष्टि कीजे नाथूराम को सुबोध दीजेजा ।
शाखी—संसार सकल असार है, नहिं इससे प्रीति लगाइये ॥
झूठा सकल व्यवहार हैं, नहीं इष्ट जान ठगाइये ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रिय विषय विष तुल्य हैं,नहीं इनसे चित्त पगाइये ।
जिन भक्त नाथूराम परमात्मा के नित गुण गाइये ।।

दौड़—सदा भगवंत नाम जपना, यही जानो कार्य अपना ।
और भ्रम जाल सर्व स्वप्ना,दूर से तिन्हें देख कपंना ।।
नाथूराम नरभव फल लीजे,भजन निशिदिन प्रभुका कीजेजी ।

शाखी—प्रथम प्रभु का नाम ले प्रारंभ कीजे काम जी ।
कविता करो पिंगल पढ़ो व्याकरण अरु बहु नाम जी ।।
ये पढ़ें कविता शुद्ध हो अरु टलें विघ्न तमाम जी ।
ये शीख गुरु की मानिये जिन भक्त नाथूराम जी ।।

दौड़ —बिना पिंगलके रचो मत छंद, यही जानो शिक्षा सुखकंद ।
गणागण जाने हो आनन्द, सर्व मिट जाय विघ्न के फंद ।।
नाथूराम कहे गणागण भेद जिन्हें साखो कवि कर उम्मेद ।।

।। ११८ ।। आदिनाथ की स्तुति ।।

श्री मरुदेवी के लाल नाभि के नन्दन ।
काटो आठों विधि जाल नाभि के नन्दन ।।टेक।।
सुर अर्चें तुम्हें त्रिकाल नाभि के नन्दन ।
सौ इन्द्र नमावें भाल नाभि के नन्दन ।।
तुम सुनियत दीनदयाल नाभि के नन्दन ।
स्वारथ विन करत निहाल नाभि के नन्दन ।।
कीजे मेरा प्रतिपाल नाभि के नन्दन ।।काटो०।।१।।

लखि तुम तनु दीप्ति विशाल नाभि के नन्दन ।
हों कोटि काम पामाल नाभि के नन्दन ।।
त्रिभुवन का रूप कमाल नाभि के नन्दन ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मानो साँचे दिया ढाल नाभि के नन्दन ॥
दर्शत नाशे अघ हाल नाभि के नन्दन॥काटो॥२॥

तनु वज्र मई मय खाल नाभि के नंदन।
ताये सोने सम लाल नाभि के नंदन॥
मल रहित देह सुकमाल नाभि के नंदन।
बाढ़े ना नख अरु बाल नाभि के नंदन॥
यह शुभ अतिशय का ख्याल नाभि के नंदन॥काटो०३

कंठ धरे प्रातः काल नाभि के नंदन।
लई सुर नर तत्काल नाभि के नंदन॥
नाथूराम का सवाल नाभि के नंदन॥ काटो० ४॥

॥ ११६ ॥ मूर्ख जैनी की लावनी ॥

जिनमत पाय विपर्यय वर्ते क्या जिनमत पाया।
जिन्हें खल कुगुरुन बिहकाया जी॥ टेक

नर पर्याय पाय श्रावक कुल, आर्य क्षेत्र प्रधान मिला।
दुर्लभ जिन वृष शुभ आन जी।

चले चाल विपरीत कुगुरू शिक्षा पर कर श्रद्धान।
सुनो वर्णन तिसका धर ध्यान जी।

दोहा—वीतराग छवि शुद्ध को, चंदनादि लिपटाय।
परिग्रह धारी गुरुन की, करत सेव अधिकाय॥
कहैं गुरू भाग्यन से पाया, जिन्हें खल कुगुरुन बिहकाया॥ १॥

जो कुलका आचार उसा को मानत धर्म अज्ञानी।
नाम को करें पुन्य अरु दान जी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लंघन को उपवास मानते, विना तत्व श्रद्धान,
बृथा तन कष्ट सहें अज्ञानी जी ॥
दोहा—चर्वी की ले बत्तियाँ जिनगृह में अधिकाय,
जानत अति उत्साह से, पोषत विषय अघाय ॥
हृदय में अहंकार छाया जिन्हें खल ॥२॥
हरित फूल फल कर्पूरादिक, जो है वस्तु सचित्त,
करें जिन पूजा जिनसे नित्य जी ।
जैनी वन शठ पाप पंथ में अधिक लगाते चित्त,
चाहते तिससे आतम हित्त जी ।
दोहा—फूल माल जिन नाम की, करत जो नीलाम,
नामवरी को उमंग के, बढ़ बढ़ बोलत दाम ॥
अंधेरा बिन विवेक छाया ॥ जिन्हें खल० ३ ॥
वीच सभा में कोई आय पगड़ी लेय उतार,
फेर तिसको उच्चार जी ।
तहां कोई बहु दाम, बड़ा कर, लेय आप सिर धार,
विना आज्ञा तुमरी उस वार जी ॥
दोहा—तिसपर कैसे करेंगे आप तहां परिणाम ।
द्वेष रूप या हर्षमय, सोच कहो इस ठाम ॥
न्याय का अवसर यह आया । जिन्हें खल ॥ ४ ॥
ना देवाल कहा प्रभु का जिसको बेचत माल ।
नहीं कुछ है जिनेन्द्र कङ्गाल जी ।
धर्म करो भंडार में, सो धन देउ हाथ से घाल ।
पकड़ता कौन हाथ तिस काल जी ॥
दोहा—तीन लोक के नाथ की करत प्रतिष्ठा हीन ।
कौन ग्रन्थ आधार से हमे बताओ चीन ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुनन को मो मन ललचाया, जिन्हें खल कुगुरुन विहकाया ॥५॥

अभी तो वेचत माल फेर बेच हैं सिहासन छत्र।
बुला के बहु जैनी लिख पत्र जी ॥
अभिमानी जो धनी नाम को, खरीद कर हैं तत्र।
बहुत धन होवेगा एकत्र जी ॥

दोहा—बड़ा फलाष्टक सभा में, तिन्हें सुनय है टेर।
तत्र चण में बहु द्रव्य का, हो जायेगा ढेर ॥
भला रुजगार नजर आया। जिन्हें खल ॥ ६ ।

निर्लोभी चत्री कुल में, भये तीर्थंकर अवतार ॥
तजा तिन सर्व परिग्रह भार जी।
राज लक्ष्मी तृण सम तज दी वीतरागता धार ॥
तजा सब सांसारिक व्यवहार जी।

दोहा—सो अब लोभी वणिक के, घर आया जिन धर्म।
या से धन तृष्णा वढ़ा, क्यों न करे लघु कर्म ॥
कुसंगति का वह फल पाया । जिन्हें खल ॥ ७ ॥

हा कलिकाल कराल जिसमें, नाना विध विपरीत।
करी रचना भेषन तज नीति जी ॥
ताही को बहुतक पण्डित जन पुष्ट करें कर प्रीति जी।
न देखें जिन शासन की रीति जी ॥

दोहा—जिन वच तिन वच की कुधी करें नहीं पहिचान।
हठ ग्राही हो पच्च को, तानत कर अभिमान ॥
न छोड़त कुल क्रम की माया। जिन्हें खल ॥ ८ ॥

यह विचार कुछ नहीं हृदयमें, क्या जिन धर्म स्वरूप।
गिरत क्यों हठ करके कूप जी ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रची उपल की नांव कुगुरु ने डोवन को चिद्रूप।
यही अवतार कलंकी भूप जी ॥
दोहा—वीतराग के धर्म को, मुख्य यही पहिचान।
लोभ अनृत वच अरु नहीं, जहाँ हृदय अभिमान ॥
ताहि ना लखें तिमिर छाया। जिन्हें खल ॥ ६ ॥

केवलज्ञान छवी जिनकी, तिन पर पंचामृत धार देत।
कहें उत्सव जन्म अवार जी ॥
नाम धरो को जिन गृहकर जिन प्रतिमा यहां विस्तार।
धरें तहां क्षेत्रपाल ला द्वार जी ॥
दोहा—तेल सिंदूर चढ़ाय के करें अंग सब लाल।
दरवाजे में घुसत ही तिनको नावत भाल ॥
पीछे जिन दर्शन दर्शाया। जिन्हें खल ॥ १० ॥
राग शृंगार कथा करकै अति अंग अंग हर्षाय।
तत्व कथनी सुन अति अलसाय जी ॥
कोई कलह बतावें कोई सोवे झोके खाय।
कोई हो उदास घर उठ जाय जी ॥
दोहा—अन्य मती सदृश क्रिया करते तहां अनेक।
तर्पणादि कहा तक कहुँ हृदय न रच विवेक ॥
पंथ भेषन का मन भाया। जिन्हें खल ॥ ११ ॥
धन बल आयु अरोग्य भोग इनके मिलने की आस।
तथा चाहें वैरी का नाश जी ॥
इन फल माहिं लुभाने अति ही नाहक सहते त्रास।
करें वेला तेला उपवास जी ॥
दोहा—देव धर्म गुरु परखिये नाथूराम जिन भक्त।
तज विकल्प निज रूप में हूजे अब आशक्त ॥
समय पंचम जग में छाया। जिन्हें खल ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १२० ॥ लावनी ॥

युगल कर जोड़े मंदोदरि नारि विनवे वारंवार ॥ टेक ॥
सुनो यह विनती अवला की नाथ साधर्मी रघुनाथ ।
मिलो तुम उनसे सीता ले साथ अतिशय आवे हाथ ॥

दोहा—इन्द्रजीत अरु मेघनाद सुत, कुम्भकरण तुम भ्रात ।
वंद किये राम ने, छुड़ावो जिनको जाय प्रभात ॥
वचन दासी के चित लीजे धार विनवे वारंवार ।
युगल कर जोड़े वारंवार ॥१॥
गर्वयुत बोले लंकेश्वर वैन बीत जानदे रैन ।
प्रात हनिअरि की सब मारो सैन ॥ तबही मो चित चेन ।

दोहा—प्रवल शत्रु लक्ष्मण मैं मारा रहा तुच्छ अब राम ।
ताकों हनि सुत वंधु छुड़ाऊँ, तो दशमुख मुभनाम ॥
झूंठ मत जाने मो वच लगार । विनवे वारंवार ॥२॥
कहैं त्रिय तुमको प्रिय नाहीं खवर पक्ष राम की जबर ।
शक्ति लक्ष्मण की, प्रिय गई निकर सुनी न तुमने जिकर ॥

दोहा—तुम प्रतिहरी वे हरि बल उपजना इसमें संदेह ।
यासे वैर करो मत उनसे विनती मानो येह ॥
धरो मत शिर पर अपयश का भार । विनवे वारंवार ।३।
भ्रात सुत वांधे अरु शक्ति कड़ी, क्या विभूति उन वड़ी ।
शस्त्र मेरों पर क्या जंग चढ़ा जो इतनां त्रिय रड़ी ॥

दोहा—नाथूराम जिन भक्त मान गज पर रावण आरूढ़ ।
हित की बात सुनं ना कानों किया मृत्यु ने मूढ़ ॥
जहरसे लागें अमृत वचसार । विनवै वारंवार ॥४॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ १२१ ॥ तोते की लावनी ॥

कर प्रभुका भजन तू तोता, क्यों जन्म अकारथ खोता ।टेक।
यह क्षण भंगुर है काया, यासे तू नेह लगाया ।
तन क्षण में होगा पराया, जिस वक्त अवारा आया ॥
छड़—ये प्राण जात न लगे वार, कढ़ जावें इक पल में ।
हवा लगे ढलजाय, बुल बुला जैसे रे जलमें क्यों जी ॥
काल महा बलवान उस से ना बचे कोई कल में ।
तू हो तोते हुशयार, नहीं वह मारेगा छल में जी ॥
दोहा—कौन शरण संसार में जहाँ बचे तू जाय ।
सुर नर पति, तीर्थेश से लिये काल ने खाय ॥
अब भी तू मूर्ख तोता, क्यों जन्म अकारथ खोता ॥१॥
फिर ऐसा समय न पैहै अवसर चूके पछतेहै ।
इस वक्त जो गाफिल रैहै तो बहुतेरे दुख सेहै ॥
छड़—ये सुर नर नरक तिर्यंच, चारगति लख चौरासी योनि ।
भ्रमा अनंते काल रहा धरने से बाकी कौन क्यों जी ॥
नाम अनेक धराय मूढ़ बहु वसा कष्ट के भोन ।
अब भी चेत नहीं तुझको जो धार रहा है मौन जी ॥
दोहा—नर भव उत्तम क्षेत्र अरु मिला उच्च कुल आय ।
जो अब कार्य ना करे तो पीछे पछताय ॥
फिर पछताये क्या होता, क्यों जन्म अकारथ खोता ।२।
तू ज्ञान दृष्टि बिन अन्धे, करता अति खोटे धंधे ।
जिस गुण में जीव जग वंधे, सोई डाल तू निज कंधे ॥
छड़—ये तात मात सुत भ्रात मित्र त्रिय आदि कुटुम्बी लोग ।
हैं स्वारथके सगे, सर्व इनका अनिष्ट संयोग ॥क्यों जी ।
मेरे साथ न जाय, कोई भोगें निज निज सुख भोग ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वार्थ के खातिर पछतावें किंचित कर कर सोग जी ॥
दोहा—सहैं नर्क दुख जीव निज, कोइ न करे सहाय।
यासे अब जिय चेत तू, कर निज कार्य उपाय॥
स्नेह जगत का थोता। क्यों जन्म अकारथ खोता ॥ ३ ॥

तूने देव कुदेव न जाना, कुगुरुन ही को गुरुमाना।
तिनही के फंद ठगाना, शिवपुर मार्ग विसराना ॥
छड़—ये बहु विकथा वकवाद सुनी, नित काम क्रोध की खान।
वीतराग मार्ग सु दयामय धर्म सुना नहिं कान ॥ क्यों जी ॥
जप तप संयम शील न धारा, दाता पद निर्वाण।
कुव्यशन निशदिन सेय निरंतर रहा हृदय सुख मान जी ॥
दोहा—नाथूराम उचित यही अब विचार दृग खोल।
हितकारी अनुपम समय, कड़ा जात अनमोल ॥
देखो जग सारा रोता। क्यों जन्म अकारथ खोता ॥४॥

॥ १२२ ॥ गणेश जी की लावनी ॥

गणधर गणेश गणीन्द्र गणपति आदि नाम बहु सुखदाई।
तिनका वर्णन अब आगम के अनुसार सुनो हे भाई ॥ टेक ॥
महाईश श्री महेश जिनवर महादेव भव के देव।
तिनकी वानी गिरा सं, द्वादश अंग खिरे स्वयमेव ॥

तिन अंगों को मथे करें अभ्यास, होय तब गणधर देव।
भिरा अंग के मथन से यों गणेशं कहें जिन देव ॥
शैर—यति रिषी मुनि अनगार समूह को गण जान जी।
तिस गण के ईश गणेश ऐसी संधी गुण पहिचान जी ॥
सो शारदा वाणी जिनेश्वर की धरें उर म्यान जी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यों शारदा के पति कहें गणराज बुद्धि निधान जी ॥
सो देवों कर पूज्य गणाधिप विमल कीर्ति जगमें छाई ।
तिन का वर्णन ॥ १ ॥

घटे प्रतिष्ठा कटे नाक अरु बढे प्रतिष्ठा बढ़े सही ।
इस उपमा को दिखाने नाक बड़ी गज सूढ़ कही ।
सब मुनिगण में बढ़े प्रतिष्ठा गणपति को जग बीच लही ॥
बड़ी नासिका बताई है गणेश की सो जानो सही ।
इस हेतु से गज मुख कहा, गणराज का यों जिन भनी ॥
चले मंद गति अधो दृष्टि, मूसा वाहन उपमा गाई ।
तिनका वर्णन ॥ २ ॥

सम्पूर्ण श्रुत सिन्धु भरा जिन पेट में उपमा देन वहे ।
तिस उपमा को सुधीजन, लम्बी गणराज कहे ॥
सबसे उत्तम पदस्थ जिनका, उत्कृष्टों में श्रेष्ठ लहे ।
इसी से एक संत एक दन्त सभा में राज रहे ॥
शैर—विनय तिनकी सब करें, इससे विनायक नाम है ।
शिव सकल परम महेश्वर शिष्य सुत गुण धाम है ॥
पति अष्ट रिद्ध अरु सिद्धि के शिव शब्द के काम है ।
मुनिगण को मोदक बहुत प्यारो, लगत आठों याम है ।
विजय लक्ष्मी की माला धारें, और चाहा सब विसराई ।
तिनका वर्णन० ॥३॥

ऐसे श्री गणराज गजानन गजधर गणपति कहे गणेश ।
मूसा वाहन विनायक लम्बोदर वा पुत्र महेश ॥
इत्यादिक बहु नाम गुणाकर, पार न जिनका लहे सुरेश ।
अन्य कल्पना करें, तिनको निरवक जानो महेश ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शैर—उमाके तन मैल से रचना कहैं अज्ञान सों।
गज शीश आरोपण करें ऐव युत नादान यों ॥
मान सवारी ऊंदरा अरु पेट ढोल समान सो।
समझे न अर्थ गूढ़ को मूढ़ों से मुखिया जान सो ॥
नाथूराम उपरोक्त कहे गुण प्रणमूं ऐसे गण।
तिनका वर्णन० ॥४॥

॥ १२३ ॥ लावनी उप शी ॥

मन वचन काय नित भजन करो जिनवर का।
यह सुफल करो पर्याय पाय भव नर का ॥टेक॥

निवसे अनादि से नित्य निगोद मंझारे,
स्थावर के तनु धारे पंच प्रकारे।
फिर विकलत्रय के भुगते दुःख अपारे,
फिर भया असैनी पंचेन्द्रिय बहु वारे।
भयो पंचेन्द्रिय सैनी जल थल अम्बर का,
यह सुफल करो० ॥१॥

इस क्रमसे सुर नर नारक बहु तेरे,
भव धर मिथ्या वश कीने पाप घनेरे।
जिय पहुँचा इतर निगोद किये बहु फेरे,
तहाँ एक श्वास में मरा अठारह वेरे।
चिर भ्रमा किनारा मिला ना भवसागर का।
यह सुफल करो० ॥२॥

यों लख चौरासी जिया योनि में भटका,
बहु बार उदर माता के औंधा लटका।
अब सुगुरु सीख सुन,करो गुणीजन खटका,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह है झूंठा स्नेह जिसमें तूं अटका।
नहिं कोई किसो का हितू, गैर अरु घरका,
यह सुफल करो० ॥३॥

इस नर तन के खातिर सुरपति से तरसे,
तिसको तुम पाकर, खोवत भोंदू उर से।
क्षण भंगुर सुख की प्रीति लागते घर से,
तज के पुरुषारथ बनते नारी नर से।
मत रत्न गमावो नाथूराम निज करका!
यह सुफल करो० ॥४॥

॥ १२४ ॥ आदिनाथ के पंचकल्याणक ॥

नाभिनन्दन तज सदन चले वन शिव रमणीको वरण।
आदि प्रभु को प्रगटे तारण तरण जी ॥टेक॥
प्रथम गर्भ मास द्विगुण त्रय भई रत्नों की वृष्टि,
पच दश मास अवधि की सृष्टि जी।
हूठ कोड चतु वार रत्न शुभ वर्षत,
आये वृष्टि. करें शंसय सुन मूढ़ निकृष्ट जी।

दोहा—इन्द्र हुकम से धनदने, रची अवधि जिम स्वर्ग।
नव द्वादश योजन तनी, तामध उत्तम दुर्ग॥
कूप वापी तडाग वहु वरण।
आदि प्रभु प्रगटे तारण तरण जी ॥ १ ॥

त्रिविध ज्ञान संयुक्त, जन्म लिया मरुदेवी के लाल।
मुकुट हरि का कंपा तत्काल जी॥
साडे बारह कोडि जाति के तूर बजे सब हाल।
सप्त डग चल नायो हरि भाल जी॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

॥ गजल ॥

घड़ी धन आज की सबको मुबारिक हो मुबारिक हो।
हुये जिनराज के दर्शन मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ टेक ॥

कहीं अर्चा कहीं चर्चा कहीं जिनराज गुण गायन।
महातम जैन शासन का मुबारिक हो मुबारिक हो ॥१॥

चमर छत्रादि सिंहासन, प्रभाकर श्रेष्ठ भामंडल ॥
अनूपम शांति मुद्रा ये, मुबारिक हो मुबारिक हो ॥२॥

सफल हो कामना कुंदन, यही अरदास है स्वामिन।
सभा सज्जन व जिन शासन मुबारिक हो मुबारिक हो ।३।

॥ लावनी ॥

सुनो प्रभु जी अर्ज हमारी, मेरा काज तुमसे अटका।
भव सागरमें रुला फिराहूँ, लाख चौरासी में भटका ॥टेक॥

गर्भ वेदना सही जो मैंने औंधे मुँह करके लटका।
गर्भ कूप से मुझे निकाला, फेर जमी पर धर पटका ॥
सुनो प्रभु ॥ १॥

वालापन अरु तरुण अवस्था, वृद्ध पने में है झटका।
तीनों पन मैंने योंही खोये, पाप लिये आया अटका ॥
सुनो प्रभु ॥ २ ॥

अष्ट कर्म ने खूब नचाया, ऊपर से मारा सटका।
जोकर्म किये सोही फलपाया, ख्याल गमायाहै नटका ॥
सुनो प्रभु ॥ ३ ॥

दीन दयाल दया निधि स्वामी, चरण शरण का है चसका।
हाथ जोड़ कर करूँ वीनती, यही मिटा मेरा खटका ॥
सुनो प्रभु ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुद्रक—
त्यागी फाइन आर्ट प्रेस,
कटरा खुशहालराय दिल्ली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi